RAS मुख्य परीक्षा 2024-25

NEW EDITION

विश्व का इतिहास

GS Paper I - Unit I

RAS मुख्य परीक्षा के नवीनतम पाठ्यक्रम पर आधारित

हिंदी माध्यम

गजराज सिंह (IRTS - 2010, RAS - 2007)

RAS Mains पाठ्यक्रम आधारित सभी पुस्तक, प्रश्न-उत्तर पुस्तिका एवं टेस्ट सीरीज़ के लिए "Rise Civil Services" App अथवा हेल्पलाइन नंबर पर संपर्क करें।

+91 9785606061 | Telegram @ RiseJaipur | Rise Civil Services | © 2025 RISE Education. All rights reserved.

RAS MAINS EXAM
विश्व का इतिहास

Topics	Page No.
अध्याय 1 - पुनर्जागरण (Renaissance) 1.1 शब्द की उत्पत्ति 1.2 कालसीमा: 1.3 पुनर्जागरण के मुख्य कारण 1.4 राजनीतिक और सामाजिक पृष्ठभूमि 1.5 प्रभावी संरक्षक केंद्र 1.6 मूल विचारधारात्मक संक्रमण: मध्यकाल से आधुनिकता की ओर बौद्धिक क्रांति 1.7 पुनर्जागरण की आधारभूमि के निर्माण में भूमिका निभाने वाले स्रोत 1.8 पुनर्जागरण की प्रमुख विशेषताएँ (Key Features of Renaissance) 1.9 क्षेत्रीय पुनर्जागरण रूप (Regional Forms of Renaissance) 1.10 प्रमुख ऐतिहासिक घटनाएँ व प्रभाव 1.11 पुनर्जागरण के क्षेत्र (Fields of Renaissance): 1.12 समाज, अर्थव्यवस्था और शासन पर प्रभाव (Impact on Society, Economy & Governance) 1.13 प्रमुख कथन 1.14 शब्दावली	1-13
अध्याय 2 - धार्मिक सुधार आंदोलन (Reformation) 2.1 अर्थ (Meaning) 2.2 परिचय एवं उत्पत्ति (Introduction & Origin) 2.3 प्रमुख कारण (Major Causes of Reformation) 2.4 Reformation का स्वरूप व विशेषताएँ (Nature & Features) 2.5 क्षेत्रीय रूप एवं प्रमुख सुधारक (Regional Forms & Leading Reformers) 2.6 Reformation की प्रमुख घटनाएँ (Major Events of the Reformation) 2.7 प्रमुख प्रभाव (Major Impacts of Reformation) 2.8 Reformation का योगदान (Contributions of the Reformation) 2.9 प्रति-धर्म सुधार आंदोलन (Counter-Reformation) 2.10 इंग्लिश चर्च का विकास (Evolution of the Church of England) 2.11 कथन (Quotes) 2.12 शब्दावली	13-20
अध्याय 3 - अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम (American Revolutionary War) 3.1 परिचय (Expanded Introduction): 3.2 प्रारंभ (Expanded Beginning): 3.3 प्रमुख कारण 3.4 आंदोलन में विचारकों का योगदान 3.5 प्रमुख घटनाएँ 3.6 स्वरूप	21-29

RISE An Institute for Civil Services

 © 2025 RISE Education. All rights reserved.

3.7 प्रमुख व्यक्तित्व 3.8 प्रभाव 3.9 सीमाएँ 3.10 योगदान 3.11 प्रमुख कथन (Notable Quotes) 3.12 शब्दावली	
अध्याय - 4 फ्रांसीसी राज्य क्रांति (1789–1799) 4.1 क्रांति का परिचय (Introduction) 4.2 क्रांति के प्रमुख कारण (Causes of the French Revolution) 4.3 फ्रांसीसी क्रांति के विभिन्न चरण (Phases of the French Revolution) 4.4 फ्रांसीसी क्रांति का स्वरूप (Nature of the French Revolution) 4.5 फ्रांसीसी क्रांति की प्रमुख विशेषताएँ (Key Features of the French Revolution) 4.6 फ्रांसीसी क्रांति के प्रभाव (Impact of the French Revolution) 4.7 फ्रांसीसी क्रांति का योगदान (Legacy & Contributions of the French Revolution) 4.8 महत्वपूर्ण कथन (Notable Quotes) 4.9 शब्दावली	30-44
अध्याय 5 - नेपोलियन बोनापार्ट (Napoleon Bonaparte) : 1799–1815 5.1 पृष्ठभूमि व उदय (Rise to Power of Napoleon Bonaparte) 5.2 प्रमुख प्रशासनिक व विधिक सुधार (Key Reforms of Napoleon Bonaparte) 5.3 सैन्य विजय व यूरोप पर प्रभुत्व (Military Expansion and European Dominance of Napoleon Bonaparte) 5.4 पतन के कारण व अंतिम युद्ध (Decline and Fall of Napoleon Bonaparte) 5.5 100 दिन व वाटरलू की हार (1815) – Napoleon's Final Attempt and Defeat 5.6 नेपोलियन की विरासत (Legacy of Napoleon Bonaparte) 5.7 ऐतिहासिक छवि – क्रांतिपुत्र या क्रांतिहंता? 5.8 महत्वपूर्ण कथन:	44-48
अध्याय 6 - औद्योगिक क्रांति (Industrial Revolution) 6.1 औद्योगिक क्रांति शब्द की उत्पत्ति व प्रयोग 6.2 औद्योगिक क्रांति का परिचय 6.3 औद्योगिक क्रांति की पृष्ठभूमि एवं कारण 6.4 औद्योगिक क्रांति ब्रिटेन में ही क्यों प्रारंभ हुई? 6.5 औद्योगिक क्रांति का स्वरूप / प्रकृति 6.6 औद्योगिक क्रांति की प्रमुख विशेषताएँ 6.7 औद्योगिक क्रांति के क्षेत्र 6.8 औद्योगिक क्रांति के प्रभाव 6.9 औद्योगिक क्रांति का प्रसार (ब्रिटेन से बाहर) 6.10 औद्योगिक क्रांति की विरासत 6.11 महत्वपूर्ण कथन 6.12 शब्दावली	49-58

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

अध्याय 7 – एशिया व अफ्रीका में साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद 7.1 प्रस्तावना 7.2 साम्राज्यवाद (Imperialism) बनाम उपनिवेशवाद (Colonialism) 7.3 साम्राज्यवाद (Imperialism) और उपनिवेशवाद (Colonialism) का प्रारंभ एवं प्रमुख घटनाएं 7.4 साम्राज्यवाद के प्रमुख प्रेरक कारक 7.5 एशिया में साम्राज्यवाद का विस्तार 7.6 अफ्रीका में साम्राज्यवाद का विस्तार 7.7 उपनिवेशवाद के विविध प्रभाव 7.8 प्रतिरोध, राष्ट्रवाद और स्वतंत्रता संघर्ष 7.9 कथन (Quotes) 7.10 शब्दावली	58–66
अध्याय 8 – विश्व युद्धों का प्रभाव 1.1 प्रथम विश्व युद्ध के परिणाम (1914–1918) 1.1.1 राजनीतिक परिणाम (Political Consequences) 1.1.2 आर्थिक परिणाम (Economic Consequences 1.1.3 सामाजिक परिणाम (Social Consequences) 1.1.4 भौगोलिक परिणाम (Geographical Consequences): 1.1.5 वैचारिक और वैदिक प्रभाव (Ideological & Intellectual Consequences) 1.1.6 सैन्य व तकनीकी परिणाम (Military and Technological Consequences) 1.2 द्वितीय विश्व युद्ध के परिणाम (1939–1945) 1.2.1 राजनीतिक परिणाम 1.2.2 द्वितीय विश्व युद्ध के भौगोलिक परिणाम 1.2.3 द्वितीय विश्व युद्ध के आर्थिक परिणाम 1.2.4 द्वितीय विश्व युद्ध के सामाजिक और मानवीय प्रभाव 1.2.5 द्वितीय विश्व युद्ध के सैन्य और तकनीकी परिणाम 1.2.6 द्वितीय विश्व युद्ध के वैचारिक और वैश्विक प्रभाव 1.2.7 कथन	66–76

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

This material is the intellectual property of Rise Education and is intended solely for personal use and educational purposes. No part of this content may be reproduced, distributed, or transmitted in any form or by any means, including photocopying, recording, or other electronic or mechanical methods, without the prior written permission of the copyright holder.

Unauthorized use, sharing, or reproduction of this material may result in legal action. For permissions or inquiries, please contact risejpr@gmail.com, +919785606061.

Ch 1 - पुनर्जागरण (Renaissance)

1.1 शब्द की उत्पत्ति
1.2 कालसीमा:
1.3 पुनर्जागरण के मुख्य कारण
1.4 राजनीतिक और सामाजिक पृष्ठभूमि
1.5 प्रभावी संरक्षक केंद्र
1.6 मूल विचारधारात्मक संक्रमण: मध्यकाल से आधुनिकता की ओर बौद्धिक क्रांति
1.7 पुनर्जागरण की आधारभूमि के निर्माण में भूमिका निभाने वाले स्रोत
1.8 पुनर्जागरण की प्रमुख विशेषताएँ (Key Features of Renaissance)
1.9 क्षेत्रीय पुनर्जागरण रूप (Regional Forms of Renaissance)
1.10 प्रमुख ऐतिहासिक घटनाएँ व प्रभाव
1.11 पुनर्जागरण के क्षेत्र (Fields of Renaissance):
1.12 समाज, अर्थव्यवस्था और शासन पर प्रभाव (Impact on Society, Economy & Governance)
1.13 प्रमुख कथन
1.14 शब्दावली

1.1 शब्द की उत्पत्ति

- *Renaissance* शब्द की उत्पत्ति **फ्रेंच भाषा** से हुई है, जिसका शाब्दिक अर्थ है – "**पुनर्जन्म**" (Re + Naissance = फिर से जन्म लेना)।
- यह शब्द **प्रथम बार 19वीं शताब्दी** में फ्रांसीसी इतिहासकार **जूल्स मिशेले (Jules Michelet)** द्वारा प्रयुक्त किया गया, जिन्होंने इसे 16वीं शताब्दी में फ्रांस में घटित सांस्कृतिक पुनरुत्थान को संदर्भित करने के लिए उपयोग किया।
- इसके पश्चात् ब्रिटिश इतिहासकार **जैकब बुर्खार्ट (Jacob Burckhardt)** ने अपनी प्रसिद्ध कृति *"The Civilization of the Renaissance in Italy"* (1860) में इस अवधारणा को व्यापक मान्यता प्रदान की।
- यह शब्द उस ऐतिहासिक काल को दर्शाता है जब यूरोप में **प्राचीन ग्रीक-रोमन सभ्यता, कला, साहित्य और वैज्ञानिक चेतना** का पुनरुद्धार हुआ।

1.2 कालसीमा:

- पुनर्जागरण सामान्यतः 1300 ई. (14वीं शताब्दी प्रारंभ) से लेकर 1600–1700 ई. (17वीं शताब्दी अंत) तक फैला एक बहुआयामी आंदोलन था। यह मध्यकाल और आधुनिक काल के बीच की संक्रमणीय अवधि है।

1.3 पुनर्जागरण के मुख्य कारण

1. क्रूसेड युद्धों का प्रभाव (11वीं–13वीं शताब्दी):

- ईसाई और मुस्लिम शासकों के बीच हुए इन धार्मिक युद्धों के माध्यम से यूरोपीय समाज को **अरबी, यूनानी और फारसी ज्ञान परंपराओं** का परिचय हुआ।
- गणित (जैसे दशमलव पद्धति), चिकित्सा (इब्न सिना), ज्योतिष, दर्शन और तर्कशास्त्र जैसी विषयवस्तुएँ यूरोप में पहुँचीं।
- यह संपर्क **विज्ञान और तर्क आधारित सोच** की पृष्ठभूमि तैयार करता है।

2. कुस्तुंतुनिया का पतन (1453):

- ऑटोमन तुर्कों द्वारा बाइज़ैंटाइन साम्राज्य की राजधानी *कुस्तुंतुनिया* पर विजय के बाद अनेक **यूनानी विद्वान इटली व पश्चिमी यूरोप की ओर पलायन** कर गए।
- वे अपने साथ **प्राचीन यूनानी-रोमन पांडुलिपियाँ, शास्त्र, कला व दर्शन की धरोहर** लेकर आए।
- इटली के विद्वान अब इन ग्रंथों का **लैटिन और स्थानीय भाषाओं** में अनुवाद करने लगे।

3. इटली की अनुकूल भौगोलिक स्थिति:

- इटली यूरोप, एशिया और उत्तरी अफ्रीका को जोड़ने वाले **प्राचीन व्यापार मार्गों** पर स्थित था।
- समुद्री व्यापार (विशेषतः वेनिस, जेनोआ, फ्लोरेंस) से आर्थिक समृद्धि हुई जिससे **कला, वास्तु और शिक्षा** में निवेश संभव हुआ।
- व्यापारियों के माध्यम से **अरब व प्राचीन ज्ञान परंपरा** का प्रवेश आसान हुआ।

4. संरक्षक वर्ग की भूमिका – मेडिची परिवार:

- फ्लोरेंस का *मेडिची परिवार* एक शक्तिशाली बैंकर और राजनैतिक संरक्षक वर्ग था।
- उन्होंने **चित्रकारों (बोटिचेली), वास्तुविदों (ब्रूनेलेस्की), वैज्ञानिकों और विद्वानों** को संरक्षण प्रदान किया।
- इसने एक ऐसी संस्कृति को जन्म दिया जिसमें **कलात्मक स्वतंत्रता और बौद्धिक अनुसंधान** को समर्थन मिला।

5. छापेखाने का आविष्कार (1455):

- *जोहान्स गुटेनबर्ग* ने जर्मनी में **मुद्रण कला** का विकास किया, जिससे **ज्ञान का जनसामान्य तक प्रसार** संभव हुआ।

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

• *बाइबिल* और क्लासिकी ग्रंथों की प्रतियाँ अब बड़े पैमाने पर उपलब्ध होने लगीं।
• इसने **साक्षरता दर बढ़ाई, आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित किया**, और चर्च की एकाधिकारिता को चुनौती दी।

1.4 राजनीतिक और सामाजिक पृष्ठभूमि

1. सामंती व्यवस्था का पतन और नई सामाजिक संरचना का उदय:

• मध्यकाल में यूरोप में सत्ता का केंद्र *भूमि-आधारित सामंती व्यवस्था* थी, जहाँ राजा, कुलीन और चर्च मिलकर समाज को नियंत्रित करते थे।
• 14वीं शताब्दी के बाद कृषि उत्पादन में गिरावट, प्लेग (Black Death) महामारी, और जनसंख्या में कमी ने **सामंतों की शक्ति कमजोर कर दी**।
• कृषक वर्ग का विस्थापन हुआ और वे **शहरों की ओर प्रवास** करने लगे, जिससे **शहरीकरण और व्यापारी वर्ग** का उदय हुआ।

2. नगर राज्यों (City-States) का विकास और प्रतिस्पर्धा:

• इटली के फ्लोरेंस, वेनिस, मिलान, पिसा, जेनोआ आदि **स्वशासित नगर-राज्य** बन गए, जिनमें व्यापार, बैंकिंग और कलाओं का केंद्र स्थापित हुआ।
• इन नगर राज्यों के बीच **सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक प्रतिस्पर्धा** थी, जिसने कलाकारों, वैज्ञानिकों और दार्शनिकों को प्रोत्साहन दिया।
• *फ्लोरेंस* विशेष रूप से पुनर्जागरण का पालना माना जाता है, जहाँ *मेडिची परिवार* ने विद्वानों और कलाकारों को संरक्षण दिया।

3. चर्च की सत्ता से असंतोष और वैचारिक स्वतंत्रता की माँग:

• मध्ययुगीन काल में *कैथोलिक चर्च* न केवल धार्मिक बल्कि राजनीतिक और आर्थिक सत्ता का केंद्र था।
• चर्च द्वारा *दुराचार, भ्रांतिपूर्ण सिद्धांत*, और *धार्मिक कर* (जैसे इंडलजेंस) से जनता में असंतोष उत्पन्न हुआ।
• विद्वानों ने धार्मिक सत्य पर *तर्क, अनुभव और विवेक आधारित सोच* को महत्त्व दिया। इससे धार्मिक और बौद्धिक *नवजागरण की नींव* पड़ी।
• यह असंतोष आगे चलकर *धर्म सुधार आंदोलन (Reformation)* में परिणत हुआ।

4. व्यापारी और बैंकर वर्ग का सशक्तिकरण:

• नगरों में उभरते *बैंकर्स, व्यापारियों, दस्तकारों* की आर्थिक शक्ति बढ़ने लगी।
• उन्होंने **कला, शिक्षा, स्थापत्य, और मुद्रण कार्यों में निवेश** किया, जिससे पुनर्जागरण की वैचारिक ऊर्जा को समर्थन मिला।
• *"पैसा अब धर्म और वंश से अधिक महत्त्वपूर्ण बन गया।"*

5. सामाजिक गतिशीलता और शिक्षा का प्रसार:

• विश्वविद्यालयों और स्कूलों की स्थापना से **साक्षरता दर में वृद्धि** हुई।
• मध्यकालीन धार्मिक शिक्षा के स्थान पर *गणित, विज्ञान, व्याकरण, कविता* आदि पर बल दिया जाने लगा (known as *studia humanitatis*)।
• *व्यक्तिवाद* और *स्वतंत्र चिंतन* की धारणा समाज में स्थान पाने लगी।

1.5 प्रभावी संरक्षक केंद्र

1. फ्लोरेंस (Florence): पुनर्जागरण की जन्मभूमि

• **फ्लोरेंस** को *पुनर्जागरण का पालना (Cradle of Renaissance)* कहा जाता है।
• यहाँ का *मेडिची परिवार* (विशेषतः कोज़िमो और लोरेन्ज़ो द मेडिची) पुनर्जागरण कला और विद्वता का सबसे बड़ा संरक्षक था।
• इस नगर में **मानवतावाद (Humanism)**, चित्रकला, स्थापत्य और दर्शन के बीज पड़े।
• प्रमुख व्यक्तित्व:
– *पेत्रार्क* (मानवतावाद का जनक)
– *दांते* ('डिवाइन कॉमेडी' लेखक)
– *लियोनार्डो दा विंची* (विट्रुवियन मैन, मोना लिसा)
– *माइकेलएंजेलो* (डेविड, सिस्टीन चैपल की चित्रकारी)
– *ब्रूनेलेस्की* (डोमो ऑफ फ्लोरेंस कैथेड्रल)

2. वेनिस (Venice): कला, संगीत और मुद्रण का केंद्र

• वेनिस एक शक्तिशाली *सामुद्रिक गणराज्य* और व्यापारिक केंद्र था, जिससे इसे **अरबी और पूर्वी ज्ञान परंपराओं** तक आसान पहुँच मिली।
• यहाँ पुनर्जागरण *चित्रकला में रंग प्रयोग, मुद्रण तकनीक, संगीत, और स्थापत्य* का उत्कर्ष हुआ।
• *वेनिस स्कूल ऑफ आर्ट* – टिशियन, बेलिनी, वेरोनीज़ जैसे चित्रकारों की धरोहर।
• *अल्दुस मैनुटियस* द्वारा स्थापित **Aldine Press** ने यूनानी-रोमन ग्रंथों को बड़े स्तर पर मुद्रित कर यूरोप भर में फैलाया।

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

• वेनिस पुनर्जागरण का *"बौद्धिक वाणिज्य केंद्र"* बन गया।

3. रोम (Rome): पुनर्जागरण स्थापत्य और पोप का संरक्षण

• रोम पुनर्जागरण का *धार्मिक और स्थापत्यिक केंद्र* बना, विशेषकर 15वीं शताब्दी के अंत और 16वीं शताब्दी में।

• **पोप जूलियस द्वितीय** और **पोप लियो X** ने अनेक महान कलाकारों को संरक्षण प्रदान किया।

• *वेटिकन सिटी* और *सेंट पीटर्स बेसिलिका* के निर्माण कार्यों ने रोमन स्थापत्य को पुनर्जीवित किया।

• प्रमुख घटनाएँ व कृतियाँ:

– *माइकेलएंजेलो* द्वारा *सिस्टीन चैपल की छत* पर बाइबिल आधारित चित्रण।

– *राफेल* की *School of Athens* – मानव विवेक और दर्शन की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति।

• रोम में पुनर्जागरण की **धर्मनिरपेक्षता और ईश्वरीय कला** का अद्भुत समन्वय देखा गया।

1.6 मूल विचारधारात्मक संक्रमण: मध्यकाल से आधुनिकता की ओर बौद्धिक क्रांति

1. मध्यकालीन मानसिकता (Medieval Mindset):

• **ईश्वर-केन्द्रित जीवन-दृष्टि:** जीवन का उद्देश्य ईश्वर की सेवा, मोक्ष प्राप्ति और पाप से मुक्ति माना जाता था।

• **धार्मिक अधिनायकवाद:** *कैथोलिक चर्च* ही ज्ञान, शिक्षा और नीति निर्धारण का सर्वोच्च केंद्र था।

• **रहस्यवाद (Mysticism):** विश्वास और रहस्य आधारित दृष्टिकोण को प्राथमिकता – तर्क की अपेक्षा श्रद्धा पर बल।

• **धर्मप्रधान समाज:** शिक्षा, चिकित्सा, साहित्य और कला सभी ईश्वरीय उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रयुक्त होते थे।

• **गृहस्थ जीवन की अवहेलना:** सांसारिक सुखों को तुच्छ और पापमय माना जाता था।

2. पुनर्जागरणीय दृष्टिकोण (Renaissance Thinking):

• **मानव-केंद्रित (Human-Centric) दृष्टि:** मनुष्य को ब्रह्मांड का केंद्र माना गया; उसकी विवेकशीलता, अनुभव और जिज्ञासा को महत्त्व मिला।

• **तर्कशीलता और विश्लेषण:** ज्ञान के लिए *अनुभव, परीक्षण और तर्क* को प्राथमिकता – *"Cogito ergo sum" (मैं सोचता हूँ, इसलिए मैं हूँ)* – डेसकार्टेस।

• **धर्मनिरपेक्षता (Secularism):** जीवन को धार्मिक आधिपत्य से बाहर देखना; कला, विज्ञान, राजनीति का स्वतंत्र विकास।

• **व्यक्तिवाद (Individualism):** व्यक्ति की सोच, रचनात्मकता, और अधिकारों की स्वीकृति।

• **प्राकृतिक जीवन की स्वीकृति:** सौंदर्य, प्रेम, संगीत, शारीरिक सौंदर्य और प्रकृति के प्रति उत्साहपूर्ण दृष्टिकोण।

• **ज्ञान की पुनर्परिभाषा:** ज्ञान अब केवल धर्मग्रंथों से नहीं, बल्कि *प्रकृति, अनुभव, और प्राचीन ग्रीक-रोमन ग्रंथों* से भी प्राप्त किया जा सकता है।

सार

आयाम	मध्यकालीन मानसिकता	पुनर्जागरणीय दृष्टिकोण
जीवन का केंद्र	ईश्वर	मनुष्य
ज्ञान का स्रोत	धर्मग्रंथ	अनुभव, तर्क, प्राचीन ग्रंथ
कला का उद्देश्य	ईश्वरीय महिमा	मानव सौंदर्य और यथार्थ
विज्ञान	चर्च-नियंत्रित	स्वतंत्र और परीक्षण आधारित
विज्ञान	चर्च-नियंत्रित	स्वतंत्र और परीक्षण आधारित
शिक्षा	धर्मशास्त्र-प्रधान	मानविकी, दर्शन, विज्ञान
दृष्टिकोण	अंधविश्वास, रहस्यवाद	विवेकशीलता, तर्कवाद

1.7 पुनर्जागरण की आधारभूमि के निर्माण में भूमिका निभाने वाले स्रोत

1. अरबी अनुवादों के माध्यम से यूनानी-रोमन ज्ञान का पुनरुद्धार:

• 8वीं से 12वीं शताब्दी के बीच, **मध्यकालीन इस्लामी विद्वानों** (जैसे अल-फराबी, इब्न रश्द, इब्न सीना) ने अरस्तू, प्लेटो, हिप्पोक्रेट्स और गैलेन जैसे यूनानी दार्शनिकों के कार्यों का *अरबी भाषा में अनुवाद* किया।

• इन ग्रंथों का पुनः *लैटिन में अनुवाद* स्पेन (Toledo और Córdoba) जैसे केंद्रों में हुआ, जिससे वे यूरोप के विद्वानों तक पहुँचे।

• इससे **दर्शन, तर्कशास्त्र, चिकित्सा, ज्योतिष, गणित और भौतिक विज्ञान** जैसे विषयों का पुनरुद्धार संभव हुआ।

• यह प्रक्रिया *Ad Fontes* (मूल स्रोतों की ओर) की पुनर्जागरणीय प्रवृत्ति की प्रेरणा बनी।

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

2. थॉमस एक्विनास और तर्क-आस्था समन्वय का प्रयास:

- *संत थॉमस एक्विनास* (1225–1274), एक ईसाई धर्मशास्त्री और दार्शनिक, ने *अरस्तू* के तर्कशास्त्र को *कैथोलिक सिद्धांत* से समन्वित करने का प्रयास किया।
- उनकी कृति *Summa Theologica* ने बताया कि **तर्क और आस्था परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हैं**।
- यह विचारधारा *स्कोलास्टिसिज़्म* (Scholasticism) कहलाती है, जिसने चर्च और बौद्धिक समुदाय के बीच संवाद की नींव रखी।
- उन्होंने *Natural Law Theory* के माध्यम से नैतिकता और विधि में विवेक की भूमिका स्थापित की।

3. क्रूसेड्स और मध्य-पूर्वी ज्ञान परंपराओं का सम्पर्क:

- 11वीं से 13वीं शताब्दी के **क्रूसेड युद्धों** ने यूरोपीय ईसाइयों को *मुस्लिम दुनिया की वैज्ञानिक और सांस्कृतिक उन्नति* से परिचित कराया।
- विशेषतः **गणित (अलजेब्रा), खगोलशास्त्र, औषधि विज्ञान, भूगोल, रसायनशास्त्र** जैसे क्षेत्रों में इस्लामी ज्ञान यूरोप तक पहुँचा।
- *Baghdad, Damascus, Cairo* जैसे विद्या-केंद्रों के संपर्क में आने से *पुस्तकालय संस्कृति* का पुनर्जन्म हुआ।
- इस संपर्क ने *रूपरेखा, पद्धति और प्रश्न पूछने की वैज्ञानिक प्रवृत्ति* को जन्म दिया।

4. यहूदी विद्वानों की मध्यस्थ भूमिका:

- कई **यहूदी विद्वान** (जैसे माइमोनिडीज) ने यूनानी-रोमन ग्रंथों का अरबी से हिब्रू और फिर लैटिन में अनुवाद कर *संस्कृति सेतु* का कार्य किया।
- उनके योगदान से चिकित्सा, दर्शन और ज्योतिष के ग्रंथ यूरोपीय अकादमियों में पहुँचे।

5. विश्वविद्यालयों की स्थापना और शास्त्रों की पुनर्पठ संस्कृति:

- 12वीं–13वीं शताब्दी में यूरोप में *पेरिस, ऑक्सफोर्ड, बोलोग्ना, सालामैंका* जैसे विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई।
- इनमें *ट्रिवियम (व्याकरण, तर्क, वाक्पटुता)* और *क्वाड्रीवियम (गणित, ज्यामिति, संगीत, खगोलशास्त्र)* पर आधारित शिक्षा दी गई, जिसने पुनर्जागरण के लिए बौद्धिक वातावरण निर्मित किया।

1.8 पुनर्जागरण की प्रमुख विशेषताएँ (Key Features of Renaissance)

1. मानववाद (Humanism):

- पुनर्जागरण की केन्द्रीय विचारधारा – *मानववाद* – मानव को सृष्टि का केंद्र और स्वतंत्र विवेकशील प्राणी मानती थी।
- "**Man is the measure of all things**" – इस विचार के अंतर्गत व्यक्ति की गरिमा, स्वतंत्रता, संवेदना और तर्क को सर्वोपरि माना गया।
- *पेत्रार्क, पिको डेला मिरांडोला,* और *एरास्मस* मानववादी चिंतन के अग्रणी थे।
- विषयों की नई श्रेणी *Studia Humanitatis* (व्याकरण, इतिहास, काव्य, दर्शन, नैतिकता) विकसित हुई।

2. धर्मनिरपेक्ष सोच (Secular Outlook):

- ज्ञान, कला और शासन अब धर्म के अधीन न होकर **मनुष्य और समाज की समस्याओं पर केंद्रित** होने लगे।
- कला, साहित्य और दर्शन अब धार्मिक आख्यानों से हटकर *प्राकृतिक, लौकिक और मानवीय विषयों* पर केन्द्रित हुए।
- राज्य और चर्च के बीच की सीमाएँ स्पष्ट होने लगीं।

3. वैज्ञानिक दृष्टिकोण और प्रकृति की पुनर्व्याख्या:

- पुनर्जागरण के दौरान ज्ञान का आधार **अंधविश्वास से हटकर अवलोकन, प्रयोग और तर्क** बना।
- कोपरनिकस का **Heliocentric सिद्धांत**, गैलीलियो के दूरबीन प्रयोग, केपलर के ग्रहों की गति नियम और न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण सिद्धांत ने **आधुनिक विज्ञान की नींव रखी**।
- शरीर-विज्ञान, खगोलविज्ञान, यांत्रिकी और रसायन में महत्त्वपूर्ण प्रगति हुई (वेसालियस, हार्वे, बोइल)।

4. कलात्मक उत्कर्ष और यथार्थवाद:

- चित्रकला, मूर्तिकला और स्थापत्य में **यथार्थवाद, मानव शरीर का वैज्ञानिक चित्रण** और *perspective* की तकनीकों का विकास हुआ।
- **Linear Perspective**: दूरी, गहराई और आयामों का यथार्थ चित्रण।
- **Chiaroscuro**: प्रकाश और छाया के संतुलन द्वारा मूड और गहराई उत्पन्न करना।

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

• प्रमुख कलाकार: *लियोनार्डो दा विंची, माइकेलएंजेलो, राफेल, बोटिचेली, टिशियन*।

5. प्राचीनता का पुनरुद्धार (Classical Revival):

- • ग्रीक-रोमन ग्रंथों, स्थापत्य, नाट्य, दर्शन और राजनीति की पुनर्पाठ प्रवृत्ति – *Ad fontes* (मूल स्रोतों की ओर)।
  • प्लेटो, अरस्तू, सिसरो, होमर, लिवी जैसे विद्वानों के विचारों को पुनः अपनाया गया।
  • प्राचीन भवन निर्माण शैलियों जैसे *डोरिक, आयोनिक, कोरिन्थियन* का प्रयोग फिर से हुआ।

6. छपाई क्रांति (Printing Revolution):

• **1455 में जोहान्स गुटेनबर्ग** द्वारा यूरोप में *movable type printing press* का आविष्कार – *गुटेनबर्ग बाइबिल* प्रथम मुद्रित पुस्तक मानी जाती है।
• इससे विचारों का तीव्र प्रसार, **साक्षरता में वृद्धि**, और *पुस्तकों की लोकतांत्रिक उपलब्धता* संभव हुई।
• धार्मिक सुधार और बौद्धिक क्रांति का यह आधार बना।

7. शिक्षा का विस्तार और संस्थागत विकास:

• *पेरिस, ऑक्सफोर्ड, बोलोग्ना, सलामैंका* जैसे विश्वविद्यालयों में *मानवतावादी पाठ्यक्रम* अपनाए गए।
• **अकादमियाँ** (जैसे Accademia Platonica – फ्लोरेंस) और **पुस्तकालय** स्थापित हुए।
• *Grammar schools* के माध्यम से नई शिक्षा पद्धति में साहित्य, तर्क, व्याकरण और गणित को स्थान मिला।

8. भाषायी नवोत्थान और जनभाषा का प्रयोग:

• *लैटिन* की जगह **स्थानीय भाषाओं (vernaculars)** का प्रयोग बढ़ा – ज्ञान अब आम जनता तक पहुँचने लगा।
• महान रचनाएँ:
– *दांते* की "Divine Comedy" (इतालवी में)
– *सेर्वेंतेस* की "Don Quixote" (स्पेनी में)
– *शेक्सपीयर* के नाटक व काव्य (अंग्रेजी में)
• इससे *राष्ट्रभाषा की भावना* को बल मिला और साहित्य में विविधता आई।

1.9 क्षेत्रीय पुनर्जागरण रूप (Regional Forms of Renaissance)

1. इटली (Italian Renaissance):

• **स्थान:** फ्लोरेंस, रोम, वेनिस
• **मुख्य प्रवृत्ति:** कला, स्थापत्य, मानवतावाद और दर्शन का उत्कर्ष।
• **प्रमुख विचारक/कलाकार:**
– *लियोनार्डो दा विंची*: चित्रकला, शरीर रचना, विज्ञान (विट्रुवियन मैन, मोना लिसा)।
– *माइकेलएंजेलो*: मूर्तिकला (डेविड), स्थापत्य (सेंट पीटर्स बेसिलिका), चित्रण (सिस्टीन चैपल)।
– *राफेल*: School of Athens – ज्ञान और विवेक की चित्रात्मक अभिव्यक्ति।
– *निकोलो मैकियावेली*: "The Prince" – यथार्थवादी राजनीति का शास्त्र।
• **विशेषताएँ:** धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण, ग्रीक–रोमन परंपराओं का पुनरुद्धार, चित्रकला में यथार्थ और सौंदर्य।

2. इंग्लैंड (English Renaissance):

• **स्थान:** लंदन, ऑक्सफोर्ड, कैम्ब्रिज
• **मुख्य प्रवृत्ति:** साहित्य, नाटक और भाषा का नवोत्थान।
• **प्रमुख साहित्यकार:**
– *विलियम शेक्सपीयर*: "Hamlet", "Othello", "Macbeth", "Romeo & Juliet" – मानवीय भावनाओं और नैतिक द्वंद्व का गहरा चित्रण।
– *थॉमस मोर*: "Utopia" – आदर्श समाज की कल्पना व सामाजिक आलोचना।
– *क्रिस्टोफर मार्लो*: "Doctor Faustus" – विद्या की लालसा और नैतिक पतन।
• **विशेषताएँ:** *Elizabethean Age* का उत्कर्ष, अंग्रेजी भाषा का मानकीकरण, धर्मनिरपेक्ष नाट्यकला।

3. फ्रांस (French Renaissance):

• **स्थान:** पेरिस, लोयर घाटी
• **मुख्य प्रवृत्ति:** निबंध, हास्य-व्यंग्य, दर्शन और स्थापत्य का विकास।
• **प्रमुख लेखक:**
– *मिशेल द मॉन्तेन*: "Essais" – आत्मचिंतन, अनुभव और विचारशील गद्य का जन्मदाता।
– *फ्रांकोइस राबेले*: "Gargantua and Pantagruel" – सामाजिक-राजनीतिक विडंबनाओं पर व्यंग्य।
• **विशेषताएँ:** राजा फ्रांसिस प्रथम के संरक्षण में साहित्य और वास्तुकला का विकास, क्लासिकवाद की प्रवृत्ति।

4. जर्मनी (German Renaissance):

• **स्थान:** विटेनबर्ग, नूरेमबर्ग
• **मुख्य प्रवृत्ति:** धार्मिक सुधार, नैतिक पुनर्जागरण

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

RAS मुख्य परीक्षा 2024-25

DATE	DAY	TOPICS
12-May	1	✓ GS I - Unit I
13-May	2	✓ GS I - Unit II
14-May	3	✓ GS I - Unit III
15-May	4	✓ GS II - Unit I
16-May	5	✓ GS II - Unit II
17-May	6	✓ GS II - Unit III
18-May	7	✓ GS III - Unit I
19-May	8	✓ GS III - Unit II
20-May	9	✓ GS III - Unit III
21-May	10	COMPLETE REVISION
22-May	11	FULL LENGTH TEST GS - 1
23-May	12	FULL LENGTH TEST GS - 2
24-May	13	COMPLETE REVISION
25-May	14	FULL LENGTH TEST GS - 3
26-May	15	FULL LENGTH TEST GS - 4
27-May	16	✓ GS I - Unit I
28-May	17	✓ GS I - Unit II
29-May	18	✓ GS I - Unit III
30-May	19	✓ GS II - Unit I
31-May	20	✓ GS II - Unit II
01-Jun	21	✓ GS II - Unit III
02-Jun	22	✓ GS III - Unit I
03-Jun	23	✓ GS III - Unit II
04-Jun	24	✓ GS III - Unit III
05-Jun	25	COMPLETE REVISION
06-Jun	26	FULL LENGTH TEST GS - 1
07-Jun	27	FULL LENGTH TEST GS - 2
08-Jun	28	COMPLETE REVISION
09-Jun	29	FULL LENGTH TEST GS - 3
10-Jun	30	FULL LENGTH TEST GS - 4

अंतिम 30 दिन

Daily Answer Writing Practice

Daily Unit-Wise Answer Writing Tests

- GS Paper 1, 2, 3 — सभी पेपर की हर यूनिट कवर की जाएगी
- प्रत्येक unit का सम्पूर्ण टेस्ट, सिलेबस का पूरा कवरेज

Daily Class Test Discussion

- प्रत्येक टेस्ट के बाद Classroom + Live Discussion
- Best answer approach + structure & keywords

Personalized Mentorship

- प्रत्येक छात्र को Daily Guidance By Kritika Gaur (RAS 2021)
- Answer Writing , presentation & time management पर सुधार

8 Full Length Test - GS I, II, III & IV

- सभी पेपर - RPSC परीक्षा पैटर्न पर आधारित
- Daily - Unit 1, Unit 2, Unit 3 — तीनों पेपर के सभी यूनिट्स

12 May से 10 June

Schedule

Kritika Gaur

RAS 2021 - Rank 201 (SP Rank - 1)

शुल्क:- 4999/-

ऑफलाइन सेंटर Under Triveni Puliya, Gopalpura Jaipur

+91 9785606061

@RiseJaipur

और प्रिंटिंग क्रांति।

• **प्रमुख हस्तियाँ:**

– *मार्टिन लूथर*: 1517 में "95 थीसिस" – चर्च की आलोचना, प्रोटेस्टैंट आंदोलन का सूत्रपात।

– *डेसिडेरियस एरास्मस*: "In Praise of Folly" – धर्म और शिक्षा में सुधार की माँग, नैतिक मानवतावाद।

– *आल्ब्रेख्ट ड्यूरर*: पुनर्जागरण कला और चित्रण में अग्रणी।

• **विशेषताएँ:** धार्मिक विमर्श में तर्कशीलता, लैटिन के स्थान पर जर्मन भाषा में बाइबिल अनुवाद, धार्मिक सुधार का आधार।

5. नीदरलैंड (Dutch Renaissance):

• **स्थान:** ब्रुग्स, एंटवर्प

• **मुख्य प्रवृत्ति:** चित्रकला में यथार्थवाद, घरेलू जीवन और प्रकृति का सूक्ष्म चित्रण।

• **प्रमुख चित्रकार:**

– *जन वैन आइक*: तेल चित्रकला की तकनीक, धार्मिक और लौकिक जीवन का संयोजन (Arnolfini Portrait)।

– *हाइरॉनिमस बॉश*: कल्पनाशील और प्रतीकात्मक चित्रण – पाप, पुनर्जन्म और नैतिकता पर गहराई से चित्रण।

• **विशेषताएँ:** कला में सूक्ष्म यथार्थ, सामाजिक विडंबना और प्रतीकों का प्रयोग, तकनीकी कौशल का उत्कर्ष।

1.10 प्रमुख ऐतिहासिक घटनाएँ व प्रभाव

1. 1453 – कुस्तुंतुनिया का पतन:

• **घटना:** ऑटोमन तुर्कों ने बाइज़ैंटाइन साम्राज्य की राजधानी *कुस्तुंतुनिया* (अब इस्तांबुल) पर विजय प्राप्त की।

• **प्रभाव:**

– *ग्रीक और रोमन विद्वानों* का इटली की ओर पलायन हुआ, जिन्होंने अपने साथ *प्राचीन पांडुलिपियाँ, दर्शन और कला* की अमूल्य धरोहर लाई।

– इसने *इटली में पुनर्जागरण के बीज* बोए और मानवतावाद, कला, दर्शन व विज्ञान के पुनरुद्धार को प्रेरणा दी।

– साथ ही, पारंपरिक **एशिया-यूरोप थल मार्ग बाधित** हुआ, जिससे समुद्री मार्गों की खोज की दिशा में प्रयास बढ़े।

2. 1492 – कोलंबस की अमेरिका खोज:

• **घटना:** *क्रिस्टोफर कोलंबस* ने स्पेन के समर्थन से पश्चिम की ओर समुद्री मार्ग खोजते हुए अमेरिका की खोज की।

• **प्रभाव:**

– *"नए विश्व"* की अवधारणा जन्मी, जिसने भौगोलिक सीमाओं के पार सोचने की दृष्टि को बल दिया।

– **उपनिवेशवाद** की नींव पड़ी – स्पेन, पुर्तगाल, इंग्लैंड आदि ने एशिया, अफ्रीका, अमेरिका में उपनिवेश बनाए।

– **व्यापार, जनसांख्यिकी, धर्म और संस्कृति** में वैश्विक स्तर पर परिवर्तन हुआ – जिसे *Columbian Exchange* कहा जाता है।

3. 1517 – मार्टिन लूथर का 95 सूत्र (95 Theses):

• **घटना:** जर्मन विद्वान *मार्टिन लूथर* ने चर्च की प्रायश्चित-विक्रय नीति (indulgences) के विरोध में *विटेनबर्ग चर्च* के द्वार पर 95 सूत्र चस्पा किए।

• **प्रभाव:**

– *प्रोटेस्टैंट सुधार आंदोलन* की शुरुआत हुई, जिसने **कैथोलिक चर्च की एकाधिकारिता को तोड़ा**।

– धर्म और राज्य के बीच *स्वतंत्रता और विवेक की अवधारणा* विकसित हुई।

– यूरोप में धार्मिक विभाजन, संघर्ष और अंततः **धर्मनिरपेक्षता** की दिशा में विकास हुआ।

4. 1543 – कोपरनिकस की खोज (Heliocentric Theory):

• **घटना:** *निकोलस कोपरनिकस* ने अपनी कृति *De Revolutionibus Orbium Coelestium* में यह सिद्ध किया कि **सूर्य ब्रह्मांड का केंद्र है**, न कि पृथ्वी।

• **प्रभाव:**

– यह *भौगोलिक दृष्टिकोण* और **चर्च की शाश्वत अवधारणाओं** को चुनौती देने वाला विचार था।

– इसने **वैज्ञानिक क्रांति की नींव** रखी और ब्रह्मांड को तर्क और गणितीय रूप से समझने की प्रवृत्ति को जन्म दिया।

– आगे चलकर *गैलीलियो, केपलर और न्यूटन* जैसे वैज्ञानिकों के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

5. 1610 – गैलीलियो का दूरबीन प्रयोग:

• **घटना:** *गैलीलियो गैलिली* ने दूरबीन के माध्यम से चंद्रमा के गड्ढे, बृहस्पति के चंद्रमा और शुक्र के चरणों का अवलोकन किया।

• **प्रभाव:**

– इसने **कोपरनिकस के हेलीओसेंट्रिक सिद्धांत को प्रत्यक्ष प्रमाण** प्रदान किया।

– *चर्च और विज्ञान के बीच टकराव* स्पष्ट हुआ – गैलीलियो को इन विचारों के लिए *Inquisition* का सामना करना पड़ा।

– इससे **अनुभवजन्य विज्ञान (Empirical Science)** और अवलोकन आधारित अनुसंधान की प्रतिष्ठा बढ़ी।

1.11 पुनर्जागरण के क्षेत्र (Fields of Renaissance):

- पुनर्जागरण केवल कला या साहित्य तक सीमित नहीं था, बल्कि यह **मानव जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों** में व्यापक परिवर्तन लेकर आया।
निम्नलिखित प्रमुख क्षेत्रों में इसका प्रभाव देखा गया:

1. पुनर्जागरण काल की कला (Renaissance Art)

पुनर्जागरण काल की कला (Art) को तीन मुख्य उपक्षेत्रों — चित्रकला, मूर्तिकला और स्थापत्य — में विभाजित किया गया है।

• **A. चित्रकला (Painting):**

• **प्रमुख विशेषताएँ:**

• *यथार्थवाद (Realism):* मानव भावनाओं, चेहरे के भावों और शरीर के अनुपात का वास्तविक चित्रण।

• *मानव शरीर का वैज्ञानिक चित्रण:* शरीर रचना (Anatomy) का अध्ययन – मांसपेशियाँ, हड्डियाँ, गति आदि का सजीव चित्रण।

• *Linear Perspective:* चित्र में गहराई और आयाम लाने की तकनीक (ब्रूनेलेस्की द्वारा विकसित)।

• *Chiaroscuro:* प्रकाश और छाया के प्रभाव द्वारा त्रिविमीयता (3D illusion) उत्पन्न करना।

• *Fresco Technique:* गीली दीवारों पर चित्रकारी, विशेषकर धार्मिक स्थलों में प्रयोग।

• **प्रमुख चित्रकार:**

• **लियोनार्डो दा विंची:** *The Last Supper, Mona Lisa* – वैज्ञानिक दृष्टिकोण और मानसिक गहराई का चित्रण।

• **राफेल:** *The School of Athens* – मानवतावाद व क्लासिकी दर्शन की अभिव्यक्ति।

• **बोटिचेली:** *The Birth of Venus* – सौंदर्य और पौराणिकता का संयोजन।

• **जियोत्तो:** यथार्थवाद की प्रारंभिक शुरुआत, भावनाओं का सूक्ष्म चित्रण।

• **B. मूर्तिकला (Sculpture):**

• **प्रमुख विशेषताएँ:**

• *शारीरिक संरचना की वैज्ञानिक सटीकता:* शरीर की गति, भाव और अनुपात का यथार्थ रूपांतरण।

• *ग्रीक–रोमन मूर्तिकला की पुनरावृत्ति:* नग्नता, संतुलन, और सौंदर्य का क्लासिकी प्रभाव।

• *स्वतंत्र मूर्तियाँ:* जो किसी दीवार से जुड़ी नहीं थीं, चारों ओर से देखने योग्य थीं।

• *मानव आत्मा और शक्ति* की मूर्त अभिव्यक्ति।

• **प्रमुख मूर्तिकार:**

• **माइकेलएंजेलो:**

– *David:* पूर्ण शारीरिक सौंदर्य और आत्मबल का प्रतीक।

– *Pietà:* करुणा और धार्मिक भाव का अनुपम संगम।

• **डोनाटेल्लो:** *St. George, David* – पुनर्जागरण यथार्थवाद के अग्रदूत।

• **गिबर्टी:** *Gates of Paradise* (Florence Baptistery) – कांस्य के द्वार पर बाइबिल कथाओं का त्रिविमीय चित्रण।

• **C. स्थापत्य (Architecture):**

• **प्रमुख विशेषताएँ:**

• *ग्रीक–रोमन स्थापत्य शैली का पुनरुद्धार:* स्तंभ, गुंबद (domes), त्रिकोणाकार फ्रंट, और सममिति।

• *सौंदर्य और गणितीय अनुपात का संतुलन:* मानव शरीर की तरह भवनों को भी संतुलित और अनुपातपूर्ण माना गया।

• *सार्वजनिक भवनों, चर्चों, महलों का निर्माण* जिसमें शक्ति और सौंदर्य का मिश्रण हो।

• **प्रमुख स्थापत्यविद्:**

• **फिलिपो ब्रूनेलेस्की:** *Florence Cathedral* का गुंबद – इंजीनियरिंग और सौंदर्यशास्त्र का अद्भुत संयोजन।

• **लियोन बाटिस्ता अल्बर्टी:** स्थापत्य में गणितीय नियमों का सूत्रपात (*De Re Aedificatoria*)।

• **माइकेलएंजेलो:** *St. Peter's Basilica* (वेटिकन) का निर्माण – ईसाई स्थापत्य की सर्वोच्च कृति।

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

2. पुनर्जागरण का साहित्य (Renaissance Literature)

A. जनभाषा (Vernacular Literature) में लेखन:

• मध्यकाल तक अधिकांश साहित्य **लैटिन** में होता था, जिसे केवल धर्मगुरु या शिक्षित वर्ग ही पढ़ सकता था।

• पुनर्जागरण में **जनभाषाओं** (अंग्रेज़ी, इतालवी, फ्रेंच, जर्मन, स्पेनी आदि) में लेखन को प्रोत्साहन मिला – इससे **ज्ञान का लोकतांत्रिक प्रसार** संभव हुआ।

• *दांते*, *बोक्काचियो*, *शेक्सपीयर*, *सेर्वेंतेस* जैसे लेखकों ने आमजन की भाषा में उत्कृष्ट रचनाएँ दीं।

• इससे *राष्ट्रभाषा चेतना*, *लोकप्रसार*, और *स्थानीय संस्कृति की अभिव्यक्ति* को बल मिला।

B. नवविचार (New Literary Ideals):

• मुख्य प्रवृत्तियाँ:

• **मानवीय भावना (Human Emotion):** साहित्य अब केवल धर्म या नैतिक उपदेश नहीं, बल्कि *प्रेम, दुःख, संघर्ष, आशा* जैसी मानवीय अनुभूतियों पर केंद्रित हुआ।

• **यथार्थवाद (Realism):** पात्र और घटनाएँ *जीवन के निकट* दिखाए जाने लगे।

• **आलोचनात्मक दृष्टिकोण (Critical Thinking):** समाज, धर्म और राजनीति की *तार्किक आलोचना* प्रकट होने लगी।

• **हास्य–व्यंग्य (Satire):** साहित्य में *मूल्यविहीन व्यवस्था* पर कटाक्ष किया गया – जैसे फ्रांकोइस राबेले।

• **धर्मनिरपेक्षता और व्यक्तिवाद:** व्यक्ति के दृष्टिकोण, आत्म-विश्लेषण और अनुभव को महत्त्व दिया गया।

C. साहित्यिक विधाओं का विकास (Genres):

1. कविता (Poetry):

• व्यक्तिगत प्रेम, सौंदर्य, नैतिकता और प्रकृति की भावनात्मक अभिव्यक्ति।

• *दांते* (Divine Comedy), *पेत्रार्क* (Sonnet tradition) और *एडमंड स्पेंसर* (Faerie Queene) की रचनाएँ उल्लेखनीय।

2. नाटक (Drama):

• मंच पर यथार्थवादी कथानक, गहन संवाद और बहुस्तरीय पात्रों का विकास।

• *शेक्सपीयर*: "Hamlet", "Othello", "King Lear" – मनोवैज्ञानिक गहराई और मानवीय द्वंद्व का समावेश।

• *क्रिस्टोफर मार्लो*: "Doctor Faustus" – ज्ञान की लालसा और नैतिक पतन पर आधारित नाटक।

3. निबंध (Essay):

• वैचारिक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम – व्यक्तिगत अनुभव, सामाजिक आलोचना, दर्शन।

• *मिशेल द मॉन्तेन* – "Essais" के माध्यम से आत्मचिंतन और विश्लेषणात्मक गद्य शैली की शुरुआत।

• *फ्रांसिस बेकन* – "Of Studies", "Of Truth" – सूक्तिपूर्ण और प्रयोगवादी शैली।

4. उपन्यास (Novel/Fiction):

• प्रारंभिक उपन्यासों में *आदर्श समाज, राजनीतिक कल्पना, और नैतिक द्वंद्व* का चित्रण हुआ।

• *थॉमस मोर* की "Utopia" – सामाजिक न्याय, समानता और धर्मनिरपेक्ष आदर्श पर आधारित।

• *सेर्वेंतेस* की "Don Quixote" – मध्यकालीन आदर्शवाद की विडंबनात्मक आलोचना।

D. प्रमुख साहित्यकार और कृतियाँ (By Region):

• प्रमुख साहित्यकार और कृतियाँ (By Region) – संक्षेप में:

• इटली:

• *दांते* – *Divine Comedy* (ईश्वर तक आत्मा की यात्रा)

• *पेत्रार्क* – *Canzoniere* (प्रेम और मानवतावाद)

• *बोक्काचियो* – *Decameron* (व्यंग्यात्मक कहानियाँ)

• इंग्लैंड:

• *शेक्सपीयर* – *Hamlet, Macbeth* (मानव स्वभाव और द्वंद्व)

• *थॉमस मोर* – *Utopia* (आदर्श समाज की कल्पना)

• *मार्लो* – *Doctor Faustus* (ज्ञान की लालसा)

• फ्रांस:

• *मॉन्तेन* – *Essais* (निजी अनुभवों पर निबंध)

• *राबेले* – *Gargantua* (हास्य और सामाजिक व्यंग्य)

• स्पेन:

• *सेर्वेंतेस* – *Don Quixote* (शूरवीर परंपरा की आलोचना)

• जर्मनी:

• *लूथर* – *German Bible* (जनभाषा में धर्मग्रंथ)

डच

• *एरास्मस* – *In Praise of Folly* (चर्च पर व्यंग्य)

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

3. दर्शन (Philosophy)

1. मानववाद (Humanism):

• यह पुनर्जागरण दर्शन की मूल आधारशिला थी, जो व्यक्ति की *गरिमा, विवेकशीलता, अनुभव, तर्क और आत्म-निर्भरता* पर बल देती है।

• *पेत्रार्क* को मानवतावाद का जनक माना जाता है।

• उद्देश्य – *Studia Humanitatis* (व्याकरण, इतिहास, काव्य, नैतिकता) के माध्यम से ज्ञान का मानवीय पुनरुत्थान।

2. व्यक्तिवाद (Individualism):

• व्यक्ति को *समाज, धर्म या राज्य की रूढ़ियों* से ऊपर आत्मनिर्भर और स्वतंत्र निर्णय लेने में सक्षम माना गया।

• यह दृष्टिकोण पुनर्जागरण कला, साहित्य और राजनीति में स्पष्ट दिखता है – जैसे *शेक्सपीयर* के पात्रों में आंतरिक द्वंद्व और स्वतंत्रता।

• *"Man is the architect of his own destiny"* की धारणा को बल मिला।

3. नैतिकता और यथार्थवाद (Ethics and Realism):

• *निकोलो मैकियावेली* की कृति **The Prince** में राजनीति को *धार्मिक नैतिकता से पृथक* कर यथार्थ आधारित दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया।

• उन्होंने शासन में *धोखे, छल और शक्ति* को व्यवहारिक साधन माना।

• दर्शन अब केवल *सत्य की खोज* नहीं, बल्कि *जीवन के व्यावहारिक संचालन* का साधन बन गया।

4. विज्ञान (Science) – पुनर्जागरण काल में वैज्ञानिक चेतना का विकास

1. वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास:

• पुनर्जागरण में प्रकृति को *ईश्वरीय चमत्कार* के बजाय *विवेक, अनुभव और परीक्षण* के आधार पर समझने की प्रवृत्ति बढ़ी।

• *प्रेक्षण, प्रयोग और गणितीय तर्क* को ज्ञान का आधार माना गया।

2. प्रमुख वैज्ञानिक उपलब्धियाँ:

• **निकोलस कोपरनिकस (1543):**

– *Heliocentric सिद्धांत* – सूर्य को ब्रह्मांड का केंद्र बताया, पृथ्वी को घूर्णनशील ग्रह माना।

• **गैलीलियो गैलिली (1610):**

– *दूरबीन* से चंद्रमा की सतह, बृहस्पति के चंद्रमा, और शुक्र के चरणों का अवलोकन किया।

– चर्च से टकराव, *अनुभववाद का समर्थन*।

• **आइज़ैक न्यूटन (1687):**

– *गुरुत्वाकर्षण का सार्वत्रिक सिद्धांत*, गति के नियम (Principia Mathematica)।

– विज्ञान को *गणितीय सूत्रों और सार्वत्रिक नियमों* के माध्यम से समझने की दिशा दी।

3. वैज्ञानिक पद्धति की नींव:

• **फ्रांसिस बेकन** – अनुभववादी दृष्टिकोण के समर्थक।

• **रेने डेकार्टेस** – तर्कवाद के पक्षधर।

• इन विचारकों ने मिलकर **आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति** (Scientific Method) की नींव रखी – *प्रेक्षण → परिकल्पना → परीक्षण → निष्कर्ष*।

4. शरीर-विज्ञान (Anatomy):

• मानव शरीर को धार्मिक वर्जनाओं से हटकर वैज्ञानिक रूप में समझने की प्रक्रिया प्रारंभ हुई।

• **एंड्रियास वेसालियस (Andreas Vesalius)** ने 1543 में अपनी प्रसिद्ध कृति *De Humani Corporis Fabrica* प्रकाशित की।

– इसमें पहली बार *मानव शवों* के शल्य परीक्षण (dissection) के माध्यम से *हड्डियाँ, मांसपेशियाँ और अंगों* का सटीक वर्णन प्रस्तुत किया गया।

• इससे चिकित्सा अध्ययन *अनुमान से तथ्य* की ओर बढ़ा।

5. चिकित्सा विज्ञान (Medicine):

• *इब्न सीना* (Avicenna) की अरबी कृति *Canon of Medicine* के लैटिन अनुवाद ने यूरोप में व्यापक प्रभाव डाला।

• **पैरासेल्सस (Paracelsus):**

– उन्होंने रसायन आधारित औषधियों (Chemical Remedies) को चिकित्सा में स्थान दिलाया।

– शरीर को *रासायनिक संतुलन* के रूप में देखा गया, जो आधुनिक औषधि विज्ञान की नींव बनी।

• रोगों के कारणों की *प्राकृतिक व्याख्या* प्रारंभ हुई – दैविक या दुष्ट आत्मा की अवधारणा कमज़ोर पड़ी।

6. रसायन (Chemistry):

• मध्यकालीन कीमिया (Alchemy) से हटकर **प्रयोग आधारित रसायन** का विकास।

• **रॉबर्ट बॉयल (Robert Boyle):**

– आधुनिक रसायन विज्ञान के जनक माने जाते हैं।

– *Boyle's Law* (गैसों का दाब व आयतन संबंधी

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

नियम) प्रस्तुत किया।

– उन्होंने यह सिद्ध किया कि पदार्थों को उनके मूल तत्वों के आधार पर समझा जा सकता है।

7. चिकित्सा संस्थानों की स्थापना:

• पुनर्जागरण काल में *चिकित्सा विद्यालयों, अस्पतालों और शल्य प्रशिक्षण केंद्रों* की स्थापना हुई – जैसे *पैडुआ विश्वविद्यालय* (इटली)।

• इसमें चिकित्सकों को *प्रयोग और शवपरीक्षण आधारित प्रशिक्षण* दिया जाने लगा।

8. छापेखाने का आविष्कार (Printing Press):

• **जोहान्स गुटेनबर्ग** द्वारा 1455 में *movable type printing press* का विकास (जर्मनी)।

• *गुटेनबर्ग बाइबिल* – पहली मुद्रित पुस्तक मानी जाती है।

• **प्रभाव:**

– ग्रंथों की *सस्ती और व्यापक उपलब्धता*, साक्षरता में वृद्धि।

– *विचारों का तीव्र प्रसार*, चर्च की आलोचना व सुधार आंदोलनों को बल मिला।

9. जलयान निर्माण और नौवहन तकनीक (Shipbuilding & Navigation):

• *कैरेवेल* जैसे तेज़गति जलयानों का विकास – लंबी समुद्री यात्राएँ संभव हुईं।

• **नवाचार:**

– *चुंबकीय कंपास* (Compass)

– *एस्ट्रोलेब* (Astrolabe) – खगोल-आधारित दिशा ज्ञान

– *पोर्टोलान मैप्स* – समुद्री मानचित्रों का प्रयोग

• **परिणाम:** *भौगोलिक खोजों का युग*, उपनिवेशवाद की शुरुआत।

10. घड़ी और समय मापन (Clock & Timekeeping):

• *मैकेनिकल क्लॉक* का सुधार – अब समय को *घंटों व मिनटों* में सटीक मापा जा सकता था।

• यह **विज्ञान, व्यापार और समुद्री यात्रा** के लिए अनिवार्य उपकरण बना।

• *गैलीलियो* ने पेंडुलम सिद्धांत को समय मापन में लागू किया।

11. हथियार और युद्ध तकनीक (Military Technology):

• *गनपाउडर, बंदूकें और तोपों* का प्रयोग बढ़ा – सामंती योद्धाओं की शक्ति घटी।

• *राजाओं की सेनाएँ सशक्त* हुईं – **राष्ट्र राज्य का उदय**।

• इससे *राजनीतिक केंद्रीकरण* और *सामंती व्यवस्था का पतन* तेज़ हुआ।

12. अन्य उल्लेखनीय आविष्कार:

• **दूरबीन (Telescope):** गैलीलियो द्वारा खगोलीय निरीक्षण हेतु।

• **सूक्ष्मदर्शी (Microscope):** आंतरिक जैविक संरचनाओं के अध्ययन की शुरुआत।

• **छायाचित्रण की पूर्व तकनीकें (Camera Obscura):** चित्रण में यथार्थवाद लाने हेतु।

5. धर्म और धार्मिक सुधार (Religion & Reformation):

1. कैथोलिक चर्च की आलोचना:

• मध्यकाल तक *कैथोलिक चर्च* यूरोप में धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक सत्ता का केंद्र था।

• चर्च द्वारा *प्रायश्चित पत्र (Indulgences)* बेचना, भ्रष्टाचार, और धर्म के नाम पर भय फैलाना आम था।

• पुनर्जागरण के विचारकों ने *तर्क, विवेक और नैतिकता* के आधार पर इन रूढ़ियों को चुनौती दी।

2. प्रोटेस्टैंट सुधार आंदोलन की शुरुआत:

• **मार्टिन लूथर** ने 1517 में *95 Theses* जारी कर चर्च की नीतियों का विरोध किया।

• यह आंदोलन *प्रोटेस्टैंट सुधार (Protestant Reformation)* के रूप में फैला – चर्च से अलग *लूथरन, कैल्विनिस्ट, एंग्लिकन* जैसे समुदाय बने।

• बाइबिल का **जनभाषाओं में अनुवाद** हुआ, जिससे धर्म का व्यक्तिगत अध्ययन संभव हुआ।

• 3. धर्म और विवेक का संबंध:

• धर्म अब *संस्थागत नियंत्रण* के बजाय *व्यक्ति की अंतरात्मा और विवेक* से जुड़ा।

• *"Sola Fide, Sola Scriptura"* – केवल विश्वास और बाइबिल ही मोक्ष का मार्ग – यह नया सिद्धांत बना।

• **एरास्मस** जैसे विद्वानों ने *नैतिक सुधार, शिक्षा और विवेक आधारित धर्म* की वकालत की।

4. प्रतिक्रियावादी सुधार (Counter Reformation):

• *कैथोलिक चर्च* ने भी अपने अंदर सुधार किए – *Council of Trent (1545–63)* के माध्यम से।

• *जेसुइट संघ (Jesuits)* की स्थापना हुई, जिसने शिक्षा, अनुशासन और प्रचार पर बल दिया।

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

6. राजनीति (Politics)

1. धर्माधारित शासन की आलोचना:

• मध्यकाल में राजा की सत्ता को *ईश्वर-प्रदत्त* (Divine Right) माना जाता था और चर्च के आदेश सर्वोपरि थे।

• पुनर्जागरण विचारकों ने *धर्म और राजनीति को पृथक* कर तर्क, नैतिकता और यथार्थ पर आधारित शासन की वकालत की।

2. यथार्थवादी राजनीति – मैकियावेली का योगदान:

• **निकोलो मैकियावेली** की कृति *The Prince (1513)* ने सत्ता को व्यवहारिक, शक्ति-केंद्रित और नैतिकता से स्वतंत्र बताया।

• उन्होंने कहा, *"Ends justify the means"* – राज्य की स्थिरता के लिए चालाकी, युद्ध और छल भी उचित हो सकते हैं।

• यह **आधुनिक राजनीतिक विज्ञान का प्रारंभिक बिंदु** माना जाता है।

3. राष्ट्र-राज्य की अवधारणा (Rise of Nation-States):

• सम्राटों ने चर्च की शक्ति को चुनौती देकर **राजनीतिक केंद्रीकरण** की ओर कदम बढ़ाया।

• फ्रांस, इंग्लैंड, स्पेन जैसे देशों में *सत्ता राजा के हाथ में केंद्रित* हुई, जिससे *राष्ट्र-राज्य (Nation-State)* की आधुनिक अवधारणा विकसित हुई।

• इससे *राष्ट्रीय एकता, कानून व्यवस्था और कर संग्रह प्रणाली* का विकास हुआ।

7. शिक्षा और ज्ञान प्रणाली (Education & Knowledge)

1. Studia Humanitatis का विकास:

• शिक्षा का केंद्र *धर्मशास्त्र* से हटकर *मानवतावादी विषयों* पर आ गया।

• **Studia Humanitatis** में *इतिहास, व्याकरण, काव्य, नैतिकता और तर्कशास्त्र* को प्रमुखता दी गई।

• उद्देश्य था – *व्यक्ति को विवेकशील, नैतिक, और बहुआयामी सोच वाला नागरिक* बनाना।

2. संस्थागत विस्तार:

• पुनर्जागरण काल में **विश्वविद्यालयों** (जैसे ऑक्सफोर्ड, कैम्ब्रिज, पेरिस, बोलोग्ना) का पाठ्यक्रम मानविकी आधारित हुआ।

• **पुस्तकालयों और अकादमियों** (जैसे *Accademia Platonica, Florence*) की स्थापना से शोध और बौद्धिक संवाद को बढ़ावा मिला।

• *छापेखाने* के कारण पुस्तकों की उपलब्धता बढ़ी – जिससे ज्ञान का प्रसार तीव्र हुआ।

3. शिक्षा की नई दिशा:

• शिक्षा अब *धर्म-केन्द्रित उपदेश* नहीं बल्कि *तर्क, आलोचनात्मक सोच, व्यक्तिगत विवेक* पर आधारित बनी।

• शिक्षण में *प्राचीन ग्रीक-रोमन ग्रंथों* का पुनर्पठ हुआ – विशेष रूप से *प्लेटो, सिसरो, अरस्तू*।

• महिलाओं और व्यापारिक वर्ग तक शिक्षा का प्रसार धीरे-धीरे बढ़ने लगा।

8. संगीत व प्रदर्शन कला (Music & Performing Arts):

1. पॉलीफोनी (Polyphony) का विकास:

• *पॉलीफोनी* ऐसी संगीत तकनीक है जिसमें एक साथ कई सुर (melodic lines) स्वतंत्र रूप से चलते हैं।

• पुनर्जागरण काल में इसका प्रयोग *चर्च संगीत* से निकलकर *सांस्कृतिक आयोजनों* और *नाट्य प्रस्तुति* में होने लगा।

• प्रमुख संगीतज्ञ: **जोस्क्विन दे प्रे, पालेस्ट्रिना** – जिन्होंने जटिल लेकिन मधुर बहु-स्वर रचनाएँ दीं।

2. ऑपेरा और नाट्यसंगीत की शुरुआत:

• **ऑपेरा (Opera)** – संगीत, अभिनय, कविता और दृश्य प्रभावों का संयुक्त रूप – इटली में 16वीं शताब्दी के अंत में प्रारंभ हुआ।

• यह प्रदर्शन कला का एक नया युग था जिसमें *मानव भावना, पौराणिक कथाएँ और नाटकीयता* को मंचित किया गया।

• शुरुआती रचनाकार: *जैकपो पेरि* की "Dafne" – पहली मानी जाती है।

3. धर्मनिरपेक्ष संगीत की वृद्धि:

• पहले संगीत केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित था; अब *प्रेम, प्रकृति, वीरता, हास्य* जैसे विषयों पर रचनाएँ बनने लगीं।

• **लोकसंगीत**, **नृत्य संगीत** और **माध्यमवर्गीय सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ** भी समृद्ध हुईं।

• *ल्यूट, वायलिन, हर्पसीकोर्ड* जैसे वाद्य यंत्रों का प्रयोग बढ़ा।

1.12 समाज, अर्थव्यवस्था और शासन पर प्रभाव (Impact on Society, Economy & Governance)

1. धर्म सुधार (Reformation):

• **मार्टिन लूथर** के नेतृत्व में धार्मिक सुधार से *कैथोलिक चर्च की एकाधिकारिता* टूटी।

• *व्यक्ति की अंतरात्मा, विवेक और निजी आस्था* को महत्त्व मिला।

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

• धर्म अब चर्च नहीं, *जनभाषा में बाइबिल* और व्यक्तिगत व्याख्या पर आधारित हुआ।

2. राजनीति में परिवर्तन:

• *धर्मनिरपेक्ष राजनीति* की शुरुआत – सत्ता अब धर्म पर आधारित नहीं।

• **मैकियावेली** ने यथार्थवादी और सत्ता-केंद्रित राजनीति की अवधारणा दी।

• **राष्ट्र-राज्य (Nation-State)** की नींव रखी गई – केंद्रीकृत शासन, सीमाओं और संप्रभुता का स्पष्ट निर्धारण।

• **कूटनीति और स्थायी दूतावासों** का जन्म हुआ।

3. आर्थिक परिवर्तन:

• **व्यापार और शहरीकरण** में तीव्र वृद्धि – विशेषकर इटली, नीदरलैंड और इंग्लैंड में।

• **बैंकिंग प्रणाली** का विकास – *मेडिची बैंक* जैसे प्रतिष्ठानों की भूमिका बढ़ी।

• **पूंजीवाद की प्रारंभिक छवि** उभरने लगी – मुनाफा, निवेश और निजी स्वामित्व आधारित गतिविधियाँ।

• *व्यापारिक गिल्ड, बीमा और डबल एंट्री बहीखाता प्रणाली* का प्रयोग प्रारंभ।

4. महिलाओं की स्थिति:

• यद्यपि समाज *पितृसत्तात्मक* बना रहा, लेकिन कुछ *शिक्षित व कलाप्रेमी महिलाएँ* सामने आईं।

• **क्रिस्टीन डी पिज़ान** – यूरोप की पहली पेशेवर महिला लेखिका।

• **इसाबेला डी'एस्ते** – कला और विद्वता की संरक्षिका, 'फर्स्ट लेडी ऑफ रिनेसां' मानी जाती हैं।

• फिर भी **सामान्य महिलाओं की स्थिति में सीमित सुधार** ही हुआ।

5. उपनिवेशवाद की शुरुआत:

• **कोलंबस (1492)**, वास्को-दा-गामा, मैगलन जैसे यात्रियों की खोजों से *"नई दुनिया"* के द्वार खुले।

• यूरोपीय शक्तियाँ – *स्पेन, पुर्तगाल, इंग्लैंड, फ्रांस* – उपनिवेश स्थापित करने लगीं।

• इससे **संसाधनों की लूट, सांस्कृतिक टकराव, और दास व्यापार** जैसी समस्याओं की शुरुआत भी हुई।

1.13 प्रमुख कथन

1. "Man is the measure of all things."

– *Protagoras* (ग्रीक दार्शनिक; पुनर्जागरण मानवतावाद का आदर्श वाक्य)

→ इसका आशय है कि **मनुष्य स्वयं मूल्यांकन का केंद्र है**, न कि ईश्वर या कोई बाह्य सत्ता।

2. "Cogito, ergo sum" – "I think, therefore I am."

– *René Descartes*

→ पुनर्जागरण की **स्वतंत्र विचार और विवेक आधारित पहचान** को दर्शाता है।

3. "The end justifies the means."

– *Niccolò Machiavelli, The Prince*

→ यथार्थवादी राजनीति की विचारधारा, जहाँ *राजनीतिक सफलता नैतिकता से अधिक महत्त्वपूर्ण* है।

4. "Beauty is the purgation of superfluities."

– *Michelangelo*

→ पुनर्जागरण कला में **सादगी, संतुलन और आंतरिक सौंदर्य** की अभिव्यक्ति का समर्थन।

5. "A man can do all things if he will."

– पुनर्जागरण मानव की *असीम क्षमता और संभावनाओं* में विश्वास को दर्शाता है।

→ यह कथन *"Renaissance Man"* की धारणा को बल देता है – जैसे *दा विंची*।

6. "Let us return to the sources" – "Ad fontes"

– *पुनर्जागरण विद्वानों का आदर्श वाक्य*

→ *ग्रीक-रोमन मूल स्रोतों* की ओर लौटने की प्रवृत्ति का संकेत।

7. "It is better to be feared than loved, if you cannot be both."

– *Machiavelli*

→ पुनर्जागरण काल की *राजनीतिक व्यावहारिकता* और सत्ता नीति का सार।

8. जैकब बुर्खार्ट (Jacob Burckhardt):

- *"The Renaissance was the discovery of the world and the discovery of man."*
  ("पुनर्जागरण संसार और मनुष्य की खोज थी।")
  → यह कथन पुनर्जागरण की *मानव-केंद्रित और भौतिक संसार के प्रति जागरूक दृष्टि* को दर्शाता है।

9. विलियम डुरैंट (Will Durant):

- *"The Renaissance was a revolt of the individual against the authority of the Church."*
  ("पुनर्जागरण व्यक्ति का चर्च की सत्ता के विरुद्ध विद्रोह था।")
- → यह *धर्मनिरपेक्षता और व्यक्तिवाद* के उभार को रेखांकित करता है।

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

10. पीटर बर्क (Peter Burke):

"Renaissance was not a sudden break with the past but a complex process of transformation."

("पुनर्जागरण अतीत से अचानक विच्छेद नहीं था, बल्कि परिवर्तन की जटिल प्रक्रिया थी।")

→ यह कथन इसे *क्रमिक और विविध आयामी आंदोलन* के रूप में प्रस्तुत करता है।

11. जोहान हेयज़िंगा (Johan Huizinga):

"The Renaissance is the collective name for a series of movements that revived classical antiquity."

("पुनर्जागरण उन विविध आंदोलनों का सामूहिक नाम है जिन्होंने शास्त्रीय प्राचीनता को पुनर्जीवित किया।")

- → यह *ग्रीक-रोमन परंपरा के पुनरुद्धार* को प्रमुख बनाता है।

12. माइकल बॉक्सटन:

"It was the awakening of man from a long intellectual sleep."

("यह मनुष्य की लम्बी बौद्धिक निद्रा से जागृति थी।")

→ यह *बौद्धिक स्वतंत्रता और तर्कशक्ति के पुनरुत्थान* की ओर संकेत करता है।

1.14 शब्दावली

- **Renaissance:** पुनर्जन्म या सांस्कृतिक पुनरुत्थान।
- **Humanism:** मानव केंद्रित विचारधारा, जिसमें व्यक्तिगत अनुभव, विवेक और प्रतिभा को महत्व दिया जाता है।
- **Vernacular Literature:** जनभाषाओं में साहित्य रचना, जिससे व्यापक जनसमूह तक विचार पहुँचे।
- **Linear Perspective:** चित्रकला में गहराई और अनुपात का चित्रण।
- **Chiaroscuro:** चित्रों में प्रकाश और छाया के संतुलन की तकनीक।
- **Scientific Revolution:** पुनर्जागरण की कोख से जन्मा वैज्ञानिक खोजों का युग।
- **Reformation:** धार्मिक सुधार आंदोलन, जिससे कैथोलिक चर्च की शक्ति टूटी और प्रोटेस्टैंट संप्रदाय बना।
- **Polymath:** विविध क्षेत्रों में प्रवीण व्यक्ति (जैसे लियोनार्डो)।
- **Classical Antiquity:** यूनानी–रोमन काल की कला-संस्कृति जो पुनर्जागरण में पुनः जीवित हुई।
- **Ad fontes:** "मूल स्रोतों की ओर" – प्राचीन ग्रंथों का पुनरवलोकन।

Ch 2 - धार्मिक सुधार आंदोलन (Reformation)

2.1 अर्थ (Meaning)
2.2 परिचय एवं उत्पत्ति (Introduction & Origin)
2.3 प्रमुख कारण (Major Causes of Reformation)
2.4 Reformation का स्वरूप व विशेषताएँ (Nature & Features)
2.5 क्षेत्रीय रूप एवं प्रमुख सुधारक (Regional Forms & Leading Reformers)
2.6 Reformation की प्रमुख घटनाएँ (Major Events of the Reformation)
2.7 प्रमुख प्रभाव (Major Impacts of Reformation)
2.8 Reformation का योगदान (Contributions of the Reformation)
2.9 प्रति-धर्म सुधार आंदोलन (Counter-Reformation)
2.10 इंग्लिश चर्च का विकास (Evolution of the Church of England)
2.11 कथन (Quotes)
2.12 शब्दावली

2.1 अर्थ (Meaning)

- Reformation 16वीं शताब्दी में यूरोप में घटित एक धार्मिक, बौद्धिक और सामाजिक आंदोलन था, जिसने रोमन कैथोलिक चर्च की धार्मिक सत्ता, भ्रष्टाचार और रूढ़ियों को चुनौती दी। इसका उद्देश्य धर्म को शुद्ध करना, पवित्र ग्रंथों की मूल शिक्षा की ओर लौटना और चर्च में सुधार लाना था।

2.2 परिचय एवं उत्पत्ति (Introduction & Origin)

- इसकी औपचारिक शुरुआत **1517 ई.** में जर्मनी के विटनबर्ग में **मार्टिन लूथर** द्वारा '**95 आपत्तियाँ (95 Theses)**' चर्च के द्वार पर टाँगने से मानी जाती है। इन आपत्तियों में चर्च द्वारा '**Indulgences**' (पापमुक्ति पत्रों) की बिक्री की आलोचना की गई थी।
- यह आंदोलन पुनर्जागरण मानवतावाद, व्यक्तिगत विवेक, और छापेखाने (Printing Press) जैसे

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

नवाचारों से प्रभावित था, जिनके कारण धार्मिक विचारों का तीव्र प्रसार संभव हुआ।

• Reformation का प्रारंभिक केंद्र **जर्मनी** था, किंतु शीघ्र ही यह स्विट्ज़रलैंड, फ्रांस, इंग्लैंड, नीदरलैंड और स्कैंडिनेवियाई देशों तक फैल गया, जिसने यूरोप के धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक ढाँचे को पूरी तरह बदल दिया।

2.3 प्रमुख कारण (Major Causes of Reformation)

1. धार्मिक कारण (Religious Causes):

• रोमन कैथोलिक चर्च 15वीं-16वीं शताब्दी तक अत्यधिक भ्रष्ट हो चुका था।

• *Indulgences* (पाप मुक्ति पत्र) को धन के बदले बेचा जाता था, जिससे पाप क्षमा का व्यापार चल रहा था।

• पोप व पादरी विलासिता में लिप्त रहते थे तथा बाइबिल की व्याख्या केवल लैटिन में होती थी, जिससे आम जन धर्म से दूर हो गए।

• धार्मिक पदधारियों की नियुक्तियाँ राजनीतिक संबंधों पर आधारित थीं, न कि नैतिकता या विद्वता पर।

→ **मार्टिन लूथर** ने 1517 में इसी भ्रष्टाचार के विरुद्ध '95 Theses' जारी की।

2. राजनीतिक कारण (Political Causes):

• यूरोप में उभरते राष्ट्र-राज्य अब पोप की शक्ति को चुनौती देने लगे थे।

• राजा और सामंत चाहते थे कि धार्मिक मामलों पर उनका नियंत्रण हो, न कि रोम के पोप का।

• *Holy Roman Empire* में जर्मन राजकुमार लूथर का समर्थन इसलिए कर रहे थे क्योंकि वे धार्मिक सुधार के बहाने पोप के प्रभाव से मुक्ति चाहते थे।

→ इससे *राज्य बनाम चर्च* का संघर्ष तीव्र हुआ।

3. आर्थिक कारण (Economic Causes):

• चर्च के पास विशाल भूमि संपत्ति, कर संग्रहण अधिकार और दान का धन था।

• स्थानीय राजा और सामंत चर्च की संपत्ति और आमदनी पर अधिकार चाहते थे।

• *Tithes* (चर्च कर) और *Peter's Pence* (रोम को कर) से जनमानस असंतुष्ट था।

→ Reformation ने राजाओं को चर्च संपत्ति जब्त करने का अवसर दिया।

4. सांस्कृतिक कारण (Cultural Causes):

• पुनर्जागरण (Renaissance) ने **मानवतावाद, विवेकशीलता और शास्त्रों की मौलिक व्याख्या** को बढ़ावा दिया।

• **Erasmus**, **Petrarch** जैसे विद्वानों ने चर्च की रूढ़ियों की आलोचना की।

• आम जनता शिक्षा, आत्मज्ञान और व्यक्तिगत विवेक की ओर आकृष्ट हुई।

→ धर्म अब व्यक्तिगत अनुभव बनता जा रहा था, संस्थागत आदेश नहीं।

5. प्रौद्योगिकीय कारण (Technological Causes):

• **Gutenberg** द्वारा 1440 में *Printing Press* का आविष्कार Reformation का सबसे शक्तिशाली औजार बना।

• बाइबिल और लूथर की "95 Theses" जैसी कृतियाँ जनभाषा में छपीं और व्यापक प्रसार हुआ।

• लोगों ने पहली बार बाइबिल को स्वयं पढ़ना व समझना प्रारंभ किया।

→ इससे धार्मिक विचारों का विकेन्द्रीकरण और जन-जागरण संभव हुआ।

2.4 Reformation का स्वरूप व विशेषताएँ (Nature & Features)

1. पवित्र बाइबिल को ईसाई धर्म का एकमात्र स्त्रोत मानना (Sola Scriptura):

• Reformation आंदोलन के अनुसार ईसाई धर्म की सभी शिक्षाएँ केवल *बाइबिल* पर आधारित होनी चाहिए, न कि पोप या चर्च द्वारा घोषित सिद्धांतों पर।

• *Luther, Calvin* जैसे सुधारकों ने कहा कि बाइबिल को आम लोग अपनी भाषा में पढ़ सकते हैं और स्वयं समझ सकते हैं।

2. चर्च की मध्यस्थता की अस्वीकृति (Rejection of Ecclesiastical Mediation):

• रोमन चर्च यह मानता था कि पोप, कार्डिनल व पादरी ही ईश्वर से संवाद के माध्यम हैं।

• Reformation ने इस विचार को खारिज करते हुए यह प्रतिपादित किया कि हर व्यक्ति बिना चर्च की मध्यस्थता के सीधे ईश्वर से संबंध स्थापित कर सकता है।

→ इससे "व्यक्तिगत धार्मिक अनुभव" को बल मिला।

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

3. व्यक्तिगत विवेक और धार्मिक स्वतंत्रता पर बल (Emphasis on Individual Conscience):

• मार्टिन लूथर का प्रसिद्ध कथन – *"My conscience is captive to the Word of God"* – इस आंदोलन की आत्मा था।

• यह मान्यता स्थापित हुई कि व्यक्ति स्वयं अपने विवेक के आधार पर धार्मिक निर्णय ले सकता है, चाहे वह पोप की मान्यताओं के विपरीत ही क्यों न हो।

→ आधुनिक "धर्म-स्वातंत्र्य" का आधार यही सिद्धांत बना।

4. नई प्रोटेस्टेंट शाखाओं का उदय (Rise of Protestant Denominations):

• Reformation के कारण कई प्रोटेस्टेंट शाखाएँ अस्तित्व में आईं:

- **Lutheranism** (जर्मनी में, मार्टिन लूथर द्वारा)
- **Calvinism** (स्विट्ज़रलैंड में, जॉन कैल्विन द्वारा – पूर्वनिर्धारण सिद्धांत)
- **Anglicanism** (इंग्लैंड में, हेनरी VIII द्वारा पोप से संबंधविच्छेद के पश्चात)

• इन शाखाओं ने अलग-अलग रूपों में चर्च की संरचना, पूजा-पद्धति और सिद्धांतों को पुनर्निर्धारित किया।

5. व्यापक सामाजिक, राजनीतिक और शैक्षिक प्रभाव (Wider Social, Political and Educational Transformation):

• धर्म अब केवल अध्यात्म तक सीमित नहीं रहा – यह राजनीति और समाज का पुनर्गठन करने वाला तत्व बन गया।

• शिक्षा में सुधार हुआ – बाइबिल पढ़ने हेतु साक्षरता अभियान बढ़े।

• राज्य और चर्च के संबंधों में विभाजन की भावना आई – राष्ट्रवाद को बल मिला।

→ यह आंदोलन यूरोप में *आधुनिकता, विवेकवाद और धर्मनिरपेक्षता* के बीज बो गया।

2.5 क्षेत्रीय रूप एवं प्रमुख सुधारक (Regional Forms & Leading Reformers)

1. जर्मनी – मार्टिन लूथर (Lutheranism):

• **Reformation** की शुरुआत 1517 ई. में जर्मनी के **मार्टिन लूथर** द्वारा **'95 Theses'** विटनबर्ग चर्च के द्वार पर टाँगने से हुई।

• उन्होंने **'Sola Fide' (केवल विश्वास)** और **'Sola Scriptura' (केवल बाइबिल)** के सिद्धांत प्रतिपादित किए।

• लूथरन चर्च की स्थापना हुई, जहाँ बाइबिल को जर्मन भाषा में अनुवादित किया गया और चर्च की मध्यस्थता अस्वीकार की गई।

• जर्मनी के कई राजकुमारों ने पोप के विरुद्ध लूथर का समर्थन किया, जिससे *Holy Roman Empire* में धार्मिक युद्ध आरंभ हुए।

2. स्विट्ज़रलैंड – हुल्द्रिख ज़्विंगली व जॉन कैल्विन (Calvinism):

• **हुल्द्रिख ज़्विंगली** (Zurich) ने स्वतंत्र रूप से लूथर जैसे विचार व्यक्त किए – मूर्तिपूजा, प्राचीन परंपराओं का विरोध।

• **जॉन कैल्विन** (Geneva) ने *Calvinism* की स्थापना की जो **'Predestination'** (पूर्वनिर्धारण) के सिद्धांत पर आधारित था – ईश्वर ने पहले से ही तय कर लिया है कि कौन उद्धार प्राप्त करेगा।

• जिनेवा को "प्रोटेस्टेंट रोम" कहा गया।

• Calvinism ने धार्मिक अनुशासन, नैतिक कठोरता और चुने गए समुदाय की अवधारणा को बढ़ावा दिया।

3. फ्रांस – हुगोनॉट आंदोलन (Huguenots):

• फ्रांस में Calvinism के अनुयायियों को **Huguenots** कहा गया।

• कैथोलिक राजसत्ता के विरुद्ध Huguenots ने धार्मिक स्वतंत्रता की माँग की, जिससे **1562–98** के बीच भीषण **धार्मिक गृहयुद्ध** हुए।

• *1572 का St. Bartholomew's Day Massacre* में हजारों हुगोनॉट्स मारे गए।

• *1598 में नांतेस की संधि* (Edict of Nantes) द्वारा उन्हें सीमित धार्मिक स्वतंत्रता मिली।

4. इंग्लैंड – हेनरी अष्टम (Anglicanism):

• इंग्लैंड में Reformation की प्रकृति धार्मिक की अपेक्षा **राजनीतिक** थी।

• राजा **हेनरी VIII** ने पोप द्वारा तलाक न दिए जाने पर कैथोलिक चर्च से संबंध तोड़ दिया।

• 1534 के **Act of Supremacy** द्वारा **अंग्रेज़ी चर्च (Anglican Church)** की स्थापना हुई, जिसके प्रमुख राजा स्वयं बने।

• धार्मिक दृष्टिकोण से यह चर्च कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट का मिश्रण था।

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

5. नीदरलैंड व स्कॉटलैंड – जॉन नॉक्स (Presbyterianism):

- **जॉन नॉक्स** ने Calvinism को स्कॉटलैंड में प्रचारित किया और **Presbyterian Church** की स्थापना की।
- Presbyterianism चर्च के पदानुक्रम को अस्वीकार करता है; इसमें *elders (प्रेसबाइटर्स)* द्वारा धर्म संचालन होता है।
- नीदरलैंड में Calvinism का प्रभाव गहराया और वहाँ भी कैथोलिक शासन के विरुद्ध संघर्ष हुआ, जो आगे चलकर *Dutch Revolt* (1568) में परिवर्तित हुआ।

2.6 Reformation की प्रमुख घटनाएँ (Major Events of the Reformation)

- **1517 – 95 Theses का प्रकाशन (Martin Luther's Protest):**
  - 31 अक्टूबर 1517 को **मार्टिन लूथर** ने विटनबर्ग (जर्मनी) के चर्च पर **'95 आपत्तियाँ' (95 Theses)** टांगीं।
  - यह पोप द्वारा *Indulgences* (पाप मुक्ति पत्रों) की बिक्री के विरुद्ध सीधा विरोध था।
  - → इसे Reformation की औपचारिक शुरुआत माना जाता है।
- **1521 – Diet of Worms:**
  - पवित्र रोमन सम्राट **चार्ल्स पंचम** ने लूथर को **वर्म्स की सभा (Diet of Worms)** में बुलाया।
  - लूथर ने अपनी बातों को वापस लेने से इनकार किया – "Here I stand, I can do no other."
  - लूथर को **विधर्मी** घोषित किया गया, किंतु *Frederick of Saxony* ने उन्हें आश्रय दिया।
- **1529 – Protestation at Speyer:**
  - जर्मन प्रिंसों ने कैथोलिक बहुमत के निर्णय के विरुद्ध **'Protest'** दर्ज किया।
  - इसी घटना से "**Protestant**" शब्द प्रचलन में आया।
- **1530 – Augsburg Confession:**
  - यह **Lutheran Faith** का औपचारिक घोषणा-पत्र था, जिसे *Philip Melanchthon* ने तैयार किया।
  - यह दस्तावेज Lutheranism को व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करता है।
- **1534 – Act of Supremacy (England):**
  - इंग्लैंड के **हेनरी अष्टम** ने पोप के अधिकार को समाप्त कर स्वयं को चर्च का प्रमुख घोषित किया।
  - **अंग्लिकन चर्च (Anglican Church)** की स्थापना हुई।
- **1545–1563 – Council of Trent (Counter-Reformation):**
  - पोप पॉल III द्वारा बुलाया गया यह **कैथोलिक महासभा** था, जिसने चर्च की आंतरिक सुधार प्रक्रिया शुरू की।
  - कैथोलिक सिद्धांतों को दोबारा परिभाषित किया गया, और **Jesuit Order** की स्थापना हुई।
- **1555 – Peace of Augsburg:**
  - जर्मनी में कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट राज्यों के बीच **धार्मिक स्वतंत्रता** की संधि।
  - सिद्धांत: *"Cuius regio, eius religio"* – राजा का धर्म ही प्रजा का धर्म होगा।
  - → इससे लूथरन राज्यों को वैधता मिली।
- **1572 – St. Bartholomew's Day Massacre (France):**
  - पेरिस में **हुगोनॉट (Huguenots)** – फ्रांसीसी प्रोटेस्टेंट – पर भीषण हिंसा हुई।
  - हजारों की संख्या में Calvinists की हत्या हुई।
  - → यह कैथोलिक-प्रोटेस्टेंट संघर्ष का चरम था।
- **1598 – Edict of Nantes:**
  - फ्रांस के राजा **हेनरी चतुर्थ** ने यह आदेश जारी किया, जिससे Huguenots को धार्मिक स्वतंत्रता मिली।
  - → इससे फ्रांस में कुछ हद तक धार्मिक शांति स्थापित हुई।
- **1618–1648 – Thirty Years' War (धार्मिक युद्ध):**
  - यह युद्ध Holy Roman Empire में **कैथोलिक बनाम प्रोटेस्टेंट** शक्तियों के बीच लड़ा गया।
  - **1648 में वेस्टफालिया की संधि (Treaty of Westphalia)** द्वारा समाप्त हुआ।
  - → इसने आधुनिक राष्ट्र-राज्य की अवधारणा को जन्म दिया।

2.7 प्रमुख प्रभाव (Major Impacts of Reformation)

1. कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट समुदायों का उदय (Rise of Religious Pluralism):

- Reformation के परिणामस्वरूप **Lutheranism, Calvinism, Anglicanism** जैसे *प्रोटेस्टेंट संप्रदाय* अस्तित्व में आए।
- रोमन कैथोलिक चर्च की **धार्मिक एकाधिकारिता समाप्त** हुई और **यूरोप धार्मिक द्वंद्वात्मकता** में विभाजित हुआ।

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

• इससे धार्मिक सहिष्णुता की अवधारणा और बहुलतावादी धर्म दृष्टिकोण को जन्म मिला।

2. राजनीतिक राष्ट्रवाद और संप्रभुता को बल (Rise of Political Nationalism & Sovereignty):

• Reformation के कारण **चर्च और राज्य का पृथक्करण** प्रारंभ हुआ।

• राजाओं और राजकीय शक्तियों ने पोप के बजाय स्वयं को धार्मिक प्रमुख घोषित किया (जैसे हेनरी अष्टम – Anglicanism)।

• **Peace of Augsburg (1555)** और **Treaty of Westphalia (1648)** ने "राजा का धर्म ही राज्य का धर्म होगा" जैसी *राजनीतिक-धार्मिक संप्रभुता* को वैधता दी।

3. शिक्षा और छापेखाने के प्रसार को प्रोत्साहन (Spread of Literacy & Printing Press):

• Reformation के नेताओं ने बाइबिल को स्थानीय भाषाओं में अनुवादित किया (लूथर ने जर्मन में)।

• जनता को बाइबिल पढ़ने हेतु **साक्षर बनाने** पर बल दिया गया – शिक्षा जन आंदोलन बन गई।

• **Gutenberg के Printing Press** के माध्यम से धार्मिक ग्रंथों और पर्चों का तीव्र प्रचार हुआ, जिससे *ज्ञान-प्रसार क्रांति* आई।

4. कैथोलिक प्रतिक्रिया – Counter Reformation (Jesuits & Council of Trent):

• Reformation के विरुद्ध रोमन चर्च ने *Counter Reformation* की शुरुआत की:

- **Council of Trent (1545–63)** में कैथोलिक सिद्धांतों को पुनर्परिभाषित किया गया।
- **Jesuit Order (1534)** की स्थापना *Ignatius of Loyola* द्वारा की गई – जिसने शिक्षा और अनुशासन के माध्यम से कैथोलिक धर्म को पुनर्स्थापित किया।
  → इसने कैथोलिक धर्म में सुधार और पुनर्जीवन को गति दी।

5. धार्मिक युद्धों और हिंसा की वृद्धि (Religious Wars and Violence):

- • Reformation के पश्चात यूरोप में **धार्मिक असहिष्णुता** और युद्धों का दौर चला:
  - **St. Bartholomew's Day Massacre (1572)** – फ्रांस में Huguenots की हत्या।
  - **Thirty Years' War (1618–48)** – Holy Roman Empire में कैथोलिक–प्रोटेस्टेंट युद्ध, जिसने यूरोप की आधी जनसंख्या को प्रभावित किया।
    → 1648 की *Treaty of Westphalia* से युद्ध का अंत और संप्रभु राष्ट्रों की नींव पड़ी।

2.8 Reformation का योगदान (Contributions of the Reformation)

1. धार्मिक विचारों में विवेक, तर्क और पाठ आधारित सुधार (Reason & Scripture-centric Reform):

• Reformation ने अंधविश्वास, धर्मसत्ता और पुरानी प्रथाओं की आलोचना करते हुए **तर्कशीलता (rationality)** और **पवित्र ग्रंथों (बाइबिल)** को धर्म का आधार बनाया।

• धर्म केवल विश्वास नहीं, बल्कि **विवेचनात्मक अध्ययन और नैतिक आचरण** का विषय बना।

2. धर्म की व्याख्या का अधिकार आम व्यक्ति को प्राप्त (Empowerment of Individual Religious Understanding):

• चर्च की मध्यस्थता के बिना आम व्यक्ति को **बाइबिल पढ़ने और समझने** का अधिकार मिला।

• धार्मिक ज्ञान अब लैटिन तक सीमित नहीं रहा – बाइबिल का अनुवाद जर्मन, अंग्रेज़ी, फ्रेंच आदि भाषाओं में हुआ।
→ इससे **धार्मिक लोकतंत्रीकरण (Religious Democratization)** का आरंभ हुआ।

3. आधुनिक लोकतंत्र, व्यक्तिवाद और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के लिए मार्ग प्रशस्त (Foundation for Democracy & Modernity):

• Reformation ने व्यक्ति के **अधिकार, विवेक और स्वतंत्रता** को महत्व दिया।

• यह दृष्टिकोण आगे चलकर **यूरोपीय लोकतंत्र, मानवाधिकार और आधुनिक राज्य की अवधारणाओं** का आधार बना।

• वैज्ञानिक दृष्टिकोण (Scientific Temper) को पोषित किया, जो Enlightenment की भूमिका में सहायक बना।

4. चर्च और राज्य के बीच अलगाव की अवधारणा का विकास (Separation of Church and State):

• राजाओं और राज्यों ने धार्मिक मामलों में **स्वायत्तता** का दावा किया – जैसे इंग्लैंड में Anglicanism।

• इससे **धर्मनिरपेक्ष शासन व्यवस्था** की नींव पड़ी, जहाँ धर्म व्यक्तिगत विषय रहा और राज्य की सत्ता

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

स्वतंत्र बनी।

→ यह आधुनिक राष्ट्र-राज्य की संरचना का प्रारंभिक चरण था।

5. शिक्षा, कला और संगीत में धर्मनिरपेक्षता का आरंभ (Secularization of Intellectual and Cultural Fields):

• बाइबिल पढ़ने हेतु **जन साक्षरता** को बढ़ावा मिला – विद्यालयों और विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई।

• कला और संगीत केवल धार्मिक प्रचार तक सीमित नहीं रहे, बल्कि **सामाजिक और नैतिक विषयों** से जुड़े।

• **जोहान सेबेस्टियन बाख (Bach)** जैसे संगीतकारों ने प्रोटेस्टेंट भावना से प्रेरित धर्मनिरपेक्ष संगीत रचनाएँ कीं।

2.9 प्रति-धर्म सुधार आंदोलन (Counter-Reformation)

परिभाषा:

- प्रति धर्म सुधार आंदोलन 16वीं शताब्दी में रोमन कैथोलिक चर्च द्वारा आरंभ किया गया एक *आत्म-सुधार* आंदोलन था, जिसका उद्देश्य **प्रोटेस्टेंट Reformation के प्रभाव को रोकना**, चर्च में सुधार करना, और विश्वासियों को वापस चर्च से जोड़ना था।
- **मुख्य उद्देश्य:**
  - कैथोलिक सिद्धांतों को दोबारा परिभाषित करना।
  - चर्च की नैतिक छवि को पुनर्स्थापित करना।
  - प्रोटेस्टेंट धर्मों का खंडन करना।
  - विश्व स्तर पर मिशनरी कार्यों का विस्तार करना।
- **प्रमुख घटक:**

1.Council of Trent (1545–1563):

पोप पॉल तृतीय द्वारा बुलाया गया कैथोलिक महासभा।

• *बाइबिल और परंपरा दोनों को धार्मिक स्त्रोत* माना गया।

• *Indulgences की बिक्री* पर नियंत्रण, लेकिन उसका सिद्धांत समाप्त नहीं किया गया।

• पादरियों के लिए **नैतिक आचरण और प्रशिक्षण** अनिवार्य हुआ।

• कैथोलिक चर्च की शिक्षाओं को व्यवस्थित व प्रमाणिक रूप दिया गया।

2. Jesuit संघ (Society of Jesus):

• 1534 में *Ignatius of Loyola* द्वारा स्थापित।

• Counter-Reformation का सबसे प्रभावी संगठन।

• शिक्षा, मिशनरी कार्य और अनुशासन के माध्यम से प्रोटेस्टेंट धर्म का विरोध किया।

• भारत (फ्रांसिस जेवियर), जापान, चीन आदि में धर्म प्रचार।

3. Roman Inquisition (1542):

• धार्मिक न्यायाधिकरण प्रणाली जिसने **विधर्मी विचारों और पुस्तकों पर प्रतिबंध** लगाया।

• बाइबिल और वैज्ञानिक विचारों की निगरानी हुई (जैसे गैलीलियो पर मुकदमा)।

• **Index Librorum Prohibitorum** नामक प्रतिबंधित पुस्तकों की सूची प्रकाशित की गई।

प्रमुख प्रभाव:

• **कैथोलिक चर्च की नैतिक और संगठनात्मक मजबूती** में वृद्धि हुई।

• कई क्षेत्रों (जैसे इटली, स्पेन, पोलैंड) में प्रोटेस्टेंट प्रभाव कम हुआ।

• **शिक्षा, कला और स्थापत्य** में नवोत्थान (Baroque कला शैली का विकास)।

• धार्मिक टकरावों और **धार्मिक युद्धों** की तीव्रता बढ़ी (जैसे *Thirty Years' War*)।

2.10 इंग्लिश चर्च का विकास (Evolution of the Church of England)

- **1527–1533: तलाक का विवाद**
  - राजा **हेनरी अष्टम** अपनी पत्नी **कैथरीन ऑफ एरागॉन** से तलाक चाहते थे ताकि ऐनी बोलिन से विवाह कर सकें।
  - पोप क्लेमेंट सप्तम ने तलाक की अनुमति देने से मना कर दिया।

  → यह घटना इंग्लैंड और रोमन कैथोलिक चर्च के बीच टकराव का आधार बनी।
- **1534: *Act of Supremacy***
  - ब्रिटिश संसद ने **Act of Supremacy** पारित किया, जिससे हेनरी अष्टम को इंग्लैंड की **"Church of England" का सर्वोच्च प्रमुख** घोषित किया गया।
  - पोप की सत्ता समाप्त कर दी गई; इंग्लिश चर्च की स्थापना हुई।

  → यह इंग्लैंड के *राजनीतिक Reformation* की औपचारिक शुरुआत थी।

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

- **1536–1540: मठों का विघटन (Dissolution of the Monasteries)**
  - हेनरी अष्टम ने **कैथोलिक मठों की संपत्तियाँ जब्त** कर लीं और चर्च की संरचना को राज्य के अधीन कर दिया।
  - चर्च की भूमि राज्य के अधीन आ गई, जिससे आर्थिक शक्ति भी मजबूत हुई।
- **1549: *Book of Common Prayer* का प्रकाशन**
  - *Thomas Cranmer* द्वारा रचित यह पुस्तक इंग्लिश चर्च की **आधिकारिक प्रार्थना विधियों** का संकलन थी।
  - → इससे चर्च में प्रोटेस्टेंट चरित्र का आरंभ हुआ।
- **1553–1558: कैथोलिक प्रतिक्रिया (Queen Mary I का शासन)**
  - मैरी प्रथम (Bloody Mary) ने पोप के साथ संबंध पुनः स्थापित किए और **प्रोटेस्टेंटों का दमन** किया।
  - कई प्रोटेस्टेंट सुधारक देश छोड़कर यूरोप भाग गए।
- **1559: द्वितीय *Act of Supremacy* (Elizabeth I के अधीन)**
  - एलिज़ाबेथ प्रथम ने फिर से **चर्च को राज्य के अधीन किया**, पोप की सत्ता को अस्वीकार किया।
  - **Elizabethan Religious Settlement** के तहत *Anglican Church* को स्थायित्व मिला – **प्रोटेस्टेंट सिद्धांत + कैथोलिक परंपरा**।
- **1571: *Thirty-Nine Articles* का अनुमोदन**
  - ये **चर्च ऑफ इंग्लैंड के धार्मिक सिद्धांतों** का स्थायी घोषणापत्र बने।
  - बाइबिल की सर्वोच्चता, संस्कारों की सीमित मान्यता और पोप की अस्वीकृति घोषित हुई।
- **1649–1660: इंग्लैंड का गणराज्य काल (Puritan नियंत्रण)**
  - इंग्लिश सिविल वॉर के बाद चर्च का प्रोटेस्टेंट पक्ष और भी उग्र हुआ।
  - कुछ समय के लिए इंग्लिश चर्च का नियंत्रण **प्यूरिटनों** के हाथ में चला गया।
- **1689: *Act of Toleration***
  - इससे इंग्लैंड में कुछ हद तक **धार्मिक सहिष्णुता** लागू हुई और चर्च ऑफ इंग्लैंड को एक अधिक उदार प्रोटेस्टेंट संस्था के रूप में स्थिरता मिली।

2.11 कथन (Quotes)

1. मार्टिन लूथर (Martin Luther):

- *"Here I stand, I can do no other. God help me. Amen."*
  → यह कथन **1521 के Diet of Worms** में लूथर द्वारा कहा गया था जब उन्होंने अपने विचारों से पीछे हटने से इनकार किया।
- *"A simple layman armed with Scripture is greater than the mightiest pope without it."*
  → यह कथन चर्च की सत्ता के विरुद्ध **बाइबिल की सर्वोच्चता** को प्रतिपादित करता है।

2. जॉन कैल्विन (John Calvin):

- *"We are not our own: let not our reason nor our will sway our plans and deeds. We are God's."*
  → यह कथन **पूर्वनिर्धारण (Predestination)** और ईश्वर की सर्वोच्चता को दर्शाता है।
- *"True religion consists of faith united with repentance."*
  → यह धार्मिक सुधार की नैतिक और आध्यात्मिक बुनियाद का संकेत करता है।

3. हेनरी अष्टम (Henry VIII):

- *"No foreign power has authority over the English crown."*
  → यह कथन **अंग्रेज़ी चर्च की स्थापना (Anglicanism)** के पीछे की राजनीतिक दृष्टि को दर्शाता है।

4. डेसिडेरियस एरास्मस (Desiderius Erasmus):

- *"I laid the egg, Luther hatched it."*
  → यह प्रसिद्ध कथन **Erasmus** द्वारा दिया गया था, जो यह संकेत करता है कि **मानवतावादी विचारों** ने Reformation की नींव तैयार की थी।

5. Council of Trent (Counter-Reformation):

- *"Let anyone who says Scripture alone is sufficient for salvation be anathema."*
  → यह कथन **कैथोलिक प्रतिक्रिया** में बाइबिल की व्याख्या पर चर्च की संप्रभुता का दावा करता है।

6. विल ड्यूरेंट (Will Durant):

"The Reformation shattered the religious unity of Christendom and began the age of religious wars, but also opened the door to freedom of thought."

हिंदी:

"Reformation ने ईसाई धर्म की धार्मिक एकता को तोड़ा और धार्मिक युद्धों का युग शुरू किया, परंतु इसने स्वतंत्र चिंतन के द्वार भी खोले।"

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

7. ए. जे. पी. टेलर (A. J. P. Taylor):

"The Reformation was the turning point between the medieval and modern world."

हिंदी:

"Reformation मध्यकालीन और आधुनिक विश्व के बीच एक निर्णायक मोड़ था।"

8. एच. जी. वेल्स (H. G. Wells):

"The Protestant Reformation was the revolt of the human mind against the divine authority of the Church."

हिंदी :

"प्रोटेस्टेंट सुधार आंदोलन चर्च की दिव्य सत्ता के विरुद्ध मानव बुद्धि का विद्रोह था।"

9. टी. वाल्टर वॉल्लबैंक (T. Walter Wallbank):

"Reformation encouraged the rise of national states and the beginning of modern nationalism."

हिंदी :

"Reformation ने राष्ट्रीय राज्यों के उदय और आधुनिक राष्ट्रवाद की शुरुआत को प्रोत्साहित किया।"

10. जीन हेनरी मर्ले डी'ऑबिन्ये (Jean-Henri Merle d'Aubigné):

"The Reformation was the greatest event of modern history. It gave birth to liberty, to the Bible, and to conscience."

हिंदी:

"Reformation आधुनिक इतिहास की सबसे महान घटना थी। इसने स्वतंत्रता, बाइबिल और विवेक को जन्म दिया।"

11. ई. पी. चेलिनर (E. P. Cheyney):

"The Protestant Reformation marked the real beginning of modern times."

हिंदी:

"प्रोटेस्टेंट सुधार आंदोलन ने आधुनिक युग की वास्तविक शुरुआत का संकेत दिया।"

2.12 शब्दावली

- **Reformation** – 16वीं शताब्दी में यूरोप में शुरू हुआ धार्मिक सुधार आंदोलन, जिसने कैथोलिक चर्च की सत्ता को चुनौती दी और प्रोटेस्टेंट शाखाओं की स्थापना की।
- **Protestant** – वे ईसाई समुदाय जिन्होंने चर्च के भ्रष्टाचार का विरोध किया और Lutheranism, Calvinism जैसी नई धार्मिक शाखाओं का निर्माण किया।
- **95 Theses** – मार्टिन लूथर द्वारा 1517 में लिखी गईं 95 आपत्तियाँ, जो Indulgences की बिक्री सहित चर्च की भ्रष्ट नीतियों के विरुद्ध थीं।
- **Sola Fide** – "केवल विश्वास से उद्धार" का सिद्धांत, Lutheran विचारधारा का मूल आधार।
- **Sola Scriptura** – "केवल बाइबिल" को धर्म का अंतिम स्त्रोत मानना – Reformation की केंद्रीय मान्यता।
- **Indulgences** – चर्च द्वारा बेचे जाने वाले पाप-मुक्ति पत्र, जिनके खिलाफ Reformation शुरू हुआ।
- **Diet of Worms** – 1521 में बुलाया गया सम्मेलन, जहाँ लूथर ने अपने विचारों को वापस लेने से इनकार कर दिया और उन्हें विधर्मी घोषित किया गया।
- **Augsburg Confession** – Lutheran विश्वास की पहली औपचारिक घोषणा, जिसे 1530 में प्रकाशित किया गया।
- **Calvinism** – जॉन कैल्विन द्वारा स्थापित विचारधारा, जिसमें "पूर्वनिर्धारण" (Predestination) का सिद्धांत प्रमुख था।
- **Anabaptists** – चरमपंथी सुधारक जिन्होंने शिशु बपतिस्मा का विरोध किया और वयस्क बपतिस्मा को प्राथमिकता दी।
- **Counter-Reformation** – कैथोलिक चर्च की प्रतिक्रिया में शुरू हुआ आंदोलन, जिसमें Jesuit संघ की स्थापना और Council of Trent प्रमुख थे।
- **Jesuits** – Ignatius of Loyola द्वारा स्थापित धार्मिक समूह, जिसने शिक्षा और अनुशासन द्वारा कैथोलिक पुनर्जागरण में भूमिका निभाई।
- **Council of Trent** – 1545–63 के बीच आयोजित कैथोलिक महासभा, जिसने कैथोलिक सिद्धांतों को पुनः परिभाषित किया और सुधार की प्रक्रिया चलाई।
- **Edict of Nantes** – 1598 में फ्रांस के हेनरी चतुर्थ द्वारा जारी आदेश, जिसने Huguenots को धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान की।
- **Thirty Years' War** – 1618–1648 के बीच हुआ यूरोप का विनाशकारी धार्मिक युद्ध, जिसने कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट शक्तियों को टकराया।
- **Treaty of Westphalia** – 1648 में समाप्ति, जिसने यूरोप में राष्ट्र-राज्य और धार्मिक सहिष्णुता की नींव रखी।

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

Click on this page for Test Schedule & Regular Content related updates:-

CLICK HERE

Register Yourself for 1st Free Test:-

Registration link is available on

@RiseJaipur / @AbhyasRasMains Telegram Channel

प्रथम टेस्ट निःशुल्क CLIK ON THIS PAGE FOR MORE UPDATES

ऑफलाइन सेंटर
Main Riddhi-Siddhi Chauraha, Jaipur
Under Triveni Puliya, Gopalpura Jaipur

For More Information
+91 9785606061

@RiseJaipur
@AbhyasRasMains

Download The App Now
"RISE CIVIL SERVICES"

RISE
An Institute for Civil Services

Ch 3 - अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम (American Revolutionary War)

3.1 परिचय (Expanded Introduction):
3.2 प्रारंभ (Expanded Beginning):
3.3 प्रमुख कारण
3.4 आंदोलन में विचारकों का योगदान
3.5 प्रमुख घटनाएँ
3.6 स्वरूप
3.7 प्रमुख व्यक्तित्व
3.8 प्रभाव
3.9 सीमाएँ
3.10 योगदान
3.11 प्रमुख कथन (Notable Quotes)
3.12 शब्दावली

3.1 परिचय (Expanded Introduction):

• **अमेरिका का स्वतंत्रता संग्राम (American Revolutionary War)** 18वीं शताब्दी का वह निर्णायक संघर्ष था जो 1775 से 1783 तक चला, जिसमें उत्तर अमेरिका के 13 ब्रिटिश उपनिवेशों ने साम्राज्यवादी ब्रिटिश शासन की आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक दमनकारी नीतियों के विरुद्ध विद्रोह कर स्वतंत्रता प्राप्त की और *संयुक्त राज्य अमेरिका (United States of America)* की स्थापना की।

• इस संग्राम की *विविध प्रकृति*—सैन्य, वैचारिक, सामाजिक, कूटनीतिक और वैश्विक—ने इसे महज़ एक औपनिवेशिक युद्ध न बनाकर *आधुनिक राजनीतिक चेतना* की क्रांति का स्वरूप दिया।

• यह संघर्ष **ब्रिटेन के राजकीय अधिनायकवाद बनाम अमेरिकी उपनिवेशों की जनसंप्रभुता की आकांक्षा** के बीच था। उपनिवेशवासियों ने कराधान, व्यापारिक प्रतिबंधों, न्यायिक अन्याय व अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के हनन का प्रतिरोध करते हुए लोकतांत्रिक अधिकारों की मांग की।

• यह संग्राम *लोकतंत्र, मानवाधिकार, संवैधानिकता और स्वतंत्रता* जैसी अवधारणाओं का प्रारंभिक वैश्विक उदाहरण बनकर उभरा, जिसने आगे चलकर फ्रांसीसी क्रांति (1789), हैती क्रांति (1791) और अन्य उपनिवेशों के स्वतंत्रता आंदोलनों को प्रेरित किया।

• इस युद्ध में *प्रबोधन युग (Enlightenment)* के सिद्धांतों, विशेषतः *जॉन लॉक* के 'प्राकृतिक अधिकार' व 'जन अनुबंध' के विचारों का व्यापक प्रभाव पड़ा।

• अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम ने आधुनिक विश्व को यह दिखाया कि किसी जनसमूह की सामूहिक चेतना व राजनीतिक दृढ़ता किस प्रकार एक औपनिवेशिक सत्ता को पराजित कर सकती है।

• यह संग्राम न केवल अमेरिका के इतिहास में बल्कि *विश्व इतिहास* में भी लोकतांत्रिक परिवर्तन की आधारशिला सिद्ध हुआ, जिसने 'राष्ट्रवाद' और 'लोकतांत्रिक क्रांति' को वैचारिक और ऐतिहासिक बल प्रदान किया।

3.2 प्रारंभ (Expanded Beginning):

• **ब्रिटेन और उसके अमेरिकी उपनिवेशों के बीच संबंध** 17वीं शताब्दी तक अपेक्षाकृत शांतिपूर्ण थे, लेकिन 18वीं शताब्दी के मध्य आते-आते ब्रिटिश संसद ने आर्थिक करों और व्यापार नियंत्रणों के माध्यम से उपनिवेशों पर अपना प्रभुत्व सुदृढ़ करना प्रारंभ किया।

• **1760 के दशक** में *French and Indian War* (1754–1763) के बाद ब्रिटेन पर कर्ज बढ़ गया। इसके समाधान हेतु उसने अमेरिकी उपनिवेशों पर करों की बाढ़ लगा दी—*Sugar Act (1764), Stamp Act (1765), Townshend Acts (1767)* और *Tea Act (1773)* जैसे कानूनों ने जनता में असंतोष भड़का दिया।

• उपनिवेशों में यह भावना विकसित हुई कि **"बिना प्रतिनिधित्व के कराधान अन्यायपूर्ण है"** – जिसे संक्षेप में कहा गया *"No Taxation Without Representation"*।

• इन कानूनों का प्रतिरोध उपनिवेशों में शांतिपूर्ण याचिकाओं से लेकर सामाजिक बहिष्कार, आंदोलन और फिर **बोस्टन टी पार्टी (1773)** जैसे क्रांतिकारी कृत्यों तक बढ़ता गया।

• ब्रिटेन द्वारा प्रतिशोध में *Coercive Acts (1774)* लागू किए गए जिन्हें *"Intolerable Acts"* कहा गया। इसके विरोध में उपनिवेशों ने *First Continental Congress (1774)* का गठन किया और सामूहिक प्रतिरोध की रणनीति बनाई।

• **19 अप्रैल 1775 को लेक्सिंगटन और कॉनकॉर्ड (Lexington & Concord) की लड़ाइयों** ने अमेरिकी क्रांति का सैन्य आरंभ किया—जहाँ ब्रिटिश

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

सेना और औपनिवेशिक मिलिशिया (Minute Men) आमने-सामने आ गए।

• **1775 में Second Continental Congress की बैठक में जॉर्ज वॉशिंगटन को मुख्य सेनापति नियुक्त किया गया** और संगठित प्रतिरोध की नींव पड़ी।

• अंततः **4 जुलाई 1776 को थॉमस जेफरसन द्वारा तैयार "Declaration of Independence" को पारित किया गया**, जिसमें 13 उपनिवेशों ने स्वयं को स्वतंत्र राष्ट्र घोषित किया।

• इस घोषणा के साथ ही अमेरिका और ब्रिटेन के बीच संघर्ष केवल एक कर विवाद न रहकर **राष्ट्रीय स्वतंत्रता की लड़ाई** बन गया।

3.3 प्रमुख कारण

1. राजनीतिक कारण (Political Causes):

• **प्रतिनिधित्व का अभाव:** उपनिवेशों का ब्रिटिश संसद में कोई प्रतिनिधि नहीं था, फिर भी उन पर कर थोपे जाते थे — "No Taxation Without Representation" आंदोलन का आधार।

• **राजकीय अत्याचार:** ब्रिटिश सरकार ने उपनिवेशों में गवर्नर थोपे, न्यायिक स्वतंत्रता सीमित की और शाही सेना तैनात कर नागरिक अधिकारों का हनन किया।

• **Coercive Acts (1774):** बोस्टन टी पार्टी के बाद पारित दमनकारी कानून, जिन्हें अमेरिका में "Intolerable Acts" कहा गया, ने राजनीतिक टकराव को बढ़ाया।

• **राजनीतिक अस्मिता का जागरण:** उपनिवेश स्वयं को अब अलग पहचान वाला समुदाय मानने लगे थे जो ब्रिटिश प्रभुत्व को स्वीकारने को तैयार नहीं था।

2. सामाजिक कारण (Social Causes):

• **उपनिवेशवासियों की नई पहचान:** अमेरिकी उपनिवेशों में जन्मे लोग स्वयं को ब्रिटिश नागरिकों से अलग मानने लगे थे।

• **वर्ग चेतना का उभार:** किसान, व्यापारी, कारीगर वर्ग में स्वतंत्रता की तीव्र आकांक्षा थी।

• **दमनकारी सैनिक उपस्थिति:** ब्रिटिश सैनिकों की निरंतर उपस्थिति और उनके द्वारा स्थानीय नागरिकों पर अत्याचार, बल प्रयोग और दमन ने सामाजिक तनाव को बढ़ाया।

• **स्वतंत्रता व समानता की आकांक्षा:** औपनिवेशिक समाज में विशेषकर युवा वर्ग और शिक्षित जन स्वतंत्र जीवन और सामाजिक समानता की ओर आकर्षित हो रहे थे।

3. आर्थिक कारण (Economic Causes):

• **भारी कर भार:** *Stamp Act (1765), Townshend Acts (1767), Tea Act (1773)* जैसे कानूनों द्वारा उपनिवेशों पर कर थोपे गए।

• **व्यापारिक नियंत्रण:** *Navigation Acts* ने उपनिवेशों को स्वतंत्र व्यापार से रोका; उन्हें केवल ब्रिटेन से ही वस्तुएं खरीदनी पड़ती थीं।

• **स्थानीय व्यापारियों का उत्पीड़न:** ईस्ट इंडिया कंपनी को विशेषाधिकार देने से स्थानीय व्यापारियों को हानि हुई, जिससे असंतोष और विद्रोह की भावना उभरी।

• **फ्रांसीसी-भारतीय युद्ध के बाद कर वसूली:** ब्रिटेन ने अपने युद्ध व्यय की भरपाई हेतु उपनिवेशों को आर्थिक रूप से शोषित करना शुरू किया।

4. बौद्धिक कारण / वैचारिक कारण (Intellectual/Ideological Causes):

• **प्रबोधन युग (Enlightenment):** *जॉन लॉक* (स्वाभाविक अधिकार), *रूसो* (जन-समझौता), *मोंतेस्क्यू* (सत्ता पृथक्करण) जैसे विचारकों के विचारों ने उपनिवेशों में राजनीतिक चेतना को जन्म दिया।

• **लोकतांत्रिक सिद्धांतों की स्वीकार्यता:** उपनिवेशवासी यह मानने लगे थे कि शासन केवल जनता की सहमति से ही वैध हो सकता है।

• **राजनीतिक साहित्य का प्रसार:** *थॉमस पेन* का प्रसिद्ध पैम्फलेट *"Common Sense"* (1776) ने आम जनता को ब्रिटिश शासन के विरुद्ध खड़ा किया।

• **शिक्षा और प्रेस की भूमिका:** अमेरिकी उपनिवेशों में पढ़े-लिखे वर्ग और स्वतंत्र प्रेस ने स्वतंत्रता की विचारधारा का प्रचार-प्रसार किया।

3.4 आंदोलन में विचारकों का योगदान

• अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम मात्र एक सशस्त्र संघर्ष नहीं, अपितु *वैचारिक क्रांति* थी। इस आंदोलन की वैधता, नैतिकता और प्रेरणा का स्रोत *प्रबोधन युग* के महान चिंतनशीलों के सिद्धांतों में निहित था। इन विचारकों ने स्वतंत्रता, जनसत्ता और प्राकृतिक अधिकारों की ऐसी चेतना दी, जिसने उपनिवेशों को

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

साम्राज्य के विरुद्ध उठ खड़ा होने का बौद्धिक साहस दिया।

1. जॉन लॉक (1632–1704)

- *"जीवन, स्वतंत्रता और संपत्ति"* को मानव के *स्वाभाविक अधिकार* बताते हुए उन्होंने सत्ता को जनता की सहमति पर आधारित ठहराया।
- यदि सरकार इन अधिकारों का हनन करे तो *"जनता को उसे बदलने या अपदस्थ करने का नैतिक अधिकार है"* – यही विचार *Declaration of Independence (1776)* का मूल बना।
- थॉमस जेफरसन ने उनके दर्शन को शब्द दिए: *"All men are created equal..."*

2. ज्याँ जैक रूसो (1712–1778)

- उनकी कृति *"The Social Contract"* में वर्णित *"जन-इच्छा की संप्रभुता"* ने यह सिद्ध किया कि राज्य सत्ता का स्रोत राजा नहीं, अपितु जनता है।
- "मनुष्य जन्म से स्वतंत्र है, परन्तु सर्वत्र जंजीरों में जकड़ा है" – इस घोषवाक्य ने स्वतंत्रता आंदोलन को वैचारिक धार दी।
- अमेरिकी क्रांतिकारियों ने यह आत्मसात किया कि सरकार जनता की इच्छा से ही वैध बनती है।

3. मोंतेस्क्यू (1689–1755)

- *"The Spirit of Laws"* में प्रस्तावित *सत्ता पृथक्करण* (विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका) का सिद्धांत अमेरिकी संविधान का आधार बना।
- उन्होंने यह भी कहा – *"सत्ता अनियंत्रित हो तो स्वतंत्रता का अंत निश्चित है।"*
- अमेरिकी संवैधानिक ढाँचा पूर्णतः उनके चिंतन से अनुप्राणित हुआ।

4. थॉमस पेन (1737–1809)

- *"Common Sense" (1776)* ने जनमानस को झकझोरा और स्वतंत्रता की अनिवार्यता को साधारण शब्दों में सुलभ किया।
- उन्होंने लिखा – *"राजा मनुष्यों की आवश्यकता नहीं, अत्याचार की स्मृति हैं।"*
- उनके तर्कों ने शहरी और ग्राम्य जनसमुदाय तक क्रांति की भावना पहुँचाई।

5. एडम स्मिथ (1723–1790)

- *"The Wealth of Nations" (1776)* में उन्होंने औपनिवेशिक व्यापार प्रणाली की आलोचना की और मुक्त अर्थव्यवस्था का समर्थन किया।
- उन्होंने उपनिवेशों के आर्थिक दोहन को ब्रिटेन की नीतिगत भूल बताया – जिससे अमेरिकी व्यापारियों को वैचारिक बल मिला।

6. स्थानिक विचारक – थॉमस जेफरसन, बेंजामिन फ्रैंकलिन

- *थॉमस जेफरसन – Declaration of Independence* में प्रबोधन विचारों का संहिताकरण किया।
- *बेंजामिन फ्रैंकलिन* – यूरोपीय राजनय में अमेरिकी स्वतंत्रता का बौद्धिक पक्ष प्रस्तुत कर फ्रांस से सैन्य और आर्थिक सहायता दिलवाई।

3.5 प्रमुख घटनाएँ

- अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम की घटनाएँ केवल युद्ध की तिथियों का क्रम नहीं थीं, बल्कि प्रत्येक घटना ने आंदोलन को नई दिशा, वैश्विक समर्थन और वैधानिक पहचान प्रदान की।

1. लेक्सिंगटन व कॉनकॉर्ड की लड़ाई (Lexington and Concord – 19 अप्रैल 1775):

- ब्रिटिश सेना ने मैसाचुसेट्स में विद्रोही नेताओं को पकड़ने और हथियारों का भंडार नष्ट करने का प्रयास किया।
- स्थानीय मिलिशिया (Minute Men) ने ब्रिटिश सेना को रोका – *यहीं से सशस्त्र संघर्ष का औपचारिक आरंभ हुआ।*
- इसे अमेरिकी क्रांति का *"शुरुआती धमाका" (Shot heard 'round the world)* कहा जाता है।

2. द्वितीय कॉन्टिनेंटल कांग्रेस (Second Continental Congress – मई 1775):

- सभी 13 उपनिवेशों के प्रतिनिधियों ने युद्ध संचालन हेतु सभा की।
- *जॉर्ज वॉशिंगटन* को **महासेनापति** नियुक्त किया गया।
- स्वतंत्रता की ओर कदम बढ़ाने का यह राजनीतिक मंच बना।

3. स्वतंत्रता की घोषणा (Declaration of Independence – 4 जुलाई 1776):

- *थॉमस जेफरसन* द्वारा लिखित यह दस्तावेज अमेरिकी स्वतंत्रता आंदोलन का वैचारिक आधार बना।
- इसमें प्राकृतिक अधिकार, जनसंप्रभुता और ब्रिटिश अत्याचार का तर्कसंगत वर्णन किया गया।

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

- *"All men are created equal..."* जैसे वाक्य विश्व मानवाधिकार चेतना का आधार बने।

4. साराटोगा की लड़ाई (Battle of Saratoga – अक्टूबर 1777):

- अमेरिका की पहली निर्णायक सैन्य विजय – ब्रिटिश जनरल बर्गोइन की सेना ने आत्मसमर्पण किया।
- यह जीत अमेरिकी पक्ष के लिए *रणनीतिक मोड़* बनी – *फ्रांस ने औपचारिक रूप से अमेरिका की सैन्य सहायता की घोषणा की*।
- इसने युद्ध को अंतरराष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया।

5. यॉर्कटाउन की लड़ाई (Battle of Yorktown – अक्टूबर 1781):

- जॉर्ज वॉशिंगटन और फ्रांसीसी सेनानायक *रोकांबो* की संयुक्त सेना ने ब्रिटिश जनरल *कॉर्नवालिस* को घेर लिया।
- ब्रिटिश सेना को आत्मसमर्पण करना पड़ा – **यह निर्णायक मोड़ बना जिसने ब्रिटेन को युद्धविराम के लिए विवश किया**।

6. पेरिस की संधि (Treaty of Paris – 3 सितंबर 1783):

- अमेरिका की **औपचारिक स्वतंत्रता को ब्रिटेन ने मान्यता दी**।
- मिसिसिपी नदी तक अमेरिका की पश्चिमी सीमा तय हुई।
- युद्ध के अंत और नए राष्ट्र की शुरुआत की संवैधानिक मुहर इस संधि ने लगाई।

7. अन्य उल्लेखनीय घटनाएँ:

- *Bunker Hill युद्ध (1775):* यद्यपि सामरिक दृष्टि से ब्रिटिश जीत, परंतु अमेरिकी सेनाओं की साहसिकता ने क्रांति को प्रेरित किया।
- *Articles of Confederation (1777):* उपनिवेशों के बीच पहली बार औपचारिक राजनीतिक संघ की स्थापना हुई।

3.6 स्वरूप

- अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम का स्वरूप केवल एक औपनिवेशिक सैन्य संघर्ष नहीं था, बल्कि यह *बहुआयामी क्रांति* थी – जिसमें राजनीतिक चेतना, सामाजिक सहभागिता, बौद्धिक प्रेरणा और अंतरराष्ट्रीय समागम समाहित थे। इस क्रांति ने समग्र रूप से एक *नवीन राष्ट्र के जन्म* की प्रक्रिया को मूर्त रूप दिया।

1. सशस्त्र संघर्ष + वैचारिक क्रांति:

- यह संघर्ष न केवल हथियारों की लड़ाई थी, बल्कि इसमें *राजनीतिक विचारधारा और बौद्धिक क्रांति* की केंद्रीय भूमिका थी।
- "लोकतंत्र", "जनसंप्रभुता", "प्राकृतिक अधिकार", "राजनीतिक उत्तरदायित्व" जैसी अवधारणाएँ – जो *प्रबोधन युग* से प्रेरित थीं – इस क्रांति की आधारशिला बनीं।
- क्रांति की चेतना केवल रणभूमि तक सीमित नहीं थी, बल्कि *पैम्फलेट, पर्चे, वक्तव्य और घोषणाओं* के रूप में जनता में व्याप्त थी।

2. अंतरराष्ट्रीय आयाम (International Dimensions):

- अमेरिका की क्रांति को *फ्रांस, स्पेन, नीदरलैंड* जैसे यूरोपीय देशों ने कूटनीतिक, सैन्य और आर्थिक समर्थन दिया।
- *Battle of Saratoga (1777)* के बाद फ्रांस ने अमेरिका के पक्ष में खुला समर्थन दिया।
- यह संघर्ष औपनिवेशिक दमन बनाम स्वतंत्रता की *वैश्विक नैतिक लड़ाई* के रूप में देखा जाने लगा।

3. सामाजिक समावेशिता और व्यापक सहभागिता:

- यह क्रांति केवल संभ्रांतों या सेनानायकों की नहीं थी – बल्कि *किसान, व्यापारी, कारीगर, लेखक, महिला संगठन, धार्मिक समुदाय* – सभी ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष योगदान दिया।
- *महिलाओं* ने सूचनाओं के आदान-प्रदान, खाद्य प्रबंधन, कपड़े व औषधियों की आपूर्ति तथा आर्थिक सहयोग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- *अफ्रीकी-अमेरिकियों* और *मूल अमेरिकी जनजातियों* ने भी विभिन्न स्तरों पर भागीदारी की, यद्यपि उनके अधिकार तत्काल सुनिश्चित नहीं हुए।

4. संगठित संस्थागत प्रतिरोध (Institutional Structure):

- *Continental Congress* – राजनीतिक संचालन, युद्ध नीति निर्धारण, विदेशी सहयोग हेतु केन्द्रीय निकाय।
- *Continental Army* – जॉर्ज वॉशिंगटन के नेतृत्व में एक संगठित क्रांतिकारी सैन्य बल का निर्माण।
- *Declaration Committee* – स्वतंत्रता की औपचारिक घोषणा तैयार करने हेतु पाँच सदस्यों की समिति।
- *Articles of Confederation (1777)* – उपनिवेशों

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

को एक ढीले संघ में संगठित करने का पहला औपचारिक दस्तावेज।

5. बहुस्तरीय क्रांति:

- *राजनीतिक* – औपनिवेशिक अधीनता के विरुद्ध राष्ट्रीय स्वराज।
- *सामाजिक* – वर्गहीनता, समानता और नागरिक भागीदारी का विस्तार।
- *आर्थिक* – ब्रिटिश व्यापार नियंत्रण से मुक्ति और मुक्त बाजार की अवधारणा।
- *बौद्धिक* – सत्ता की वैधता पर पुनर्विचार और मानव अधिकारों की सार्वभौमिकता की उद्घोषणा।

3.7 प्रमुख व्यक्तित्व

- अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम अनेक प्रेरणास्पद व्यक्तित्वों की सहभागिता से संचालित हुआ—इनमें से कुछ *रणनीतिक सेनापति*, कुछ *वैचारिक मार्गदर्शक*, तो कुछ *कूटनीतिक सेतु* की भूमिका में थे। इन विभूतियों ने क्रांति को नेतृत्व, विचार और वैश्विक समर्थन से समृद्ध किया।

1. जॉर्ज वॉशिंगटन (George Washington):

- *Continental Army* के सर्वोच्च सेनापति, जिनके *रणनीतिक धैर्य और नेतृत्व कौशल* ने अमेरिकी क्रांति को सैन्य सफलता दिलाई।
- *Battle of Trenton*, *Valley Forge*, और *Yorktown* में निर्णायक भूमिका।
- स्वतंत्रता उपरांत अमेरिका के **प्रथम राष्ट्रपति (1789–1797)** बने, जिन्होंने लोकतांत्रिक शासन की नींव रखी।
- उन्हें *"Father of the Nation"* की संज्ञा प्राप्त है।

2. थॉमस जेफरसन (Thomas Jefferson):

- *Declaration of Independence (1776)* के प्रमुख लेखक, जिन्होंने *प्राकृतिक अधिकार*, *जनसत्ता* और *राजकीय अत्याचार* के विरुद्ध औचित्य प्रस्तुत किया।
- *राजनयिक*, *विचारक* और *राज्य शिल्पी* के रूप में अद्वितीय योगदान।
- तीसरे राष्ट्रपति (1801–1809) रहते हुए *Louisiana Purchase* और *University of Virginia* की स्थापना की।

3. बेंजामिन फ्रैंकलिन (Benjamin Franklin):

- *वैज्ञानिक, लेखक, राजनयिक और विचारक* – बहुआयामी व्यक्तित्व।
- फ्रांस में अमेरिका के दूत के रूप में *रणनीतिक सैन्य और आर्थिक सहयोग* प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका।
- *Albany Plan of Union* के प्रस्तावक और *फ्रांसीसी-अमेरिकी संधि (1778)* के मध्यस्थ।
- अमेरिकी संविधान निर्माण में भी उनकी भागीदारी रही।

4. जॉन एडम्स (John Adams):

- *अमेरिकी क्रांति के वैचारिक स्तंभ*, स्वतंत्रता के लिए सशक्त तर्क प्रस्तुत किए।
- *Massachusetts Constitution* के लेखक, जो अमेरिकी संविधान का प्रारूप बना।
- फ्रांस व नीदरलैंड में राजदूत रहते हुए यूरोपीय समर्थन जुटाया।
- अमेरिका के **द्वितीय राष्ट्रपति (1797–1801)** बने।

5. अलेक्जेंडर हैमिल्टन (Alexander Hamilton):

- *जॉर्ज वॉशिंगटन के सलाहकार व वित्तीय ढाँचे के स्थापक*।
- स्वतंत्रता के पश्चात *America's first Secretary of the Treasury* बने।
- *Federalist Papers* के लेखक – अमेरिकी संविधान की व्याख्या में योगदान।
- *राष्ट्रीय बैंक प्रणाली* व आर्थिक स्थायित्व के योजनाकार।

6. पैट्रिक हेनरी (Patrick Henry):

- *वाक्पटु वक्ता* और क्रांति के आरंभिक जननायक।
- वर्जीनिया असेंबली में उनका नारा – *"Give me liberty, or give me death!"* – जन-चेतना का प्रतीक बना।
- स्वतंत्रता से पूर्व ही *राजशाही के उन्मूलन* और *स्वशासन* की वकालत की।

7. मार्की डे लाफायेत (Marquis de Lafayette):

- *फ्रांसीसी कुलीन* जो अमेरिकी क्रांति में स्वयंसेवक सेनानायक के रूप में सम्मिलित हुए।
- *Battle of Brandywine* और *Yorktown* में निर्णायक भूमिका।
- फ्रांसीसी सहायता लाने में पुल का कार्य – *क्रांति के अंतरराष्ट्रीय आयाम* को सशक्त किया।
- बाद में *फ्रांसीसी क्रांति* में भी सक्रिय भूमिका निभाई।

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

3.8 प्रभाव

- अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम न केवल एक राष्ट्र की मुक्ति थी, बल्कि वह *वैश्विक लोकतांत्रिक चेतना* की शुरुआत भी था। इस क्रांति के दूरगामी प्रभावों ने *राजनीतिक विचार, संवैधानिक शासन, वैश्विक साम्राज्यवाद, और सामाजिक स्वतंत्रता* के प्रतिमानों को नया स्वरूप दिया।

1. संवैधानिक गणराज्य की स्थापना (Establishment of a Constitutional Republic):

- *Articles of Confederation (1777)* के असफल प्रयोग के बाद *संविधान सभा* ने 1787 में *U.S. Constitution* का निर्माण किया, जो शक्तियों के संतुलन और नागरिक अधिकारों का वैश्विक उदाहरण बना।
- इसमें *संघवाद*, *तीन अंगों की सत्ता विभाजन* (कार्यपालिका, विधायिका, न्यायपालिका) और *नागरिक स्वतंत्रता* को विधिवत संस्थागत रूप दिया गया।

2. लोकतंत्र और मानवाधिकार की वैश्विक लहर (Democratic Inspiration Worldwide):

- अमेरिकी क्रांति से प्रेरणा लेकर *फ्रांसीसी क्रांति (1789), हैती क्रांति (1791), लैटिन अमेरिकी स्वतंत्रता आंदोलन* (साइमन बोलिवार इत्यादि) का उदय हुआ।
- *"Declaration of the Rights of Man"* जैसे घोषणापत्रों ने अमेरिकी मॉडल का अनुकरण किया।
- यह विश्व इतिहास में *लोकतंत्र और जनसंप्रभुता की वैचारिक श्रृंखला* का प्रारंभ बना।

3. राजनीतिक नवाचार (Political Innovations):

- अमेरिकी संविधान में *संविधान की सर्वोच्चता*, *चेक्स एंड बैलेंसेज़*, *बिल ऑफ राइट्स* जैसे तत्व विश्व के अनेक लोकतांत्रिक संविधान के लिए अनुकरणीय बने।
- "जन-प्रतिनिधि शासन" और "न्यायिक पुनरावलोकन" जैसे आधुनिक विचार यहीं से विकसित हुए।

4. आर्थिक स्वायत्तता व नवउदारीकरण (Economic Self-Sufficiency):

- औपनिवेशिक व्यापार प्रतिबंधों से मुक्त होकर अमेरिका ने *मुक्त व्यापार*, *निजी संपत्ति*, और *कृषि-उद्योग आधारित विकास* को प्रोत्साहित किया।
- *एडम स्मिथ* के आर्थिक विचारों को क्रियान्वित करने की दिशा में पहला ठोस प्रयास इसी क्रांति के बाद देखा गया।

5. ब्रिटेन के वैश्विक प्रभुत्व पर आघात (Decline of British Imperial Prestige):

- पहली बार ब्रिटेन को अपने किसी औपनिवेशिक विद्रोह में *राजनयिक रूप से पराजय* का सामना करना पड़ा।
- इसके बाद अन्य उपनिवेशों – विशेषकर भारत, आयरलैंड, कैरेबियाई क्षेत्र – में भी ब्रिटिश प्रभुत्व के विरुद्ध असंतोष जागृत हुआ।
- साम्राज्यवादी व्यवस्था की *वैचारिक आलोचना* और *राजनीतिक चुनौती* की शुरुआत हुई।

6. सामाजिक चेतना और नागरिक अधिकार (Social Awareness and Civil Rights):

- यद्यपि तत्काल रूप से दासों, महिलाओं और मूल अमेरिकियों को समान अधिकार नहीं मिले, फिर भी *मानव स्वतंत्रता और समानता की वैचारिक धारा* स्थापित हुई।
- *मानवाधिकार घोषणाओं, महिला आंदोलन और दास-विरोधी आंदोलनों* के लिए यह आधार बनी।

3.9 सीमाएँ

- यद्यपि अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम ने लोकतंत्र, गणराज्यवाद और नागरिक स्वतंत्रता की नींव रखी, परंतु इसकी *आदर्शवादी घोषणाओं और व्यवहारिक उपलब्धियों* में महत्वपूर्ण असमानता रही। यह क्रांति *समूह विशेष की स्वतंत्रता* बनी रही, जिससे वंचित वर्गों के अधिकार सीमित रहे।

1. दासप्रथा बनी रही (Slavery Continued):

- *"All men are created equal"* जैसे घोषवाक्य के बावजूद **अफ्रीकी मूल के गुलामों** की स्थिति में तत्काल कोई सुधार नहीं हुआ।
- दक्षिणी राज्यों में दासप्रथा को वैधानिक समर्थन प्राप्त रहा और दासों को **मानव के रूप में नहीं, संपत्ति के रूप में** देखा गया।
- यह विरोधाभास अमेरिका की राजनीतिक नैतिकता पर प्रश्नचिह्न बना रहा, जिसके समाधान में *सिविल वॉर (1861–65)* जैसी भीषण लड़ाई लड़ी गई।

2. महिलाओं की उपेक्षा (Denial of Rights to Women):

- महिलाओं ने स्वतंत्रता संग्राम में भोजन, चिकित्सा, खुफिया नेटवर्क और वस्त्रों की आपूर्ति में योगदान दिया, परंतु उन्हें **राजनीतिक अधिकारों**

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

और मताधिकार से वंचित रखा गया।

- *अबिगेल एडम्स* जैसी महिलाओं की समान अधिकारों की मांग भी *पुरुष वर्चस्व की सत्ता* के कारण उपेक्षित रही।
- महिलाओं को मतदान का अधिकार अमेरिका में **1920** में जाकर मिला।

3. मूल अमेरिकी जनजातियों की हानि (Displacement of Native Americans):

- स्वतंत्रता के बाद विस्तारवादी नीति के तहत **जनजातीय भूमि का अधिग्रहण और विस्थापन** आरंभ हुआ।
- कई जनजातियाँ, जिन्होंने ब्रिटिशों का समर्थन किया था, उन्हें शत्रु माना गया और उनकी *सांस्कृतिक और भौगोलिक पहचान* को नष्ट किया गया।
- इसने *जनजातीय हाशियाकरण* की प्रक्रिया को तीव्र किया।

4. सामाजिक व आर्थिक विषमता यथावत (Persistent Internal Inequality):

- अमीर व्यापारी वर्ग और जमींदारों ने स्वतंत्रता के बाद भी **सत्ता पर एकाधिकार** बनाए रखा।
- श्रमिक, किसान, छोटे व्यापारी और गुलाम वर्ग *नए राष्ट्र में भी समावेशित नहीं हो सके*।
- आर्थिक अवसर और संसाधनों का वितरण असमान बना रहा।

5. Loyalists पर दमन (Repression of Loyalists):

- जो उपनिवेशवासी ब्रिटिश शासन के समर्थक थे (Loyalists), उन्हें **समाज से बहिष्कृत, संपत्तियों से वंचित और निर्वासित** किया गया।
- लगभग 60,000 लॉयलिस्टों को कनाडा, ब्रिटेन या अन्य उपनिवेशों में पलायन करना पड़ा।
- इससे *राजनीतिक असहिष्णुता* का उदाहरण प्रस्तुत हुआ – जो लोकतंत्र के आदर्शों के विरुद्ध था।

3.10 योगदान

- अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम का ऐतिहासिक योगदान केवल एक राष्ट्र की स्थापना तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसने *राजनीति, समाज, अर्थव्यवस्था और वैश्विक चेतना* को गहरे स्तर पर प्रभावित किया। यह क्रांति *आधुनिक लोकतांत्रिक युग* की आधारशिला बनी जिसने उपनिवेशवाद, निरंकुशता और असमानता के विरुद्ध *वैश्विक वैचारिक आंदोलन* को जन्म दिया।

1. विश्व के प्रथम लोकतांत्रिक गणराज्य की स्थापना (Birth of the First Modern Republic):

- अमेरिका पहला ऐसा राष्ट्र बना जिसने *जनप्रतिनिधि संविधान* द्वारा अपना शासन संचालित किया।
- *संविधान (1787)* व *बिल ऑफ राइट्स (1791)* के माध्यम से जनता को विधिक अधिकार प्राप्त हुए।
- सत्ता का स्रोत जनता बनी – न कि किसी राजा, पोप या वंश।

2. मानवाधिकार और संविधान निर्माण की प्रेरणा (Inspiration for Human Rights and Constitutionalism):

- अमेरिका का *Declaration of Independence* (1776) और संविधान *फ्रांस (1789), हैती (1791), लैटिन अमेरिका* के आंदोलनकारियों के लिए प्रेरणा स्रोत बना।
- *"All men are created equal..."*, "Life, Liberty and the Pursuit of Happiness" जैसे घोषवाक्य *मानवाधिकार सिद्धांत* के वैश्विक प्रतीक बने।

3. औपनिवेशिक शोषण के विरुद्ध संघर्ष की मिसाल (Model for Anti-Colonial Movements):

- इस क्रांति ने यह सिद्ध किया कि *एक संगठित, वैचारिक और दृढ़ आंदोलन* औपनिवेशिक शासन को पराजित कर सकता है।
- 19वीं–20वीं सदी में *भारत, अफ्रीका और एशिया* के स्वतंत्रता आंदोलनों ने अमेरिकी उदाहरण से नैतिक बल प्राप्त किया।

4. जनसंप्रभुता, धर्मनिरपेक्षता और अधिकारों की अवधारणाओं का विस्तार (Expansion of Modern Democratic Ideals):

- *जनता की संप्रभुता, राज्य और धर्म का पृथक्करण, व्यक्तिगत स्वतंत्रता* और *कानून के समक्ष समानता* जैसी अवधारणाएँ अमेरिका से ही वैश्विक विमर्श में आईं।
- अमेरिकी संविधान ने *सत्ता की सीमितता, अधिकारों की सुनिश्चितता और उत्तरदायी शासन* का स्थायी ढाँचा प्रस्तुत किया।

5. शिक्षा, प्रेस और नागरिक सहभागिता का आदर्श (Civic Participation and Enlightenment Values):

- इस आंदोलन ने *प्रबोधन युग के मूल्यों* को व्यवहार में स्थापित किया – *विचारों की स्वतंत्रता, विवेक, वैज्ञानिक सोच और आलोचनात्मक दृष्टिकोण*।

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

• नागरिकों की सक्रिय भागीदारी, प्रेस की स्वतंत्रता और सार्वजनिक विमर्श को लोकतंत्र का आधार बनाया गया।

3.11 प्रमुख कथन (Notable Quotes)

- अमेरिकी क्रांति विचारों और शब्दों की क्रांति भी थी। नेताओं, विचारकों और क्रांतिकारियों के *उत्साहवर्धक, विचारोत्तेजक और ऐतिहासिक वाक्य* इस आंदोलन की वैचारिक शक्ति को प्रकट करते हैं।

1. थॉमस जेफरसन (Thomas Jefferson):

• *"All men are created equal, that they are endowed by their Creator with certain unalienable Rights..."*

(सभी मनुष्य समान पैदा हुए हैं और उन्हें सृजनकर्ता द्वारा कुछ अविच्छिन्न अधिकार प्रदान किए गए हैं...)

→ *Declaration of Independence (1776)* में मानव अधिकारों की वैचारिक उद्घोषणा।

2. पैट्रिक हेनरी (Patrick Henry):

• *"Give me liberty, or give me death!"*

(मुझे स्वतंत्रता दो, नहीं तो मृत्यु!)

→ वर्जीनिया कन्वेंशन (1775) में यह नारा क्रांति की आग को जन-जन तक पहुँचाने वाला बना।

3. थॉमस पेन (Thomas Paine):

• *"These are the times that try men's souls."*

(यह वो समय है जो मनुष्यों की आत्मा की परीक्षा लेता है।)

→ *The Crisis (1776)* से लिया गया, यह कथन सैनिकों व जनता में साहस भरने वाला बना।

• *"Government, even in its best state, is but a necessary evil..."*

→ शासन की सीमाओं पर आलोचनात्मक दृष्टिकोण।

4. जॉन एडम्स (John Adams):

• *"Liberty, once lost, is lost forever."*

(स्वतंत्रता एक बार खो गई, तो सदा के लिए खो जाती है।)

→ स्वतंत्रता की सतत रक्षा की चेतावनी।

5. बेंजामिन फ्रैंकलिन (Benjamin Franklin):

• *"They who can give up essential liberty to obtain a little temporary safety deserve neither liberty nor safety."*

(जो लोग थोड़ी सुरक्षा पाने के लिए मौलिक स्वतंत्रता का त्याग करते हैं, वे न तो स्वतंत्रता के योग्य हैं, न ही सुरक्षा के।)

→ नागरिक स्वतंत्रता और राज्य के संतुलन पर टिप्पणी।

6. जॉर्ज वॉशिंगटन (George Washington):

• *"The preservation of the sacred fire of liberty... is finally staked on the experiment entrusted to the hands of the American people."*

(स्वतंत्रता की पवित्र ज्वाला की रक्षा अब अमेरिकी जनता के हाथों सौंपे गए प्रयोग पर निर्भर है।)

→ लोकतंत्र की नैतिक जिम्मेदारी पर बल।

7. एरिक फॉनर (Eric Foner):

• *"The American Revolution was radical in intent but conservative in effect."*

(अमेरिकी क्रांति का उद्देश्य क्रांतिकारी था, परंतु उसका परिणाम संरक्षणवादी सिद्ध हुआ।)

→ सामाजिक-सांस्कृतिक संरचनाओं में न्यून परिवर्तन की आलोचना।

8. **गॉर्डन एस. वुड (Gordon S. Wood):**

• *"The Revolution did more than legally create the United States; it transformed American society."*

(क्रांति ने केवल अमेरिका को कानूनी रूप से नहीं, बल्कि समाज को भी पूरी तरह रूपांतरित किया।)

→ उन्होंने इसे *"Radical Revolution"* कहकर इसकी गहन सामाजिक प्रकृति पर बल दिया।

9. होवर्ड ज़िन (Howard Zinn):

• *"The American Revolution was not a revolution for the poor or the enslaved. It was a revolution of the elite."*

(यह क्रांति न तो गरीबों की थी, न गुलामों की – यह संभ्रांत वर्ग की क्रांति थी।)

→ क्रांति की सीमाओं और वंचित वर्ग की उपेक्षा पर आलोचनात्मक दृष्टिकोण।

10. बर्नार्ड बैलिन (Bernard Bailyn):

• *"The American Revolution was above all else an ideological struggle."*

(अमेरिकी क्रांति मूलतः एक वैचारिक संघर्ष थी।)

→ प्रबोधनकालीन विचारों के प्रभाव को प्रमुख मानते हैं।

11. जॉन फिशर (John Fiske):

• *"The American Revolution was a continuation of the English constitutional evolution."*

(यह क्रांति इंग्लैंड की संवैधानिक विकास यात्रा की एक कड़ी थी।)

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

→ उन्होंने इसे परंपरा से उत्पन्न 'संवैधानिक विद्रोह' बताया।

12. रिचर्ड मॉरिस (Richard B. Morris):

- *"The Revolution was the most significant event in the history of liberty."*
  (क्रांति स्वतंत्रता के इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण घटना थी।)

→ लोकतंत्र और मानवाधिकारों के विकास में इसकी भूमिका को सर्वश्रेष्ठ मानते हैं।

13. **एलेक्सिस डी टोकेविल (Alexis de Tocqueville):**

- *"The American Revolution began the era of democracy in the modern world."*
  (अमेरिकी क्रांति ने आधुनिक विश्व में लोकतंत्र के युग का प्रारंभ किया।)

→ उन्होंने इसे *राजनीतिक आधुनिकता का प्रारंभिक स्रोत* माना।

3.12 शब्दावली

1. Declaration of Independence (स्वतंत्रता की घोषणा):

- 1776 में थॉमस जेफरसन द्वारा तैयार ऐतिहासिक दस्तावेज, जिसमें अमेरिका ने ब्रिटेन से स्वतंत्रता की औपचारिक घोषणा की।

2. Continental Congress (महाद्वीपीय कांग्रेस):

- 13 उपनिवेशों की प्रतिनिधि सभा, जिसने स्वतंत्रता संग्राम का राजनीतिक नेतृत्व और सेना संचालन किया।

3. Loyalists (निष्ठावान):

- वे अमेरिकी उपनिवेशवासी जो ब्रिटिश राजभक्ति में विश्वास रखते थे; क्रांति के दौरान इनका दमन और बहिष्कार हुआ।

4. Patriots (देशभक्त):

- ब्रिटिश शासन के विरोधी, जो अमेरिकी स्वतंत्रता आंदोलन के समर्थक और सक्रिय कार्यकर्ता थे।

5. Minutemen:

- स्थानीय मिलिशिया सैनिक जो किसी भी समय युद्ध के लिए तैयार रहते थे – लेक्सिंग्टन-कॉनकॉर्ड लड़ाई में निर्णायक भूमिका।

6. Boston Tea Party:

- 1773 की प्रसिद्ध घटना जब उपनिवेशवासियों ने कर के विरोध में ब्रिटिश जहाज की चाय समुद्र में फेंक दी।

7. Intolerable Acts (असहनीय कानून):

- ब्रिटिश संसद द्वारा बोस्टन टी पार्टी के बाद पारित दंडात्मक कानून – उपनिवेशों ने इसे अधिकारों के हनन के रूप में देखा।

8. Articles of Confederation (संघ लेख):

- 1777 में स्वीकृत पहला संविधानिक दस्तावेज, जिसने एक ढीले संघ के रूप में अमेरिका को संगठित किया – जिसकी सीमाएँ बाद में स्पष्ट हुईं।

9. Treaty of Paris (पेरिस संधि):

- 1783 की वह संधि जिसके अंतर्गत ब्रिटेन ने अमेरिका की स्वतंत्रता को औपचारिक मान्यता दी।

10. Federalism (संघवाद):

- संविधान में शक्तियों का वितरण – केंद्र और राज्यों के बीच, जिसे अमेरिकी प्रणाली की विशेषता माना जाता है।

11. Checks and Balances:

- अमेरिकी शासन प्रणाली में शक्ति के विभिन्न अंगों के बीच संतुलन बनाए रखने की प्रणाली।

12. Bill of Rights:

- 1791 में जोड़े गए पहले दस संवैधानिक संशोधन – जिसमें अभिव्यक्ति, धर्म, सभा और हथियार रखने जैसे नागरिक अधिकार निहित हैं।

13. Enlightenment (प्रबोधन युग):

- 18वीं सदी का वैचारिक आंदोलन जिसने अमेरिकी क्रांति को वैचारिक आधार दिया – जॉन लॉक, रूसो, मोंतेस्क्यू इसके प्रमुख विचारक थे।

14. Common Sense:

- थॉमस पेन द्वारा रचित प्रसिद्ध पैम्फलेट जिसने आम जनता को ब्रिटिश शासन के विरुद्ध खड़ा होने की वैचारिक प्रेरणा दी।

15. Valley Forge:

- 1777–78 की सर्दियों में अमेरिकी सेना का कठोर शिविर – वॉशिंगटन की सेनापतित्व में साहस और अनुशासन का प्रतीक।

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

Ch - 4 फ्रांसीसी राज्य क्रांति (1789–1799)

4.1 क्रांति का परिचय (Introduction)
4.2 क्रांति के प्रमुख कारण (Causes of the French Revolution)
4.3 फ्रांसीसी क्रांति के विभिन्न चरण (Phases of the French Revolution)
4.4 फ्रांसीसी क्रांति का स्वरूप (Nature of the French Revolution)
4.5 फ्रांसीसी क्रांति की प्रमुख विशेषताएँ (Key Features of the French Revolution)
4.6 फ्रांसीसी क्रांति के प्रभाव (Impact of the French Revolution)
4.7 फ्रांसीसी क्रांति का योगदान (Legacy & Contributions of the French Revolution)
4.8 महत्वपूर्ण कथन (Notable Quotes)
4.9 शब्दावली

4.1 क्रांति का परिचय (Introduction)

• **फ्रांसीसी क्रांति** 1789 में आरंभ हुई और 1799 तक चली। यह यूरोप ही नहीं, बल्कि समूचे विश्व के सामाजिक, राजनीतिक और वैचारिक इतिहास में एक निर्णायक मोड़ था। यह क्रांति उन सभी परंपरागत व्यवस्थाओं के विरुद्ध विद्रोह थी जो सदियों से समाज पर शासन कर रही थीं।

• यह केवल एक राजनीतिक क्रांति नहीं थी, बल्कि **समाज के ढांचे**, **राज्य की अवधारणा**, **अधिकारों की परिभाषा**, और **नागरिकता के सिद्धांत** को नया आकार देने वाला व्यापक परिवर्तन था।

• यह क्रांति मुख्यतः **तीसरे वर्ग (Tiers État)** — जिसमें किसान, व्यापारी, कारीगर, मजदूर, बुद्धिजीवी शामिल थे — द्वारा **पहले (पादरी) और दूसरे (कुलीन)** वर्ग के शोषण, विशेषाधिकार और निरंकुश शासन के विरुद्ध किया गया सशक्त जन-उभार था।

• **बास्तील किले** पर 14 जुलाई 1789 को जनता के कब्जे ने क्रांति की चिंगारी को ज्वाला में बदला और यह दिन आज भी **फ्रांस का राष्ट्रीय दिवस** (Bastille Day) के रूप में मनाया जाता है।

• इसका केंद्रीय नारा — **"Liberté (स्वतंत्रता), Égalité (समानता), Fraternité (बंधुत्व)"** — मानव अधिकारों, लोकतंत्र और आधुनिक राष्ट्र-राज्य की नींव बना।

• फ्रांसीसी क्रांति ने **राजशाही के दैवी अधिकार सिद्धांत** को खंडित कर जनता को **राज्य की संप्रभुता का वास्तविक स्रोत** माना और **लोकतांत्रिक शासन प्रणाली** की शुरुआत की।

• **"Ancien Régime"** — अर्थात पुरानी शासन व्यवस्था जिसमें पादरी और कुलीन वर्ग को विशेषाधिकार प्राप्त थे, उसका विधिवत अंत कर **गणराज्य** की स्थापना की गई।

• क्रांति के दौरान पारित "**मानव और नागरिक अधिकारों की उद्घोषणा (Declaration of the Rights of Man and of the Citizen, 1789)**" विश्व में नागरिक स्वतंत्रताओं की आधारशिला बनी।

• यह क्रांति प्रेरणा बनी —

→ **अमेरिकी क्रांति** के बाद वैश्विक जन आंदोलनों के लिए,

→ **लैटिन अमेरिकी, एशियाई और अफ्रीकी** उपनिवेशों में स्वतंत्रता की चेतना के लिए,

→ और आधुनिक युग के लिए जिसमें **लोकतंत्र**, **नागरिक अधिकार**, और **विधिक समानता** केंद्र में हैं।

4.2 क्रांति के प्रमुख कारण (Causes of the French Revolution)

• फ्रांसीसी क्रांति की पृष्ठभूमि में विविध कारण कार्य कर रहे थे — ये केवल तत्कालीन परिस्थितियों के परिणाम नहीं थे, बल्कि लंबे समय से समाज, अर्थव्यवस्था, विचारधारा व शासन व्यवस्था में जमा विसंगतियों का संगठित विस्फोट था:

A. राजनीतिक कारण (Political Causes):

• **निरंकुश राजतंत्र (Absolutism)** – लुई XVI ने 'दैवी अधिकार सिद्धांत' के तहत शासन किया, जिसमें राजा को ईश्वर का प्रतिनिधि मानकर वह किसी उत्तरदायित्व या जनमत से ऊपर था।

• **Estates-General का 175 वर्षों तक न बुलाया जाना** – यह संसद-सदृश संस्था थी, परंतु इसे आखिरी बार 1614 में बुलाया गया था; जनता की भागीदारी लगभग शून्य थी।

• **राजदरबार का भ्रष्टाचार व विलासिता** – वर्साय महल के खर्च, रानी मैरी एंटोनेट की फिजूलखर्ची व 'Let them eat cake' जैसे कथन जन आक्रोश के प्रतीक बने।

• **कानून का विभाजन** – कुलीनों व पादरियों को दंडों से छूट, तृतीय वर्ग पर कठोर दंड व अन्यायपूर्ण निर्णय।

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

B. फ्रांसीसी क्रांति के सामाजिक कारण (Social Causes of the French Revolution)

1. त्रिस्तरीय समाज व्यवस्था (Three Estates System):

- फ्रांसीसी समाज **सदियों पुरानी सामंती संरचना** पर आधारित था जिसमें समाज को तीन वर्गों (Estates) में विभाजित किया गया था:

• **प्रथम वर्ग (First Estate – Clergy):**

- यह वर्ग **कैथोलिक चर्च के पादरियों** से बना था, जो केवल **0.5–1% जनसंख्या** था।
- उनके पास **चर्च की विशाल संपत्ति (10% तक भूमि)** थी और वे लगभग **करमुक्त** थे।
- इन्हें **दसवाँ हिस्सा (Tithe)** कर के रूप में आम जनता से प्राप्त होता था।
- धार्मिक और नैतिक अधिकारों के अलावा **राजनीतिक प्रभाव** भी अत्यधिक था।

• **द्वितीय वर्ग (Second Estate – Nobility):**

- इसमें **कुलीन वर्ग, ज़मींदार, उच्च प्रशासनिक व सैन्य अधिकारी** शामिल थे – लगभग **1–1.5% जनसंख्या**।
- इनके पास भी **25–30% भूमि**, विशेषाधिकार, और **कर से छूट** थी।
- राज्य के उच्च पद इन्हीं के लिए आरक्षित थे।
- वे न्यायालयों में विशेष प्रक्रिया से गुजरते थे और **श्रमिकों से जबरन सेवा (Corvée)** लेने का अधिकार रखते थे।

• **तृतीय वर्ग (Third Estate):**

- यह वर्ग **98% जनसंख्या** का प्रतिनिधित्व करता था और सबसे अधिक **शोषित** था।
- इसमें **किसान, मजदूर, कारीगर, व्यापारी, बुर्जुआ वर्ग** शामिल थे।
- इन्हें सभी प्रकार के **करों (Taille, Gabelle, Corvée)** का भुगतान करना पड़ता था, परंतु इन्हें कोई **राजनीतिक अधिकार या प्रतिनिधित्व** प्राप्त नहीं था।
- भू-स्वामी नहीं थे, पर **उपज का बड़ा भाग सामंतों को देना पड़ता था**।

2. सामाजिक गतिशीलता पर पूर्ण अवरोध:

• **योग्यता, शिक्षा या धन के बल पर** भी तृतीय वर्ग के लोग **प्रथम या द्वितीय वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकते थे**।

• यह व्यवस्था पूर्णतः जन्म आधारित थी, जिसने **मानव गरिमा व समान अवसर के सिद्धांत** को कुचल दिया।

• बुर्जुआ वर्ग (व्यापारी, वकील, डॉक्टर), जो आर्थिक रूप से सक्षम था, परंतु **राजनीतिक और सामाजिक अधिकारों से वंचित** था – यह असंतोष क्रांति का नेतृत्व बना।

3. जीवन स्तर की चरम विषमता:

• **कुलीन वर्ग** विलासितापूर्ण जीवन व्यतीत करते थे – वर्साय महल, उच्च भोजन, महंगी पोशाकें।

• वहीं **किसानों और मजदूरों** को ब्रेड तक के लिए संघर्ष करना पड़ता था – 1788–89 में खाद्यान्न संकट के दौरान ब्रेड की कीमतें दोगुनी हो गई थीं।

• गांवों में **भुखमरी, कर्ज़, बंधुआगिरी**, और शहरों में **बेरोजगारी व महंगाई** व्याप्त थी।

• यह **सामाजिक अन्याय की गहरी खाई** फ्रांसीसी समाज की विस्फोटक स्थिति का कारण बनी।

4. सामाजिक सम्मान और न्याय की असमानता:

• न्यायालयों में भी **कुलीनों को विशेषाधिकार** प्राप्त थे – वे साधारण दंड प्रक्रिया से मुक्त रहते थे।

• तृतीय वर्ग को कठोर कर कानूनों और दंड का सामना करना पड़ता था, जबकि प्रथम व द्वितीय वर्ग **राज्य से संरक्षण प्राप्त** करते थे।

• यह **"एक ही अपराध के लिए अलग-अलग दंड"** जैसी व्यवस्था थी, जो **नैतिक असंतोष और विद्रोह की भावना** को बढ़ाती गई।

5. सामंती मानसिकता और संचार की क्रांति:

• कुलीन वर्ग जनता को *"प्रजा"* के रूप में देखता था – **समान नागरिकता की धारणा अनुपस्थित** थी।

• छापेखानों, पत्रिकाओं और बौद्धिक लेखन के प्रसार से जनता ने इन **विषमताओं को पहचानना और चुनौती देना शुरू किया**।

• यह बौद्धिक और सामाजिक चेतना का सम्मिलन क्रांति की ज़मीन बना।

C. **फ्रांसीसी क्रांति के आर्थिक कारण (Economic Causes of the French Revolution)**

1. अमेरिकी क्रांति में हस्तक्षेप से वित्तीय दिवालियापन:

• फ्रांस ने 1775–83 की **अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम** में ब्रिटेन के विरोध में अमेरिका की सहायता की।

• यह सहायता सैन्य, आर्थिक और राजनीतिक सभी स्तरों पर दी गई, जिससे **फ्रांस पर लगभग 1.3 अरब livres (फ्रांसीसी मुद्रा)** का ऋण चढ़ गया।

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

• पहले से ही कर्ज में डूबा राजकोष इस खर्च को **राजस्व वृद्धि के बिना वहन नहीं कर सका** और ऋण सेवा (debt servicing) असहनीय हो गई।

• इस विदेशी युद्ध में **न कोई तत्काल लाभ मिला, न कोई आंतरिक सुधार हुआ**, जिससे **राज्य दिवालियेपन की कगार पर पहुँच गया।**

2. कर व्यवस्था में घोर असमानता:

• **प्रथम (पादरी) और द्वितीय (कुलीन) वर्ग** – कुल मिलाकर 2% जनसंख्या – **पूरी तरह करमुक्त** थे।

• **तृतीय वर्ग** – जो 98% जनसंख्या को समाहित करता था – पर सभी प्रकार के **प्रत्यक्ष व परोक्ष करों का बोझ** था:

- **Taille** – भूमि कर
- **Gabelle** – नमक कर
- **Corvée** – जबरन श्रम
- **Aides और Octroi** – शराब, घरेलू वस्तुओं और व्यापार पर कर

• यह कर व्यवस्था न केवल अन्यायपूर्ण थी, बल्कि **राजस्व जुटाने में भी अक्षम**, क्योंकि जो वर्ग अधिक संपन्न था, वह **पूरी तरह छूट प्राप्त** था।

3. खाद्यान्न संकट और महंगाई (1788–89):

• **1788 की भीषण सर्दी और फसल बर्बादी** के कारण देश में खाद्यान्न की भारी कमी हो गई।

• **गेहूं और ब्रेड** की कीमतों में तीव्र वृद्धि हुई – जो आमजन के लिए मुख्य आहार था।

• ब्रेड की कीमत **दोगुनी–तीन गुनी** हो गई; गरीब जनता **भूखमरी और दंगे** की स्थिति में पहुँच गई।

• इसी संकट से उपजा था **महिलाओं का वर्साय मार्च (5 अक्टूबर 1789)** जिसमें उन्होंने राजा से ब्रेड की माँग की।

4. वित्तीय पारदर्शिता और नेकर की रिपोर्ट:

• वित्त मंत्री **जैक नेकर (Jacques Necker)** ने **राजकोषीय घाटे और कर्ज की जानकारी पहली बार जनता के सामने रखी** (Compte rendu au Roi, 1781)।

• इससे जनता को पहली बार ज्ञात हुआ कि **राजा और दरबार का विलासिता पूर्ण जीवन** किस कीमत पर चल रहा है – **जनता के करों से**।

• नेकर द्वारा सुधार की कोशिशें (कर सुधार, कर्ज़ पुनर्गठन) **कुलीन वर्गों के विरोध के कारण असफल** रहीं।

• जनता ने पहली बार **राज्य के वित्तीय संकट को अपनी आर्थिक पीड़ा से जोड़कर देखना शुरू किया**।

5. राजकोषीय घाटा और संसाधनहीनता:

• लगातार बढ़ते **राजकोषीय घाटे** (Deficit) और **राजस्व स्रोतों की असमानता** ने राज्य को **ऋण लेने के लिए बाध्य** किया।

• केवल ब्याज भुगतान में ही **राजस्व का आधे से अधिक भाग खर्च** होने लगा।

• राज्य को राहत देने का एकमात्र उपाय – **Estates-General की बैठक बुलाना** पड़ा, जिससे क्रांति की शुरुआत हुई।

6. आर्थिक असमानता व उपभोग की विषमता:

• एक ओर कुलीन वर्ग व दरबार के लोग **वर्साय जैसे महलों में ऐश्वर्यपूर्ण जीवन** जी रहे थे, वहीं तृतीय वर्ग **रोटी के लिए संघर्षरत** था।

• यह दृश्य विषमता जनता के आक्रोश को विद्रोह में बदलने के लिए पर्याप्त थी।

D. फ्रांसीसी क्रांति के वैचारिक कारण (Intellectual Causes of the French Revolution)

1. सामाजिक अनुबंध और लोकप्रिय संप्रभुता – जॉन लॉक व रूसो:

• **जॉन लॉक** (1632–1704) ने राज्य की वैधता को **जनता की सहमति** पर आधारित बताया। उनका विचार था कि यदि शासक **प्राकृतिक अधिकारों** – जीवन, स्वतंत्रता, संपत्ति – का हनन करे, तो जनता को उसे हटाने का अधिकार है।

• **जाँ जैक रूसो** (1712–1778) ने "**Social Contract**" (1762) में कहा – *"Man is born free, but everywhere he is in chains"*।

→ उन्होंने '**लोकप्रिय संप्रभुता (Popular Sovereignty)**' का सिद्धांत दिया – सत्ता का स्रोत केवल जनता है, न कि राजा या ईश्वर।

→ इन विचारों ने **राजतंत्र की वैधता को सीधी चुनौती दी** और **गणराज्य की वैचारिक नींव** रखी।

2. धार्मिक सहिष्णुता व विवेक का समर्थन – वोल्टेयर:

• **वोल्टेयर** (1694–1778) फ्रांस के सबसे प्रभावशाली दार्शनिकों में थे जिन्होंने चर्च के अंधधार्मिक वर्चस्व और असहिष्णुता की तीव्र आलोचना की।

• उन्होंने **धार्मिक स्वतंत्रता, विवेक, नैतिक तर्क, अभिव्यक्ति की आज़ादी** और **प्रेस की स्वतंत्रता** के

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

पक्ष में आवाज़ उठाई।

• उनका प्रसिद्ध कथन – *"I disapprove of what you say, but I will defend to the death your right to say it."* – **व्यक्तिगत स्वतंत्रता का मूलमंत्र** बना।

• उनकी लेखनी ने **चर्च की निरंकुशता** को वैचारिक चुनौती दी और **धर्मनिरपेक्षता की भूमिका** तैयार की।

3. शक्तियों का विभाजन – मोंतेस्क्यू:

• **मोंतेस्क्यू** (1689–1755) ने अपनी कृति *"The Spirit of Laws" (1748)* में राज्य के **तीन अंगों – विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका** – का स्पष्ट पृथक्करण सुझाया।

• उन्होंने कहा कि यदि ये शक्तियाँ एक ही संस्था के पास हों, तो अत्याचार निश्चित है।

• उनका यह सिद्धांत फ्रांसीसी संविधान (1791) और बाद के सभी **लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं का आधार बना**।

→ यह विचार बाद में **अमेरिकी संविधान और भारतीय संविधान** में भी प्रमुख रूप से समाहित हुआ।

4. ज्ञान, तर्क और वैज्ञानिक दृष्टिकोण – एनसाइक्लोपीडिस्ट्स:

• **डेनिस डिडरोट, दालेम्बर्ट** और अन्य दार्शनिकों ने मिलकर **Encyclopédie (1751–1772)** प्रकाशित की – यह फ्रांस का पहला वैचारिक ग्रंथ था जिसमें **धर्म, विज्ञान, कला, राजनीति, इतिहास** जैसे विषयों की तर्कपूर्ण व्याख्या की गई।

• इस आंदोलन ने **आधुनिक बौद्धिक चेतना को जन्म** दिया।

• यह **प्रबोधन युग (Age of Enlightenment)** का प्रतीक बना जिसने *'सत्य परंपरा में नहीं, अनुभव और तर्क में है"* – यह धारणा स्थापित की।

5. "कुलीनता और पादरियों की अत्याचारी व्यवस्था" के विरुद्ध बौद्धिक आंदोलन:

• वैचारिक दृष्टिकोण से **"Tyranny of the Clergy and Nobility"** के विरुद्ध लेखन का प्रवाह तेज़ हुआ।

• इन विचारकों ने शोषण, कर छूट, सामाजिक विषमता व कानूनी विशेषाधिकारों को **अनैतिक, अप्राकृतिक और अवैध** घोषित किया।

• यह आंदोलन **क्रांति के विचारात्मक पृष्ठभूमि का निर्माण** था जिसमें **राज्य के पुनर्निर्माण** की कल्पना निहित थी।

E. **अन्य कारण (Other Causes):**

• **छापेखाने व प्रेस की भूमिका** – विचारों का तीव्र प्रसार, रोबेस्पीयर, मिराबो, डैंटन जैसे नेताओं की अपील व जागरण।

• **बुर्जुआ वर्ग (Middle Class)** का उदय – व्यापारी, पेशेवर वर्ग, शिक्षित व संपन्न परंतु राजनीतिक अधिकारों से वंचित – इन्हीं के नेतृत्व में क्रांति फलीभूत हुई।

• **अंग्रेज़ी क्रांति (1688) व अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम (1776)** की सफलता ने लोकतंत्र की संभावनाओं को यथार्थ में बदलने की प्रेरणा दी।

• **राज्य की प्रशासनिक अक्षमता व नीति स्थायित्व की कमी** – बार-बार मंत्रियों का बदला जाना (तुरगो, नेकर, कालोन), संकट को और गंभीर बनाता गया।

4.3 फ्रांसीसी क्रांति के विभिन्न चरण (Phases of the French Revolution)

चरण 1: जनक्रांति और राष्ट्रीय सभा का युग (1789–1791)

पृष्ठभूमि व प्रकृति:

• यह चरण क्रांति की **शुरुआत** का प्रतीक था, जब **तृतीय वर्ग (Third Estate)** ने मौजूदा राजनीतिक व्यवस्था को **लोकतांत्रिक मूल्यों** से प्रतिस्थापित करने का प्रयास किया। यह चरण अपेक्षाकृत **गैर-हिंसक, संवैधानिक व सुधारवादी** था और इसका नेतृत्व **बुर्जुआ वर्ग** (व्यापारी, पेशेवर, बुद्धिजीवी) ने किया।

प्रमुख घटनाएँ:

• **5 मई 1789** – **Estates-General** की बैठक: 175 वर्षों बाद बुलाई गई, परंतु मतगणना में असमानता (प्रत्येक वर्ग को एक मत) तृतीय वर्ग में असंतोष फैला।

• **17 जून 1789** – **तृतीय वर्ग द्वारा 'राष्ट्रीय सभा' की घोषणा**: स्वयं को राज्य के प्रतिनिधि के रूप में घोषित किया।

• **20 जून 1789** – **Tennis Court Oath**: राष्ट्रीय सभा ने शपथ ली कि जब तक नया संविधान नहीं बन जाता, वे सभा नहीं छोड़ेंगे।

• **14 जुलाई 1789** – **बास्तील दुर्ग पर आक्रमण**:

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

क्रांति की निर्णायक शुरुआत; राजा की निरंकुशता के विरुद्ध आमजन का पहला सशस्त्र प्रदर्शन।

- **4 अगस्त 1789 – सामंती विशेषाधिकारों का औपचारिक अंत**: कुलीनों व पादरियों की कर-छूट व सामाजिक विशेषाधिकार समाप्त किए गए।
- **26 अगस्त 1789 – "Declaration of the Rights of Man and of the Citizen"**:
  → अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता
  → विधि के समक्ष समानता
  → संपत्ति का अधिकार
  → मनमानी गिरफ्तारी पर रोक
- **3 सितम्बर 1791 – प्रथम संविधान लागू**:
  → संवैधानिक राजतंत्र की स्थापना
  → राजा की शक्तियाँ सीमित
  → विधान सभा का निर्माण
  → मताधिकार सीमित (केवल संपन्न नागरिकों को)

मुख्य विशेषताएँ:

- **निरंकुश राजसत्ता की आलोचना** व नियंत्रण का प्रयास
- **शक्तियों का विभाजन** – कार्यपालिका (राजा), विधायिका (राष्ट्रीय सभा), न्यायपालिका स्वतंत्र
- **समान कराधान व्यवस्था** का सूत्रपात – सभी नागरिकों पर कर दायित्व
- **चर्च की संपत्ति का राष्ट्रीयकरण (Nationalization of Church Lands)** – राजकोष की भरपाई हेतु
- **धर्मनिरपेक्षता की नींव** – चर्च की शक्ति व स्वतंत्रता सीमित हुई
- **समाज में कानून की समता** – कानूनी विशेषाधिकारों की समाप्ति
- **राजा का अस्थिर समर्थन** – राजा ने संविधान को स्वीकार किया, परन्तु वास्तव में इससे असंतुष्ट था

चरण 2: गणराज्य व कट्टरपंथी जैकॉबिन युग (1792–1794)

(कट्टरपंथी, जनवादी, हिंसक; जनतंत्रात्मक क्रांति का चरम लेकिन रक्तरंजित दौर)

पृष्ठभूमि व स्वरूप

- यह चरण **राजशाही के पूर्ण उन्मूलन** और **गणराज्य की स्थापना** से शुरू होकर, कट्टरपंथी याकॉबिनों के अधीन **जनवाद और सामाजिक समानता के प्रयासों** में बदल गया।
- इसमें रोबेस्पीयर, डैंटन, मारात जैसे नेता उभरे जिन्होंने *"लोकतंत्र की रक्षा के लिए आतंक आवश्यक है"* जैसे विचारों को वैधता दी।
- यह चरण फ्रांसीसी क्रांति का सबसे हिंसक व दमनकारी युग रहा जिसे **Reign of Terror** कहा गया।

प्रमुख घटनाएँ:

- **10 अगस्त 1792** – पेरिस की भीड़ ने **राजमहल पर धावा बोला**, राजा लुई XVI को पदच्युत कर **गिरफ्तार** किया गया।
- **21 सितम्बर 1792 – प्रथम गणराज्य की घोषणा** (Abolition of Monarchy)। राष्ट्रीय सम्मेलन (National Convention) का गठन।
- **21 जनवरी 1793 – लुई XVI का गिलोटिन से वध**, देशद्रोह के आरोप में। यह घटना यूरोपीय राजतंत्रों को चौंका गई।
- **अप्रैल 1793 – जनतंत्रात्मक सुरक्षा समिति (Committee of Public Safety)** की स्थापना – मुख्य नेतृत्व **रोबेस्पीयर** के हाथों में।
- **1793–94 – "आतंक का शासन (Reign of Terror)"**:
  → किसी भी विरोध या आलोचना को देशद्रोह माना गया
  → अनुमानतः **16,000 से अधिक लोगों को गिलोटिन** से मृत्यु दंड
  → रानी **मैरी एंटोनेट**, नेता **डैंटन**, लेखक **ओलंप डी गूज** तक को मारा गया
  → चर्चों को बंद किया गया, **"ईश्वरहीन गणराज्य"** की अवधारणा लागू की गई
- **जून 1794** – "महान आतंक" की शुरुआत – दमन चरम पर
- **27 जुलाई 1794 (9 Thermidor) – रोबेस्पीयर और अनुयायियों की गिरफ्तारी और गिलोटिन द्वारा वध** – आतंक का अंत

मुख्य विशेषताएँ (Key Features):

- **जैकॉबिन नेतृत्व का प्रभुत्व:**
  - *Maximilien Robespierre* – जनता का स्वघोषित रक्षक, परंतु क्रूर शासक
  - *Georges Danton, Jean-Paul Marat* – जनक्रांति के उग्र प्रवक्ता

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

- **राजनीतिक व्यवस्था:**
  - संविधान 1793 पारित – सर्वसामान्य मताधिकार की घोषणा (लेकिन लागू नहीं हो सका)
  - *राष्ट्रीय सम्मेलन (National Convention)* द्वारा सत्ता का केंद्रीकरण
- **सामाजिक व आर्थिक उपाय:**
  - **Price controls (Maximum laws)** – वस्तुओं की कीमत तय
  - **Land redistribution** – कुलीनों की ज़मीन गरीबों में बांटने का प्रयास
  - **राजकीय स्कूल, धर्मनिरपेक्ष पाठ्यक्रम** व कैलेंडर का पुनर्निर्माण (Republican Calendar)
- **धर्मनिरपेक्षता व धर्म विरोध:**
  - चर्चों की सम्पत्ति जब्त, धार्मिक प्रतीकों को हटाया गया
  - ईसाई धर्म के स्थान पर *"Cult of Reason"* और *"Cult of the Supreme Being"* जैसे दार्शनिक पंथों को बढ़ावा
- **गिलोटिन संस्कृति (Guillotine Culture)**
  - **राज्य प्रायोजित मृत्युदंड का यंत्र:** गिलोटिन को 1792 में फ्रांस में आधिकारिक मृत्युदंड उपकरण बनाया गया; इसे *"मानवता की दृष्टि से कम पीड़ादायक"* बताया गया।
  - **आतंक का प्रतीक (Reign of Terror):** 1793–94 के याकॉबिन शासनकाल में इसका व्यापक प्रयोग हुआ; रोबेस्पीयर की जनतंत्रात्मक सुरक्षा समिति ने हजारों को "राजद्रोही" कहकर गिलोटिन से मरवाया।
  - **लोक दर्शन और सार्वजनिक प्रदर्शन:** गिलोटिन पर दी जाने वाली सजाएं *जन सभा के सामने* दी जाती थीं – जिससे यह *न्याय का सार्वजनिक प्रदर्शन* बन गया।
  - **राजनीतिक दमन का औज़ार:** क्रांतिकारी नेताओं, जिरोंदिनों, कुलीनों, यहां तक कि रोबेस्पीयर जैसे कट्टर याकॉबिन भी इसके शिकार बने; यह *क्रांति के आत्मविनाश* का प्रतीक बन गया।
  - **सांस्कृतिक प्रभाव:** "गिलोटिन संस्कृति" एक *मानसिक स्थिति* बन गई जहाँ असहमति का दमन हिंसा से होता था; इससे जनता में भय व दमन की भावना व्याप्त हुई।

आतंक का शासन (Reign of Terror, 1793–94)

(फ्रांसीसी क्रांति का सबसे उग्र, हिंसक और दमनकारी चरण)

- **समयावधि व नेतृत्व:**
  1793 से 1794 के बीच चला यह चरण **याकॉबिनों के नेतृत्व** में हुआ, विशेषतः **मैक्सिमिलियन रोबेस्पीयर** द्वारा संचालित जनतंत्रात्मक सुरक्षा समिति के अधीन।
- **गिलोटिन का संस्थागत प्रयोग:**
  इस काल में **राजद्रोहियों, कुलीनों, पादरियों, जिरोंदिनों और आम जनता तक** को गिलोटिन से दंडित किया गया। अनुमानतः **40,000 से अधिक लोगों की मृत्यु** हुई।
- **Law of Suspects (1793):**
  यह कानून **किसी भी संदिग्ध व्यक्ति को बिना मुकदमा चलाए गिरफ्तार व दंडित** करने की अनुमति देता था – जिससे न्याय प्रक्रिया निरंकुश हो गई।
- **लोकतंत्र से तानाशाही की ओर झुकाव:**
  क्रांति की मूल अवधारणाओं – स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व – को दरकिनार कर याकॉबिन तंत्र **कट्टरपंथी अधिनायकवाद** में बदल गया।
- **Thermidorian Reaction और अंत:**
  27 जुलाई 1794 (9 Thermidor) को **रोबेस्पीयर को भी गिलोटिन पर चढ़ा दिया गया**, जिससे आतंक का शासन समाप्त हुआ और याकॉबिन युग का अंत हुआ।

चरण 3: डायरेक्टरी शासन (1795–1799)

(बुर्जुआ वर्ग का प्रभुत्व, सीमित लोकतंत्र, राजनीतिक अस्थिरता व सैन्य हस्तक्षेप की भूमिका में वृद्धि)

- डायरेक्टरी युग क्रांति के उस संक्रमणकाल को दर्शाता है जिसमें एक ओर क्रांतिकारी उत्साह ठंडा पड़ चुका था, वहीं दूसरी ओर कोई स्थायी व सक्षम शासन व्यवस्था स्थापित नहीं हो सकी।
- यह चरण राजनीतिक थकान, वर्गीय विभाजन, आर्थिक संकट और शक्ति के केंद्रीकरण की भूमिका में था, जिसने अंततः नेपोलियन बोनापार्ट को तख्तापलट के माध्यम से सत्ता में आने का अवसर दिया।

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

पृष्ठभूमि:

• रोबेस्पीयर की मृत्यु (1794) के बाद याकॉबिनों का पतन हुआ और क्रांति ने **कट्टरपंथ से वापस उदारवाद की ओर** मुड़ना शुरू किया।

• क्रांति की अराजकता और आतंक के बाद नया संविधान लागू किया गया ताकि **राजनीतिक स्थिरता** लाई जा सके और **बुर्जुआ वर्ग** को सत्ता में पुनः लाया जा सके।

• यद्यपि यह चरण रक्तरंजित नहीं था, लेकिन इसमें **भ्रष्टाचार, असफल प्रशासन और सैन्य हस्तक्षेप** चरम पर रहे।

प्रमुख घटनाएँ (Major Events):

- **1795 – संविधान (Year III Constitution):**
  - दो सदनों वाली विधायिका: *Council of Five Hundred* व *Council of Ancients*
  - कार्यपालिका में पाँच सदस्यीय **डायरेक्टरी (Directory)** की स्थापना
  - मतदान के लिए संपत्ति आधारित योग्यता – गरीब वर्ग को बाहर कर दिया गया
  - याकॉबिनों और राजशाही समर्थकों – दोनों पर अंकुश
- **1796–97 – आर्थिक संकट और जन असंतोष:**
  - मुद्रास्फीति, खाद्य संकट, दंगा
  - याकॉबिन समर्थकों (Gracchus Babeuf) द्वारा **Conspiracy of Equals** – समाजवादी विद्रोह की विफलता
- **1797–98 – राजनीतिक द्वंद्व:**
  - डायरेक्टरी के भीतर आपसी अविश्वास
  - रॉयलिस्टों व कट्टरपंथियों का दमन
  - विधायिका पर सैन्य हस्तक्षेप – लोकतांत्रिक प्रक्रिया का हनन
- **नेपोलियन की भूमिका:**
  - **1796–97** – इटली में नेपोलियन की सफल सैन्य विजय
  - **1798** – मिस्र अभियान
  - जनता में **राजनीतिक अस्थिरता से त्रस्त होकर नेपोलियन की लोकप्रियता बढ़ी**

मुख्य विशेषताएँ (Key Features):

- **मध्यवर्गीय प्रभुत्व (Bourgeois Dominance):**
  - सत्ता फिर से उन व्यापारियों, अफसरों और संपन्न वर्ग के हाथ में जो याकॉबिन शासन में हाशिए पर थे।
- **सीमित लोकतंत्र:**
  - संपत्ति आधारित मताधिकार – केवल संपन्न नागरिकों को वोट देने का अधिकार
  - जनभागीदारी लगभग समाप्त – *लोकतंत्र केवल कागज़ों पर रह गया*
- **भ्रष्टाचार और प्रशासनिक विफलता:**
  - डायरेक्टरी के सदस्य व्यक्तिगत लाभ में लिप्त
  - नीतिगत अस्थिरता, आर्थिक अराजकता और राजनैतिक साजिशें प्रचलित
- **जन असंतोष और विद्रोह:**
  - रोटी और रोजगार के लिए जनता की मांगें अनसुनी
  - याकॉबिन व रॉयलिस्ट – दोनों असंतुष्ट
- **'संतुलन की राजनीति' की विफलता:**
  - याकॉबिन और राजशाही समर्थक ताकतों के बीच संतुलन बनाने का प्रयास असफल
  - अराजकता और भय के वातावरण में **सेना ही अंतिम निर्णायक शक्ति** बन गई

चरण 4: नेपोलियन का उदय और फ्रांसीसी क्रांति का अंत (1799)

(सैन्य अधिनायकवाद की स्थापना, क्रांति की औपचारिक समाप्ति, लेकिन सामाजिक-न्यायिक परिवर्तन संरक्षित रहे)

• नेपोलियन ने **फ्रांसीसी क्रांति को सैन्य स्थिरता व प्रशासनिक सुधारों** के साथ समाप्त किया।

हालाँकि **लोकतंत्र व स्वतंत्रता के मूल राजनीतिक आदर्श** कमजोर हो गए, लेकिन क्रांति के **सामाजिक, कानूनी और संस्थागत परिवर्तन** टिकाऊ सिद्ध हुए।

नेपोलियन क्रांति का उत्तराधिकारी भी था और अंतकर्ता भी। उसने क्रांति के अंतर्गत पैदा हुई **गणराज्य की ऊर्जा को सम्राट की सत्ता में समाहित कर दिया**।

पृष्ठभूमि:

• डायरेक्टरी शासन (1795–99) के दौरान **राजनीतिक अस्थिरता, आर्थिक संकट, और प्रशासनिक भ्रष्टाचार** ने जनतंत्र की वैधता को कमजोर कर दिया था।

• सेना की लोकप्रियता और प्रभाव बढ़ चुका था, विशेषकर **जनरल नेपोलियन बोनापार्ट** की सफल सैन्य विजयों (इटली, मिस्र) ने उसे **नायक की छवि** दी थी।

• जनता स्थायित्व की मांग कर रही थी और **क्रांति की थकान** अब एक **मजबूत नेतृत्व** चाहती थी।

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

प्रमुख घटनाएँ (Major Events):

- **9 नवम्बर 1799 (18 Brumaire, Year VIII)** –
  → **नेपोलियन का तख्तापलट (Coup d'état)**
  → सेना की मदद से नेपोलियन ने **डायरेक्टरी शासन को समाप्त** कर दिया
  → राष्ट्रीय विधायिका को भंग कर नया शासकीय ढांचा स्थापित
- **Consulate व्यवस्था की स्थापना (1799):**
  → तीन सदस्यीय 'कौंसुल' तंत्र की घोषणा – **नेपोलियन प्रथम कौंसुल** बने
  → नाम मात्र के सहयोगी कौंसुल, वास्तविक सत्ता नेपोलियन के पास
- **क्रांति का औपचारिक अंत:**
  → क्रांति द्वारा स्थापित गणराज्य अब **कागज़ पर ही सीमित**
  → **संवैधानिक गणराज्य से सैन्य अधिनायकवाद** में रूपांतरण
  → फ्रांसीसी क्रांति का दस वर्षीय युग समाप्त और **नेपोलियन युग का प्रारंभ**

मुख्य विशेषताएँ (Key Features):

- **क्रांति के मूल राजनीतिक आदर्शों का क्षय:**
  → *लोकतंत्र, सार्वभौम मताधिकार और सत्ता का विकेंद्रीकरण* – समाप्त या सीमित
  → विधायिका का प्रभाव क्षीण, प्रेस सेंसरशिप लागू
  → विपक्ष और आलोचना का दमन
- **सत्ता का केंद्रीकरण:**
  → नेपोलियन ने 1802 में **आजीवन कौंसुल**, और 1804 में **फ्रांस का सम्राट (Emperor)** घोषित किया
  → कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका में केंद्रीकरण
- **स्थायित्व और प्रशासनिक सुधार:**
  → **Napoleonic Code (1804)** – समान नागरिक संहिता:
    - कानून के समक्ष समानता
    - संपत्ति अधिकार की सुरक्षा
    - जन्म आधारित विशेषाधिकारों की समाप्ति
      → प्रशासनिक केंद्रीकरण, राज्य संरचना का संगठनात्मक निर्माण
      → **बैंक ऑफ फ्रांस**, राजकोष नियंत्रण, न्यायिक सुधार
- **क्रांति की सामाजिक उपलब्धियाँ बरकरार:**
  → सामंती व्यवस्था समाप्त ही रही
  → चर्च और राज्य का पृथक्करण यथावत
  → योग्यता आधारित नौकरशाही व सैन्य प्रणाली
  → शिक्षा के क्षेत्र में **Lycée प्रणाली** (राजकीय माध्यमिक विद्यालय) की शुरुआत

4.4 फ्रांसीसी क्रांति का स्वरूप (Nature of the French Revolution)

1. जन आंदोलन और राजनीतिक क्रांति का संगम:

- फ्रांसीसी क्रांति **सामाजिक-सांस्कृतिक असमानता** के विरुद्ध एक **जन आधारित विद्रोह** थी, जिसमें **तृतीय वर्ग** – किसान, मजदूर, व्यापारी, शिक्षित मध्यवर्ग – ने न केवल आर्थिक शोषण के विरुद्ध बल्कि **राजनीतिक भागीदारी और अधिकारों** की मांग को लेकर संगठित आंदोलन किया।
- यह क्रांति **राजतंत्र और सामंती व्यवस्था** के खिलाफ थी, पर इसका उद्देश्य केवल शासक बदलना नहीं बल्कि **राज्य की संरचना को ही रूपांतरित करना** था।

2. बहुआयामी स्वरूप – एक साथ कई क्रांतियाँ:

- फ्रांसीसी क्रांति केवल **राजनीतिक क्रांति** नहीं थी – यह एक साथ **सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, वैचारिक और सांस्कृतिक क्रांति** भी थी:
  - **सामाजिक रूपांतरण:** त्रिस्तरीय समाज व्यवस्था का अंत
  - **आर्थिक परिवर्तन:** सामंती कर, श्रम बाध्यताओं और कुलीन विशेषाधिकारों की समाप्ति
  - **धार्मिक बदलाव:** चर्च की शक्ति सीमित, धर्मनिरपेक्ष राज्य की नींव
  - **वैचारिक क्रांति:** रूसो, वोल्टेयर, मोंतेस्क्यू जैसे चिंतकों के विचारों का राजनीतिक अनुवाद

3. गणराज्यवादी और लोकतांत्रिक स्वरूप:

- प्रारंभिक चरणों में क्रांति ने **संविधान निर्माण**, **मताधिकार**, **शक्तियों के विभाजन** और **मानव अधिकारों की उद्घोषणा** जैसे सिद्धांतों को अपनाकर **लोकतंत्र की स्थापना** का प्रयास किया।
- 1792 में **गणराज्य की घोषणा** और सार्वभौम मताधिकार जैसे निर्णयों से यह स्पष्ट हुआ कि क्रांति

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

का **प्रमुख स्वरूप गणराज्यवादी था**, जिसमें **राजा को जनता के अधीन** करना प्रमुख उद्देश्य बन गया।

4. हिंसा, आतंक और तानाशाही की ओर झुकाव:

- **1793–94** के *Reign of Terror* में क्रांति ने **लोकतांत्रिक मूल्यों से हटकर हिंसक और कट्टरपंथी स्वरूप** धारण कर लिया।
- **गिलोटिन** के माध्यम से न्याय की प्रक्रिया को दमन का माध्यम बना दिया गया।
- यह चरण दर्शाता है कि जब क्रांति **नैतिक दिशा से विचलित होती है**, तो वह **तानाशाही और अत्याचार में बदल सकती है**।
- अंततः **नेपोलियन के अधीन सत्ता का केंद्रीकरण** हुआ, जिसने क्रांति को सैन्य अधिनायकवाद में बदल दिया।

5. सामाजिक-आर्थिक न्याय की दिशा में कदम:

- भूमिहीन किसानों को ज़मीन मिली, करों में समानता आई, वंचित वर्ग को कानूनी संरक्षण मिला – ये सभी संकेत करते हैं कि क्रांति का स्वरूप **सामाजिक समानता और न्याय केंद्रित** भी था।
- वर्गीय अंतर्विरोध को समाप्त करने की क्रांतिकारी कोशिशें इसकी **गहन सामाजिक प्रकृति** को दर्शाती हैं।

6. अंतरराष्ट्रीय प्रभाव वाला वैश्विक स्वरूप:

- क्रांति का स्वरूप केवल फ्रांस तक सीमित नहीं रहा – **इसने यूरोप और उपनिवेशों में भी लोकतांत्रिक आंदोलनों की प्रेरणा दी।**
- इटली, जर्मनी, लैटिन अमेरिका, रूस, भारत – सभी ने किसी न किसी रूप में **फ्रांसीसी क्रांति के आदर्शों** से प्रेरणा ली।

इस प्रकार फ्रांसीसी क्रांति का स्वरूप एक **वर्गीय जन आंदोलन, लोकतांत्रिक प्रयोग, सामाजिक-आर्थिक न्याय की चेतना, और विचारधारात्मक परिवर्तन का सम्मिलित रूप** था।

हालांकि यह अपने मध्यकालीन आदर्शों से उबरकर **आधुनिक राज्य, समाज और नागरिकता** की स्थापना की दिशा में अग्रसर हुई, लेकिन **हिंसा और तानाशाही** की ओर इसका झुकाव भी इसकी **सीमाओं और अंतर्विरोधों** को उजागर करता है।

4.5 फ्रांसीसी क्रांति की प्रमुख विशेषताएँ (Key Features of the French Revolution)

1. राजनीतिक लोकतंत्रीकरण (Political Democratization):

- फ्रांसीसी क्रांति ने सत्ता को **राजा के दैवी अधिकार से हटाकर जनता के संप्रभु अधिकार** से जोड़ दिया।
- **मानव और नागरिक अधिकारों की उद्घोषणा (1789)** में स्वतंत्रता, समानता, कानून के समक्ष समानता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता जैसे अधिकारों को मान्यता दी गई।
- प्रतिनिधित्व आधारित शासन, मतदान और संवैधानिक व्यवस्था की अवधारणाएँ पहली बार व्यावहारिक रूप में सामने आईं।
- **संविधान 1791 व 1793** में मताधिकार की अवधारणा (संपत्ति आधारित व सार्वभौम) की शुरुआत हुई।

2. सामाजिक समानता (Social Equality):

- **त्रिस्तरीय सामाजिक संरचना** को समाप्त कर सभी नागरिकों को **कानून व करों के समक्ष समान** घोषित किया गया।
- पादरियों व कुलीनों को प्राप्त **कर-मुक्ति व विशेषाधिकार** समाप्त किए गए।
- सामंतों की ज़मींदारी प्रथा, श्रम बंधन और पारंपरिक प्रभुत्व तोड़े गए।
- *"Privileges of birth were replaced by rights of citizenship."*

3. धर्मनिरपेक्षता (Secularism):

- चर्च की संपत्ति जब्त कर उसे राज्य के नियंत्रण में लाया गया – **चर्च का राष्ट्रीयकरण**।
- **पादरियों को राज्य का कर्मचारी** घोषित किया गया (Civil Constitution of Clergy, 1790)।
- धर्म को राजनीति से पृथक किया गया – **राज्य को धार्मिक प्रभाव से मुक्त करने की कोशिश**।
- "Cult of Reason" व "Supreme Being" जैसे धर्म-परिवर्ती प्रयोग भी किए गए।
- क्रांति ने **आधुनिक धर्मनिरपेक्ष राज्य की नींव** रखी।

4. नारी चेतना का उदय (Rise of Feminist Consciousness):

- ओलंप डी गूज ने 1791 में **"स्त्री और नागरिक महिला अधिकारों की उद्घोषणा" (Declaration of the Rights of Woman and of the Female Citizen)** प्रकाशित की।

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

- इस दस्तावेज़ ने क्रांति की **पितृसत्तात्मक सीमाओं** को चुनौती दी और लैंगिक समानता की माँग रखी।
- महिलाओं ने रोटी के लिए **वर्साय मार्च**, राजनीतिक क्लबों में भागीदारी व शिक्षा के अधिकार की मांगें उठाईं।
- हालाँकि क्रांति ने महिलाओं को पूर्ण नागरिक अधिकार नहीं दिए, पर **आधुनिक नारीवाद की भूमिका यहीं से शुरू हुई।**

5. मानवाधिकारों की वैश्विक अवधारणा (Universal Human Rights):

- फ्रांसीसी क्रांति ने **व्यक्ति की स्वतंत्रता, संपत्ति, सुरक्षा, और उत्पीड़न के विरुद्ध प्रतिरोध** जैसे सिद्धांतों को सार्वभौमिक मूल्य के रूप में स्थापित किया।
- इसकी प्रेरणा से आगे चलकर **संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार घोषणा (1948)** और कई देशों के संविधान बने।
- इस क्रांति ने **अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक संस्कृति** में मानव अधिकारों को **एक अनिवार्य नैतिक और विधिक आधार** बना दिया।

6. कानूनी सुधार व नागरिक संहिता (Legal Reforms and Civil Code):

- क्रांति के फलस्वरूप **कानून को धर्म, जाति, जन्म व वर्ग से स्वतंत्र बनाया गया**।
- **Napoleonic Code (1804)** ने **एकरूप नागरिक संहिता** की नींव रखी:
  - समान नागरिक अधिकार
  - विवाह, संपत्ति, उत्तराधिकार के स्पष्ट नियम
  - सामंतवादी व परंपरागत कानूनों का उन्मूलन
- यह संहिता बाद में **यूरोप, लैटिन अमेरिका, और एशिया के अनेक देशों में विधिक प्रणाली की प्रेरणा** बनी।

फ्रांसीसी क्रांति की विशेषताएँ केवल तात्कालिक परिवर्तन नहीं थीं, बल्कि उन्होंने **आधुनिक राज्य की मूलभूत संरचना – लोकतंत्र, समानता, धर्मनिरपेक्षता, मानवाधिकार, कानून की सर्वोच्चता** – की स्थायी नींव रखी।

इन विशेषताओं ने न केवल फ्रांस को बदल डाला, बल्कि **पूरे विश्व के लिए आधुनिक शासन व नागरिकता की परिभाषा भी गढ़ी।**

4.6 फ्रांसीसी क्रांति के प्रभाव (Impact of the French Revolution)

A. फ्रांस पर प्रभाव (Impact on France)

1. राजतंत्र का अंत, गणराज्य की स्थापना:

- **लुई XVI की मृत्यु (1793)** के साथ सदियों पुराने **बोर्बन वंश** के निरंकुश राजतंत्र का अंत हुआ।
- 1792 में **प्रथम फ्रांसीसी गणराज्य की स्थापना** हुई, जिससे **लोकतांत्रिक शासन प्रणाली** का नया युग प्रारंभ हुआ।

2. सामंती व सामाजिक विशेषाधिकारों का अंत:

- **वर्ग आधारित सामाजिक ढांचे (Three Estates System)** का अंत हुआ।
- **कर व्यवस्था** समान बनी – कुलीन व पादरी वर्ग की कर छूट समाप्त।
- ज़मींदारी, श्रम-बंधन, जबरन सेवा जैसी प्रथाएँ समाप्त कर **समान नागरिकता** की नींव रखी गई।

3. राजनीतिक चेतना व राष्ट्रवाद का प्रसार:

- आम जनता को पहली बार **राजनीतिक भागीदारी** और **नागरिक अधिकारों** का बोध हुआ।
- **"हम फ्रांसीसी हैं"** जैसी पहचान उभरी – जिससे **आधुनिक राष्ट्रवाद** का सूत्रपात हुआ।

4. चर्च का प्रभाव घटा व धर्मनिरपेक्षता प्रबल:

- चर्च की संपत्तियाँ जब्त की गईं; धर्म को **राज्य से पृथक किया गया**।
- चर्च और पोप की शक्ति में भारी कमी आई, **राज्य की संप्रभुता सर्वोपरि** बनी।
- **धर्मनिरपेक्ष शासन और शिक्षा** का आरंभ हुआ।

B. यूरोप व विश्व पर प्रभाव (Impact on Europe and the World)

1. फ्रांसीसी आदर्शों का प्रसार – नेपोलियन के माध्यम से:

- नेपोलियन ने यूरोप में फ्रांसीसी सेना के साथ **गणतंत्र, समानता, विधिक सुधार, कर समानता** जैसे विचारों का प्रचार किया।
- **Napoleonic Code** यूरोपीय और लैटिन अमेरिकी देशों के लिए **आधुनिक नागरिक संहिता का मॉडल** बनी।

2. यूरोप में राष्ट्रवाद और जनतंत्रवाद की लहर:

- फ्रांसीसी क्रांति ने **राजवंशीय शासन के विरुद्ध जनसमर्थन आधारित राष्ट्र राज्य** की अवधारणा को जन्म दिया।
- इससे **इटली व जर्मनी के एकीकरण आंदोलन**, **रूस में क्रांति**, और **ब्रिटेन में सुधारवादी कानूनों** को बल मिला।

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

RAS मुख्य परीक्षा 2024-25

DATE	DAY	TOPICS
12-May	1	✓ GS I - Unit I
13-May	2	✓ GS I - Unit II
14-May	3	✓ GS I - Unit III
15-May	4	✓ GS II - Unit I
16-May	5	✓ GS II - Unit II
17-May	6	✓ GS II - Unit III
18-May	7	✓ GS III - Unit I
19-May	8	✓ GS III - Unit II
20-May	9	✓ GS III - Unit III
21-May	10	COMPLETE REVISION
22-May	11	FULL LENGTH TEST GS - 1
23-May	12	FULL LENGTH TEST GS - 2
24-May	13	COMPLETE REVISION
25-May	14	FULL LENGTH TEST GS - 3
26-May	15	FULL LENGTH TEST GS - 4
27-May	16	✓ GS I - Unit I
28-May	17	✓ GS I - Unit II
29-May	18	✓ GS I - Unit III
30-May	19	✓ GS II - Unit I
31-May	20	✓ GS II - Unit II
01-Jun	21	✓ GS II - Unit III
02-Jun	22	✓ GS III - Unit I
03-Jun	23	✓ GS III - Unit II
04-Jun	24	✓ GS III - Unit III
05-Jun	25	COMPLETE REVISION
06-Jun	26	FULL LENGTH TEST GS - 1
07-Jun	27	FULL LENGTH TEST GS - 2
08-Jun	28	COMPLETE REVISION
09-Jun	29	FULL LENGTH TEST GS - 3
10-Jun	30	FULL LENGTH TEST GS - 4

अंतिम 30 दिन

Daily Answer Writing Practice

Daily Unit-Wise Answer Writing Tests

- GS Paper 1, 2, 3 — सभी पेपर की हर यूनिट कवर की जाएगी
- प्रत्येक unit का सम्पूर्ण टेस्ट, सिलेबस का पूरा कवरेज

Daily Class Test Discussion

- प्रत्येक टेस्ट के बाद Classroom + Live Discussion
- Best answer approach + structure & keywords

Personalized Mentorship

- प्रत्येक छात्र को Daily Guidance By Kritika Gaur (RAS 2021)
- Answer Writing , presentation & time management पर सुधार

8 Full Length Test - GS I, II, III & IV

- सभी पेपर - RPSC परीक्षा पैटर्न पर आधारित
- Daily - Unit 1, Unit 2, Unit 3 — तीनों पेपर के सभी यूनिट्स

12 May से 10 June

Schedule

Kritika Gaur

RAS 2021 - Rank 201 (SP Rank - 1)

शुल्क:- 4999/-

ऑफलाइन सेंटर Under Triveni Puliya, Gopalpura Jaipur

+91 9785606061

@RiseJaipur

3. उपनिवेशों में स्वतंत्रता आंदोलनों को प्रेरणा:

- **लैटिन अमेरिकी देश**, जैसे अर्जेंटीना, चिली, पेरू – फ्रांसीसी क्रांति से प्रेरित होकर स्पेन से स्वतंत्र हुए।
- भारत में **राजा राममोहन राय**, **दयानंद सरस्वती**, और **क्रांतिकारी संगठनों** ने इसके आदर्शों का उल्लेख किया।
- **"स्वराज" और "जन-स्वतंत्रता"** जैसे विचारों को वैधता मिली।

4. आधुनिक संविधानों और मानवाधिकार घोषणाओं पर प्रभाव:

- **अमेरिकी संविधान (1787)** पहले आया, लेकिन **फ्रांसीसी क्रांति की घोषणाओं ने उसे आदर्श रूप** दिया।
- **संयुक्त राष्ट्र की मानवाधिकार घोषणा (UDHR, 1948)** पर भी फ्रांसीसी क्रांति की "मानव और नागरिक अधिकार घोषणा" का गहरा प्रभाव पड़ा।
- आज भी "Liberty, Equality, Fraternity" अनेक संविधानों का मूल मंत्र है (जैसे – भारत का संविधान, प्रास्तावना)।

5. आधुनिक राष्ट्रों की विधिक व सांविधानिक नींव:

- प्रेस स्वतंत्रता, धर्मनिरपेक्षता, समान नागरिक संहिता, सार्वभौम मताधिकार, गणतंत्र – सभी की वैचारिक जड़ें फ्रांसीसी क्रांति से निकलीं।
- शासन की वैधता का स्रोत अब **राजा नहीं, जनता** बन गई।

4.7 फ्रांसीसी क्रांति का योगदान (Legacy & Contributions of the French Revolution)

1. विश्व की पहली सशक्त लोकतांत्रिक जन क्रांति:

- फ्रांसीसी क्रांति ने **राजा को ईश्वर का प्रतिनिधि मानने वाले सिद्धांत (Divine Right of Kings)** को निर्णायक रूप से अस्वीकार कर दिया।
- यह पहली बार था जब **जनता ने संगठित रूप से निरंकुश सत्ता को उखाड़ फेंका** और सत्ता की वैधता का आधार **जनसमर्थन व संप्रभुता** को घोषित किया।
- इससे पहले तक राजशाही ही शासन की स्वाभाविक व्यवस्था मानी जाती थी – फ्रांसीसी क्रांति ने इस धारणा को बदला।

2. आधुनिक गणराज्य, धर्मनिरपेक्षता और नागरिक अधिकारों की नींव:

- फ्रांस में **प्रथम गणराज्य (1792)** की स्थापना और संविधानों (1791, 1793) ने **गणराज्य आधारित शासन प्रणाली** को स्थापित किया।
- **धर्म का राज्य से पृथक्करण**, चर्च की संपत्ति का राष्ट्रीयकरण, और धर्मनिरपेक्ष शिक्षा जैसे कदमों से **धर्मनिरपेक्ष राज्य की अवधारणा** को जन्म मिला।
- **Declaration of the Rights of Man and of the Citizen (1789)** ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, कानून के समक्ष समानता, संपत्ति अधिकार जैसे **आधुनिक नागरिक अधिकारों** को परिभाषित किया।

3. बुर्जुआ वर्ग का उदय व पूंजीवाद को प्रोत्साहन:

- क्रांति ने **मध्यवर्ग (Bourgeoisie)** को राजनीतिक मंच प्रदान किया – व्यापारी, वकील, शिक्षाविद अब नीति निर्धारण में प्रमुख हुए।
- सामंती करों और श्रम बाध्यताओं से मुक्ति पाकर **व्यापार और उत्पादन की स्वतंत्रता** बढ़ी।
- इससे **औद्योगिक क्रांति** के लिए सामाजिक व राजनीतिक मार्ग प्रशस्त हुआ।
- **पूंजीवादी अर्थव्यवस्था, प्रतियोगिता, और निजी संपत्ति के अधिकार** को विधिक संरक्षण मिला।

4. नई विचारधाराओं का जन्म:

- **उदारवाद (Liberalism)** – व्यक्ति की स्वतंत्रता, सीमित शासन, विधिक समता और संवैधानिकता पर बल
- **राष्ट्रवाद (Nationalism)** – "हम फ्रांसीसी हैं" जैसी एकीकृत राष्ट्रीय पहचान; भाषा, संस्कृति और भूगोल के आधार पर राष्ट्र निर्माण
- **समाजवाद (Socialism)** – याकॉबिनों के आर्थिक समानता के प्रयोग और Babeuf के *Conspiracy of Equals* जैसे प्रयासों से समाजवादी चेतना को प्रारंभिक दिशा
- यह क्रांति **राजनीति को विचारधारा आधारित प्रतिस्पर्धा** में बदलने वाली पहली ऐतिहासिक घटना बनी

5. आधुनिक राजनीतिक संस्कृति का वैश्विक प्रसार:

- फ्रांस ने **संविधान, विधायिका, मताधिकार, प्रेस स्वतंत्रता, न्यायिक स्वतंत्रता** जैसे सिद्धांतों को राजनीतिक जीवन के केंद्रीय तत्त्व बना दिया।
- **नेपोलियन के सैन्य अभियानों के माध्यम से**

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

यह विचार यूरोप भर में फैले – इटली, जर्मनी, पोलैंड, बेल्जियम, स्पेन तक।

- उपनिवेशों में – विशेषतः **भारत, लैटिन अमेरिका, व अफ्रीकी देशों** में – क्रांति ने **स्वराज, स्वतंत्रता और नागरिक अधिकारों** की मांगों को वैचारिक समर्थन दिया।

अतः फ्रांसीसी क्रांति केवल एक राष्ट्र की सत्ता परिवर्तन की घटना नहीं थी, यह **आधुनिकता की आधारशिला** थी।

- इससे **राजनीति केवल शासकों की नहीं, जनता की चीज बनी**।
- आज के हर लोकतांत्रिक संविधान, मानवाधिकार, धर्मनिरपेक्ष व्यवस्था और राष्ट्र राज्य की अवधारणाओं की जड़ें **फ्रांसीसी क्रांति में निहित** हैं।
- इसने **आधुनिक विश्व के बौद्धिक, कानूनी और संस्थागत ढांचे** को आकार देने में निर्णायक भूमिका निभाई।

4.8 महत्वपूर्ण कथन (Notable Quotes)

- **एरिक हॉब्सबॉम (Eric Hobsbawm)** –

"The French Revolution was the turning point in modern world history – the age of democratic revolution had begun."

(फ्रांसीसी क्रांति आधुनिक विश्व इतिहास का निर्णायक मोड़ थी – लोकतांत्रिक क्रांति का युग प्रारंभ हुआ।)

- **जॉर्ज रूडे (George Rudé)** –

"The Revolution was made not by philosophers, but by the ordinary men and women of France."

(क्रांति को दार्शनिकों ने नहीं, बल्कि फ्रांस के साधारण पुरुषों और महिलाओं ने बनाया।)

- **अलेक्ज़ेंडर ग्रे (Alexander Gray)** –

"It was a revolution not only of political institutions, but of the entire mindset and structure of society."

(यह केवल राजनीतिक संस्थाओं की नहीं, बल्कि पूरे सामाजिक ढांचे और मानसिकता की क्रांति थी।)

- **मिराबो (Mirabeau)** –

"We are here by the will of the people and we shall leave only by the force of bayonets."

(हम यहाँ जनता की इच्छा से हैं और केवल संगीनों की शक्ति से हट सकते हैं।)

- **डेंटन (Danton)** –

"Boldness, more boldness, and always boldness."

(साहस, और अधिक साहस, और सदैव साहस – क्रांति की मूल नीति।)

- **रॉबेस्पीयर (Robespierre)** –

"Terror is nothing else than swift, severe, indomitable justice; it is an emanation of virtue."

(आतंक कुछ और नहीं, बल्कि तेज़, कठोर और अडिग न्याय है; यह सद्गुण का ही रूप है।)

- **मारात (Marat)** –

"No liberty for the enemies of liberty."

(स्वतंत्रता के शत्रुओं के लिए कोई स्वतंत्रता नहीं।)

- **थॉमस जेफरसन (Thomas Jefferson)** –

"The revolution of France is a warning to kings and a blessing to the people."

(फ्रांस की क्रांति राजाओं के लिए चेतावनी और जनता के लिए आशीर्वाद है।)

- **नेपोलियन बोनापार्ट** –

"Revolution is an idea which has found its bayonets."

(क्रांति वह विचार है जिसने अब संगीनें पा ली हैं।)

- **रूसो (Jean-Jacques Rousseau)** –

"Man is born free, and everywhere he is in chains."

(मनुष्य जन्म से स्वतंत्र है, पर हर जगह वह बंधनों में जकड़ा है।)

- **वोल्टेयर (Voltaire)** –

"I disapprove of what you say, but I will defend to the death your right to say it."

(मैं तुम्हारी बात से असहमत हूँ, पर तुम्हें वह कहने का अधिकार दिलाने के लिए प्राण तक दे सकता हूँ।)

- **मोंतेस्क्यू (Montesquieu)** –

"To become truly great, one has to stand with the people, not above them."

(सच्चे अर्थों में महान बनने के लिए जनता के साथ खड़ा होना चाहिए, उनके ऊपर नहीं।)

- **एरिक हॉब्सबॉम** –

"The French Revolution was the turning point in the history of the modern world."

(फ्रांसीसी क्रांति आधुनिक विश्व के इतिहास में निर्णायक मोड़ थी।)

- **जॉर्ज रूडे (George Rudé)** –

"It was the first great revolution in history in which the common people played a decisive role."

(यह इतिहास की पहली ऐसी महान क्रांति थी जिसमें आम जनता ने निर्णायक भूमिका निभाई।)

- **अलेक्जेंडर ग्रे (Alexander Gray)** –

"The French Revolution destroyed the ancien régime and introduced the idea of equality before law."

(फ्रांसीसी क्रांति ने पुरानी शासन व्यवस्था को समाप्त कर कानून के समक्ष समानता की अवधारणा स्थापित की।)

- **थॉमस जेफ़रसन** –

"The French Revolution was the logical consequence

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

of the Enlightenment."
(फ्रांसीसी क्रांति प्रबोधन युग का तार्किक परिणाम थी।)

• **रॉबर्ट पामर (Robert Palmer)** –
"The French Revolution was not only French but European and universal."
(फ्रांसीसी क्रांति केवल फ्रांस की नहीं थी, यह यूरोपीय और सार्वभौमिक थी।)

• **नपोलेअन बोनापार्ट** –
"I am the child of the French Revolution."
(मैं फ्रांसीसी क्रांति की संतान हूँ।)

• **एलबर्ट सोबुल (Albert Soboul)** –
"The Revolution marked the transition from feudalism to capitalism and the birth of the modern bourgeois state."
(क्रांति ने सामंतवाद से पूंजीवाद की ओर संक्रमण और आधुनिक बुर्जुआ राज्य का जन्म दर्शाया।)

• **साइमन शमा (Simon Schama)** –
"Violence was not the unfortunate byproduct of the French Revolution, it was the revolution itself."
(हिंसा फ्रांसीसी क्रांति का दुर्भाग्यपूर्ण परिणाम नहीं थी, वह स्वयं क्रांति थी।)

• **मिशेल वॉवल (Michel Vovelle)** –
"The Revolution created a new political culture where sovereignty belonged to the people."
(क्रांति ने एक नई राजनीतिक संस्कृति बनाई जिसमें संप्रभुता जनता की हो गई।)

• **जॉन डन (John Dunn)** –
"The French Revolution invented modern politics."
(फ्रांसीसी क्रांति ने आधुनिक राजनीति का आविष्कार किया।)

4.9 शब्दावली

• **Ancien Régime** – क्रांति से पूर्व फ्रांस की पुरानी शासन व्यवस्था, जिसमें निरंकुश राजतंत्र, सामंती विशेषाधिकार और वर्गीय असमानता प्रमुख थीं।

• **Estates-General** – पादरी (प्रथम वर्ग), कुलीन (द्वितीय वर्ग) और तृतीय वर्ग की प्रतिनिधि सभा; 1789 में लुई XVI ने 175 वर्षों बाद इसे पुनः बुलाया।

• **Taille** – भूमि पर लगाया गया प्रत्यक्ष कर, जिसे केवल तृतीय वर्ग को चुकाना पड़ता था।

• **Gabelle** – नमक पर लगाया गया कठोर कर, जिससे तृतीय वर्ग पीड़ित था।

• **Corvée** – राज्य या सामंत द्वारा तृतीय वर्ग से लिए जाने वाला जबरन श्रम या बेगार सेवा।

• **Third Estate** – फ्रांसीसी समाज का तीसरा वर्ग, जिसमें किसान, मजदूर, कारीगर, व्यापारी आदि शामिल थे; जनसंख्या का 98% होते हुए भी राजनीतिक अधिकार विहीन थे।

• **National Assembly** – 17 जून 1789 को तृतीय वर्ग ने स्वयं को राष्ट्रीय सभा घोषित किया; यह क्रांति की औपचारिक शुरुआत थी।

• **Tennis Court Oath** – 20 जून 1789 को राष्ट्रीय सभा के सदस्यों ने शपथ ली कि जब तक नया संविधान नहीं बनता, वे सभा नहीं छोड़ेंगे।

• **Bastille** – पेरिस का दुर्ग और राज्य की दमनात्मक शक्ति का प्रतीक; 14 जुलाई 1789 को जनता ने इसे ध्वस्त कर क्रांति को हिंसक मोड़ दिया।

• **Declaration of the Rights of Man and Citizen** – 26 अगस्त 1789 को पारित घोषणापत्र जिसमें स्वतंत्रता, समानता, संपत्ति और कानून के समक्ष समानता जैसे अधिकारों की घोषणा की गई।

• **Jacobins** – क्रांति के उग्रपंथी नेता; रोबेस्पीयर, डैंटन जैसे नेता शामिल; आतंक के शासन के लिए प्रसिद्ध।

• **Reign of Terror** – 1793–94 के बीच याकॉबिन शासन में हुआ हिंसक दौर जिसमें हजारों लोगों को गिलोटिन द्वारा मारा गया।

• **Robespierre** – याकॉबिन नेता और जनतंत्रात्मक सुरक्षा समिति का प्रमुख; आतंक के शासन का सूत्रधार।

• **Directory** – 1795–99 के बीच पाँच सदस्यों वाली कार्यपालिका जिसने गणराज्य को अस्थायी रूप से स्थायित्व दिया।

• **18 Brumaire Coup** – 9 नवम्बर 1799 को नेपोलियन द्वारा किया गया तख्तापलट, जिससे डायरेक्टरी का अंत हुआ और कौंसुल शासन की शुरुआत हुई।

• **Napoleonic Code** – 1804 में लागू नागरिक संहिता; संपत्ति अधिकार, कर समानता और विधिक प्रक्रिया की आधुनिक नींव।

• **Constitution of 1791** – फ्रांस का पहला लिखित संविधान, जिसने संवैधानिक राजतंत्र की स्थापना की और शक्तियों के विभाजन की नींव रखी।

• **Louis XVI** – फ्रांस का अंतिम निरंकुश सम्राट, जिसकी नीतियाँ और कर व्यवस्था क्रांति के लिए उत्तरदायी बनीं; 1793 में गिलोटिन द्वारा मृत्यु।

• **Marie Antoinette** – फ्रांस की रानी, विलासिता की प्रतीक मानी गईं; "यदि रोटी नहीं है तो केक खाओ" कथन से जनता का रोष और बढ़ा।

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

• **Great Fear (La Grande Peur)** – 1789 के मध्य में ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों द्वारा सामंती जागीरों और दस्तावेजों को जलाने की लहर; वर्ग संघर्ष का प्रतीक।

• **Women's March to Versailles** – 5 अक्टूबर 1789 को पेरिस की महिलाओं ने ब्रेड की माँग को लेकर वर्साय जाकर राजा को राजधानी लाने के लिए बाध्य किया।

• **Civil Constitution of the Clergy** – 1790 में पारित कानून जिसके तहत पादरियों को राज्य के अधीन किया गया और चर्च की संपत्ति का राष्ट्रीयकरण हुआ।

• **Flight to Varennes** – जून 1791 में लुई XVI का देश से भागने का प्रयास, जिससे जनता में विश्वास समाप्त हुआ और राजशाही के अंत की भूमिका बनी।

• **Sans-culottes** – पेरिस के मेहनतकश मजदूर वर्ग, जिन्होंने याकॉबिनों के साथ मिलकर क्रांति को उग्र रूप दिया; "बिना घुटने की पतलून पहनने वाले" जनसैनिक।

• **Committee of Public Safety** – अप्रैल 1793 में स्थापित समिति, जिसने आतंक के शासन के दौरान विधायी और कार्यपालिका शक्तियाँ संभालीं; रोबेस्पीयर के अधीन रही।

• **Guillotine** – क्रांति काल में प्रयुक्त लोकप्रिय मृत्यु दंड यंत्र; इसे "लोकतंत्र की तलवार" भी कहा गया।

• **Mountain (La Montagne)** – याकॉबिनों का उग्रपंथी गुट, नेशनल कन्वेंशन में उच्च स्थान पर बैठने के कारण "पर्वतीय" कहा गया; रोबेस्पीयर नेतृत्व में।

• **The Plain (Le Marais)** – नेशनल कन्वेंशन में मध्यपंथी सदस्य जो ना तो पूर्णतः याकॉबिन ना ही रॉयलिस्ट थे; स्थिति के अनुसार पक्ष बदलते रहे।

• **Brissotins / Girondins** – यथार्थवादी और उदारवादी गुट जिन्होंने युद्ध का समर्थन किया लेकिन आतंक के शासन का विरोध किया; याकॉबिनों द्वारा दमन।

• **Declaration of the Rights of Woman (1791)** – ओलंप डी गूज द्वारा लिखा गया घोषणापत्र, जिसमें स्त्रियों को समान राजनीतिक अधिकार दिए जाने की मांग की गई।

• **Coup of 18 Fructidor** – सितम्बर 1797 में डायरेक्टरी द्वारा रॉयलिस्टों के प्रभाव को रोकने के लिए किया गया सैन्य हस्तक्षेप; लोकतंत्र की दुर्बलता का प्रतीक।

• **Feudal Dues** – सामंती कर या बंधन जो किसानों को सामंतों को देना पड़ता था; भूमि उपयोग, विवाह, मृत्युकर्म आदि पर अतिरिक्त कर शामिल।

• **Nobles of the Sword** – पारंपरिक कुलीन वर्ग जो सैन्य सेवा या वंश पर आधारित था; विशेषाधिकार प्राप्त।

• **Nobles of the Robe** – वे कुलीन जो न्यायपालिका या प्रशासनिक पदों के कारण कुलीन वर्ग में आए थे; इनकी संख्या बाद में बढ़ी।

• **Danton (Georges Danton)** – याकॉबिन नेता, क्रांति के आरंभिक जनप्रिय नायक; बाद में रोबेस्पीयर के आदेश पर गिलोटिन से मारे गए।

• **Jean-Paul Marat** – पत्रकार और कट्टर याकॉबिन; "L'Ami du Peuple" नामक पत्रिका के संपादक; 1793 में शार्लोट कॉर्डे द्वारा हत्या।

• **Charlotte Corday** – जिरोंदिन समर्थक महिला जिसने मारात की हत्या की; उसे "क्रांति की न्यायदूत" भी कहा गया।

• **September Massacres (1792)** – जेलों में बंद हजारों रॉयलिस्टों की क्रांतिकारी भीड़ द्वारा हत्या; याकॉबिन हिंसा का प्रारंभिक रूप।

• **Revolutionary Calendar** – क्रांति के बाद पुराना ग्रेगोरियन कैलेंडर हटाकर नया गणनात्मक पंचांग लागू किया गया; हर महीने में 30 दिन, 10-दिनी सप्ताह।

• **Cult of the Supreme Being** – रोबेस्पीयर द्वारा स्थापित धर्मनिरपेक्ष आस्था प्रणाली, जो ईश्वर की नैतिक अवधारणा पर आधारित थी; चर्च का विकल्प।

• **Thermidorian Reaction** – जुलाई 1794 की घटना जिसमें रोबेस्पीयर का पतन हुआ; आतंक का शासन समाप्त हुआ।

• **Council of Five Hundred** – डायरेक्टरी युग की निचली विधायी सभा; विधेयक प्रारूपित करती थी।

• **Council of Ancients** – डायरेक्टरी काल की ऊपरी सभा, जो प्रस्तावों पर अंतिम निर्णय लेती थी।

• **Jacques Hébert** – उग्र क्रांतिकारी और नास्तिक; Sans-culottes का प्रतिनिधि माने जाते थे; बाद में रोबेस्पीयर द्वारा मृत्युदंडित।

• **Émigrés** – वे कुलीन और पादरी जो क्रांति के दौरान फ्रांस छोड़कर अन्य राजशाही देशों में भाग गए और राजा की पुनर्स्थापना का प्रयास किया।

• **Law of Suspects** – 1793 का कानून जिसके तहत बिना पर्याप्त प्रमाण के भी लोगों को देशद्रोही कहकर गिरफ्तार और दंडित किया जा सकता था।

• **Levee en masse** – 1793 में घोषित अनिवार्य सैन्य भर्ती, जिसमें राष्ट्र की रक्षा हेतु हर नागरिक को योगदान देना आवश्यक था।

• **Great Awakening (Enlightenment)** – 18वीं शताब्दी का बौद्धिक आंदोलन जिसने तर्क, विज्ञान,

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

धर्मनिरपेक्षता और मानवाधिकारों को बल दिया; क्रांति की वैचारिक भूमिका।

• **Cahiers de doléances** – शिकायतों की पुस्तिकाएं जो 1789 में Estates-General के पहले तीनों वर्गों से माँगी गईं; जनता के असंतोष का औपचारिक दस्तावेज़।

• **Assignats** – क्रांति काल में चर्च की ज़मीन के आधार पर जारी की गई मुद्रा; मुद्रास्फीति और अवमूल्यन का कारण बनी।

• **Legislative Assembly** – 1791 के संविधान के तहत गठित विधायी संस्था जिसने राजतंत्र को संवैधानिक रूप में सीमित किया; इसके कार्यकाल में राजतंत्र पूरी तरह समाप्त हुआ।

Ch 5 - नेपोलियन बोनापार्ट (Napoleon Bonaparte) : 1799–1815

5.1 पृष्ठभूमि व उदय (Rise to Power of Napoleon Bonaparte)
5.2 प्रमुख प्रशासनिक व विधिक सुधार (Key Reforms of Napoleon Bonaparte)
5.3 सैन्य विजय व यूरोप पर प्रभुत्व (Military Expansion and European Dominance of Napoleon Bonaparte)
5.4 पतन के कारण व अंतिम युद्ध (Decline and Fall of Napoleon Bonaparte)
5.5 100 दिन व वाटरलू की हार (1815) – Napoleon's Final Attempt and Defeat
5.6 नेपोलियन की विरासत (Legacy of Napoleon Bonaparte)
5.7 ऐतिहासिक छवि – क्रांतिपुत्र या क्रांतिहंता?
5.8 महत्वपूर्ण कथन:

5.1 पृष्ठभूमि व उदय (Rise to Power of Napoleon Bonaparte)

• **नेपोलियन बोनापार्ट** का जन्म 15 अगस्त 1769 को **कोर्सिका द्वीप** पर हुआ था। वह एक निम्न कुलीन परिवार से था, परंतु क्रांति ने उसे आगे बढ़ने का अवसर दिया।

• वह **तोपखाना विभाग में अधिकारी** बना और 1793 में **टूलॉन की विजय** के बाद क्रांतिकारी सरकार की नजरों में आया।

• **1796–97 के इटली अभियान** में उसने ऑस्ट्रिया को हराकर फ्रांस की सीमा सुरक्षित की और *"क्रांति का रक्षक"* कहलाया।

• **1798–99 का मिस्र अभियान** भले ही रणनीतिक रूप से विफल रहा, पर उसने नेपोलियन की **राजनीतिक छवि को और ऊँचा** किया।

• **9 नवम्बर 1799 (18 Brumaire)** को नेपोलियन ने सेनाओं की सहायता से **डायरेक्टरी शासन का तख्तापलट** किया और **तीन कौंसुलों वाली कार्यपालिका प्रणाली** लागू की – जिसमें वह **प्रथम कौंसुल** बना।

• **1802 में जनमत संग्रह द्वारा "आजीवन प्रथम कौंसुल"** (Consul for Life) घोषित हुआ, जिससे उसकी शक्तियाँ लगभग निरंकुश हो गईं।

• अंततः **2 दिसम्बर 1804** को **नेपोलियन ने पोप की उपस्थिति में स्वयं को सम्राट घोषित कर ताज पहन लिया** – यह कदम **क्रांति के लोकतांत्रिक मूल्यों से सत्ता के केंद्रीकरण की ओर मोड़** था।

5.2 प्रमुख प्रशासनिक व विधिक सुधार (Key Reforms of Napoleon Bonaparte)

— एक केंद्रीकृत, विधिसम्मत और धर्मनिरपेक्ष आधुनिक राज्य की आधारशिला

1. Napoleonic Code (1804) – आधुनिक नागरिक संहिता की आधारशिला:

• यह नेपोलियन द्वारा लागू की गई **Europe की प्रथम संगठित और समान नागरिक संहिता** थी, जिसे *Code Civil des Français* भी कहते हैं।

• इसके प्रमुख प्रावधान:

→ **कानून के समक्ष समानता** – सभी नागरिकों को बिना जाति, वर्ग, धर्म या जन्म आधारित भेदभाव के समान विधिक अधिकार।

→ **संपत्ति अधिकार की सुरक्षा** – निजी संपत्ति की सुरक्षा को वैधानिक रूप से गारंटी।

→ **वंशानुक्रम और विवाह नियमों का विधिक निर्धारण** – विवाह, तलाक, और उत्तराधिकार के स्पष्ट नियम।

→ **जन्म आधारित विशेषाधिकारों का अंत** – कुलीनता और पादरी वर्ग के कानूनी लाभ समाप्त किए गए।

• यह कोड आज भी फ्रांस, बेल्जियम, इटली, लैटिन अमेरिका और कई एशियाई देशों की **विधिक व्यवस्था की मूल प्रेरणा** है।

2. शैक्षणिक सुधार – योग्यता आधारित शिक्षा प्रणाली की नींव:

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

• **Lycée प्रणाली** (1801) – राष्ट्रीय स्तर पर **राजकीय उच्च विद्यालयों** की स्थापना, जहाँ विज्ञान, गणित, प्रशासन व सैन्य विषयों की शिक्षा दी जाती थी।

• शिक्षण संस्थानों में **राज्य का सीधा नियंत्रण**, जिससे **एकरूप पाठ्यक्रम और राष्ट्रभक्ति आधारित शिक्षण** संभव हुआ।

• **Meritocracy** की अवधारणा को बढ़ावा – राज्य सेवा, सेना और प्रशासन में *योग्यता आधारित भर्ती*।

3. केंद्रीकृत प्रशासन – एकीकृत शासन मॉडल:

• फ्रांस को **Départments (जिले)** में बाँटा गया, जिन पर **Prefects (जिलाधिकारी)** नियुक्त किए गए।

• ये Prefects सीधे केंद्र सरकार को रिपोर्ट करते थे – इससे **स्थानीय सत्ता को नियंत्रित कर प्रशासनिक एकरूपता** लाई गई।

• पुलिस, न्याय, कर संग्रहण और जनसंख्या निगरानी जैसे कार्यों में **केंद्रीय नियंत्रण** स्थापित हुआ।

4. बैंक ऑफ फ्रांस (Bank of France, 1800) – आर्थिक स्थिरता की नींव:

• नेपोलियन ने **राजकोषीय घाटे और मुद्रास्फीति** को नियंत्रित करने के लिए एक **स्वायत्त केंद्रीय बैंक** की स्थापना की।

• इस बैंक ने **सरकारी ऋण व्यवस्था, मुद्रा नियंत्रण और आर्थिक अनुशासन** को सुदृढ़ किया।

• यह **निजी और सार्वजनिक वित्त के बीच संतुलन** स्थापित करने वाला यूरोप का एक अनूठा मॉडल बना।

5. चर्च समझौता (Concordat of 1801) – धर्म और राज्य के बीच संतुलन:

• पोप पायस VII के साथ समझौते द्वारा चर्च और राज्य के संबंध पुनः परिभाषित किए गए।

→ **कैथोलिक धर्म को बहुसंख्यक फ्रांसीसी जनता का धर्म माना गया**, लेकिन चर्च पर राज्य का नियंत्रण बना रहा।

→ चर्च की ज़ब्त संपत्ति सरकार के पास रही, लेकिन पादरियों को **राजकीय वेतन** मिलने लगा।

→ इससे **धर्मनिरपेक्षता और धार्मिक स्थायित्व** दोनों साधे गए।

5.3 सैन्य विजय व यूरोप पर प्रभुत्व (Military Expansion and European Dominance of Napoleon Bonaparte)

— निर्णायक युद्ध, सामरिक संधियाँ और महाद्वीपीय नियंत्रण की नीति

1. Austerlitz युद्ध (2 दिसम्बर 1805) – तीन सम्राटों की निर्णायक लड़ाई

• इस युद्ध को **"The Battle of the Three Emperors"** कहा जाता है – नेपोलियन (फ्रांस), जार अलेक्ज़ेंडर I (रूस), और सम्राट फ्रांसिस II (ऑस्ट्रिया) के बीच।

• नेपोलियन ने **गहरी सैन्य रणनीति** के माध्यम से दोनों शक्तिशाली साम्राज्यों को हराया।

• इस जीत से **ऑस्ट्रिया को फ्रांस से शांति संधि (Pressburg Treaty)** करनी पड़ी और **रूसी सेना को पीछे हटना पड़ा।**

• इस युद्ध के बाद नेपोलियन की **सैन्य प्रतिष्ठा चरम पर पहुंची** और उसे *"युद्ध का उस्ताद"* कहा गया।

2. Confederation of the Rhine (1806) – जर्मन क्षेत्र में प्रभुत्व का विस्तार

• नेपोलियन ने पवित्र रोमन साम्राज्य को समाप्त कर **16 जर्मन राज्यों को मिलाकर Rhine महासंघ (Confederation of the Rhine)** की स्थापना की।

• यह महासंघ **फ्रांस की अधीनता में था** और इसके सदस्य राज्यों को नेपोलियन के प्रति वफादार रहना पड़ता था।

• इससे **पवित्र रोमन साम्राज्य (Holy Roman Empire)** का 1000 वर्षों पुराना अस्तित्व समाप्त हुआ और **मध्य यूरोप में फ्रांसीसी प्रभाव की सर्वोच्चता** स्थापित हुई।

• यह *जर्मन एकीकरण के बीज* बोने वाली घटना भी मानी जाती है।

3. Tilsit संधि (1807) – रूस के साथ अस्थायी सामरिक संतुलन

• ऑस्टरलिट्ज़ और फ्राइडलैंड जैसी लड़ाइयों के बाद नेपोलियन और रूस के जार अलेक्ज़ेंडर I ने **Tilsit में संधि की**।

• इसके तहत:

→ यूरोप को **प्रभाव क्षेत्रों (Spheres of Influence)** में बाँटा गया।

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

→ रूस ने **ब्रिटेन के विरुद्ध महाद्वीपीय प्रणाली (Continental System)** का समर्थन किया।

→ प्रशिया की भूमि का विभाजन कर **Westphalia जैसे कठपुतली राज्य** बनाए गए।

• यह संधि नेपोलियन के यूरोपीय प्रभुत्व को **पूर्व दिशा में स्थायित्व** देने का प्रयास थी।

4. Continental System (1806) – ब्रिटेन को आर्थिक रूप से पंगु करने की रणनीति

• ब्रिटेन ने समुद्री प्रभुत्व (Trafalgar, 1805) से नेपोलियन को चुनौती दी, इसलिए नेपोलियन ने **ब्रिटेन से सभी महाद्वीपीय व्यापार संबंधों को समाप्त करने का आदेश** दिया।

• **Berlin Decree (1806)** और **Milan Decree (1807)** के माध्यम से उसने यूरोपीय देशों को ब्रिटेन से व्यापार करने से मना किया।

• इसका उद्देश्य था – **ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था को ठप करना**, जिससे वह युद्ध जारी न रख सके।

• परंतु यह नीति **विपरीत परिणाम लायी** –

→ यूरोपीय देशों की अर्थव्यवस्थाएँ प्रभावित हुईं।

→ तस्करी बढ़ी और ब्रिटेन ने *counter-blockade* कर दी।

→ **रूस ने 1810 में इस प्रणाली से स्वयं को अलग कर लिया**, जिससे 1812 में रूस-अभियान की भूमिका बनी।

इस प्रकार नेपोलियन का सैन्य विस्तार **यूरोप को राजनैतिक रूप से पुनर्गठित और सैन्य दृष्टि से अस्थिर** कर गया।

• उसने **नेपोलियन साम्राज्य (Napoleonic Empire)** की रचना की जिसमें **फ्रांस प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पूरे महाद्वीप पर प्रभावी था**।

• परंतु उसकी **आर्थिक रणनीतियाँ और विस्तारवादी अतिवाद** अंततः **प्रतिक्रिया और विद्रोह** को जन्म देने लगे।

5.4 पतन के कारण व अंतिम युद्ध (Decline and Fall of Napoleon Bonaparte)

— सैन्य विफलताओं, अंतर्राष्ट्रीय गठबंधनों और साम्राज्य के अंत

1. स्पेन अभियान (Peninsular War, 1808–1814) – गुरिल्ला संघर्ष और ब्रिटिश प्रतिरोध:

• नेपोलियन ने 1808 में **स्पेन के राजा को हटाकर अपने भाई जोज़ेफ बोनापार्ट को सत्ता में बिठाया**।

• इस कदम ने **स्पेनी जनता में भारी असंतोष** पैदा किया; जिससे एक **जन-आधारित गुरिल्ला युद्ध** शुरू हुआ।

• **ब्रिटेन ने वेलिंग्टन के नेतृत्व में सैन्य सहायता** भेजी, जिससे फ्रांस को युद्ध के कई मोर्चों पर पीछे हटना पड़ा।

• यह संघर्ष नेपोलियन के लिए **"Spanish Ulcer"** बन गया – यानी ऐसा संकट जो लंबे समय तक साम्राज्य को कमजोर करता गया।

2. रूस अभियान (1812) – सामरिक भूल और विनाश का प्रारंभ:

• रूस द्वारा **Continental System से हटने** के बाद नेपोलियन ने **6 लाख सैनिकों (Grande Armée)** के साथ रूस पर आक्रमण किया।

• **मास्को तक पहुँचने** के बावजूद रूसियों ने *"scorched earth"* नीति अपनाई – भोजन, फसल और संसाधन जला दिए गए।

• **भीषण ठंड, बीमारी, भूख और लगातार हमलों** के कारण सेना का अधिकांश भाग नष्ट हो गया –

→ केवल **90,000–100,000 सैनिक ही जीवित लौटे**।

• यह अभियान नेपोलियन की **अजेय छवि को तोड़ गया** और **शेष यूरोप को संगठित प्रतिरोध का अवसर** मिला।

3. यूरोपीय गठबंधन (Sixth Coalition, 1813–14) – निर्णायक प्रतिरोध:

• रूस की सफलता के बाद **ब्रिटेन, ऑस्ट्रिया, प्रशिया और स्वीडन** ने **संयुक्त मोर्चा (Sixth Coalition)** बनाया।

• **1813 का लाइपज़िग युद्ध (Battle of Nations)** – यूरोप का सबसे बड़ा समर जिसमें नेपोलियन की निर्णायक हार हुई।

• फ्रांस की सीमाओं तक प्रतिरोध बढ़ता गया और अंततः **मार्च 1814 में पेरिस पर आक्रमण** कर दिया गया।

• सेना और संसदीय समर्थन घटने के बाद नेपोलियन ने **6 अप्रैल 1814 को पदत्याग (abdication)** किया।

4. निर्वासन – एल्बा द्वीप पर प्रथम निर्वासन (1814):

• संधि के अनुसार, नेपोलियन को **एल्बा द्वीप** (इटली के पास) का शासक बनाया गया, पर वह **वास्तविक शक्ति से वंचित** था।

• यहाँ से भी नेपोलियन ने राजनीतिक संपर्क

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

बनाए रखा और **फ्रांस में पुनः लौटने की योजना** बनाता रहा।

• इस बीच **बुर्बन वंश** की बहाली (लुई XVIII) से जनता असंतुष्ट थी, जिससे वापसी का मार्ग बना।

5.5 100 दिन व वाटरलू की हार (1815) – Napoleon's Final Attempt and Defeat

— नेपोलियन की वापसी, अंतिम युद्ध और स्थायी पतन

1. एल्बा से वापसी और "The Hundred Days" (1 मार्च – 22 जून 1815):

• **एल्बा द्वीप पर निर्वासित** किए जाने के बाद नेपोलियन को जल्द ही यह ज्ञात हुआ कि फ्रांस में **राजा लुई XVIII की सरकार अलोकप्रिय** हो गई है।

• 1 मार्च 1815 को वह चुपचाप **एल्बा से भागकर फ्रांस पहुँचा** और जनता, सैनिकों व पुरानी सेना का समर्थन पाकर **बिना रक्तपात के पुनः सत्ता में आ गया**।

• यह अवधि इतिहास में **"सौ दिन (The Hundred Days)"** के नाम से प्रसिद्ध है – जो **उन 100 दिनों को दर्शाती है जब नेपोलियन पुनः फ्रांस का सम्राट बना**।

2. वाटरलू युद्ध (Battle of Waterloo – 18 जून 1815):

• यूरोपीय राष्ट्रों ने नेपोलियन की वापसी को **नया संकट मानकर तुरंत प्रतिक्रिया दी**।

• ब्रिटेन (ड्यूक ऑफ वेलिंग्टन) और प्रशिया (ब्ल्यूचर) के नेतृत्व में सेनाएँ एकजुट हुईं।

• **बेल्जियम स्थित वाटरलू में निर्णायक युद्ध** हुआ –

→ नेपोलियन की रणनीति प्रारंभ में प्रभावशाली रही, परंतु

→ **प्रशियाई सेना के समय पर आगमन** और **ब्रिटिश सेना की दृढ़ता** ने युद्ध का रुख बदल दिया।

• यह युद्ध नेपोलियन की **अंतिम और पूर्ण पराजय** सिद्ध हुआ।

3. अंतिम निर्वासन – सेंट हेलेना (Saint Helena):

• वाटरलू की हार के बाद नेपोलियन ने 22 जून 1815 को **दूसरी बार सत्ता से त्यागपत्र दिया**।

• उसे अटलांटिक महासागर के एक दूरस्थ और निर्जन द्वीप **सेंट हेलेना** पर **ब्रिटिश निगरानी में भेजा गया**, जहाँ से भागना असंभव था।

• उसने वहाँ के जीवन को "**दुनिया की कब्र**" कहा।

• **1821 में 5 मई** को नेपोलियन की मृत्यु हो गई – सम्भवतः पेट के कैंसर से।

5.6 नेपोलियन की विरासत (Legacy of Napoleon Bonaparte)

— आधुनिक विधि, प्रशासन, राष्ट्रवाद और यूरोपीय राजनीति पर दूरगामी प्रभाव

1. Napoleonic Code – विधिक क्रांति की आधारशिला:

• **1804 में लागू Napoleonic Code** (Code Civil des Français) आधुनिक विधिक व्यवस्था की नींव बन गई।

→ इसमें **कानून के समक्ष समानता, संपत्ति के अधिकार, धर्मनिरपेक्षता, विवाह व उत्तराधिकार के स्पष्ट नियम** शामिल थे।

• यह कोड न केवल फ्रांस बल्कि **बेल्जियम, नीदरलैंड्स, इटली, स्पेन, पोलैंड, लैटिन अमेरिका** सहित कई देशों की न्याय प्रणाली में लागू हुआ।

• यह **विधि के नियमों की सार्वभौमिकता और कोडिफिकेशन** की परंपरा का स्थायी स्तंभ बना।

2. क्रांतिकारी आदर्शों की संस्थागत सुरक्षा:

• नेपोलियन ने भले ही अधिनायकवादी शासन अपनाया, परंतु उसने **फ्रांसीसी क्रांति के मूल सिद्धांत – समानता, प्रतिभा आधारित पदोन्नति, धर्मनिरपेक्षता और सामाजिक न्याय** – को संरक्षित रखा।

• **कुलीनता और विशेषाधिकारों का अंत**, चर्च और राज्य का पृथक्करण, और **जन-शिक्षा का विस्तार** उसके शासन के प्रमुख योगदान रहे।

3. राष्ट्रवाद व आधुनिक राष्ट्र-राज्य की अवधारणा का प्रेरक:

• नेपोलियन के सैन्य आक्रमणों ने भले ही यूरोप को अस्थिर किया, लेकिन उन्होंने **विभिन्न क्षेत्रों में स्थानीय जागरूकता और राष्ट्रवाद को जन्म** दिया।

→ *उदाहरण:* **इटली और जर्मनी में एकीकरण की प्रेरणा**, स्पेन में स्वतंत्रता संग्राम।

• उसने **राष्ट्रीय भाषा, कानून, शिक्षा और प्रशासन** को केंद्रीकृत कर **राष्ट्र-राज्य की धारणा को व्यावहारिक रूप दिया।**

4. प्रशासनिक केंद्रीकरण और आधुनिक राज्य की नींव:

• **Prefect प्रणाली**, शिक्षा में **Lycée मॉडल**, **Bank of France**, और **राज्य द्वारा नियंत्रित पदाधिकारियों की नियुक्ति** ने एक **कुशल और एकरूप प्रशासन** की आधारशिला रखी।

• आज भी कई राष्ट्रों की **केंद्रीकृत प्रशासनिक व्यवस्था** इसी प्रणाली से प्रेरित है।

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

5. कांग्रेस ऑफ वियना (1815) – यूरोपीय संतुलन की पुनःस्थापना:

- नेपोलियन के पतन के बाद **यूरोप में शांति और शक्ति संतुलन** को पुनर्स्थापित करने के लिए **Congress of Vienna** का आयोजन हुआ।
- यह कांग्रेस यूरोप को फिर से **पूर्व-क्रांति व्यवस्था** में लौटाने का प्रयास थी, परंतु

→ नेपोलियन द्वारा **छेड़े गए राष्ट्रवादी और उदारवादी आंदोलनों को पूरी तरह रोका नहीं जा सका।**

5.7 ऐतिहासिक छवि – क्रांतिपुत्र या क्रांतिहंता?

- **क्रांतिपुत्र के रूप में –**
  - Napoleonic Code ने समानता, संपत्ति अधिकार और विधिक एकरूपता के आदर्श स्थापित किए।
  - उसने चर्च के प्रभुत्व को सीमित कर धर्मनिरपेक्षता को बल दिया।
  - फ्रांस के बाहर राष्ट्रवाद की भावना जगाई, कई देशों में गणतंत्र की लहर पहुंचाई।
  - योग्यता आधारित पदोन्नति, शिक्षा व्यवस्था व प्रशासनिक सुधार किए।
- **क्रांतिहंता के रूप में –**
  - स्वयं सम्राट बनकर उसने जनसत्ता की अवधारणा को ध्वस्त किया।
  - प्रेस व असहमति पर नियंत्रण, सीनेट की शक्तियों की कटौती की।
  - महिलाओं को समान अधिकार नहीं दिए, क्रांति की लैंगिक समानता की मूल भावना से विचलन।
  - यूरोपीय युद्धों से जनसंहार व साम्राज्यवादी मंशा स्पष्ट हुई।

5.8 महत्वपूर्ण कथन:

- *"I am the Revolution."*
(मैं ही क्रांति हूँ।)-नेपोलियन
- *"Impossible is a word to be found only in the dictionary of fools."*
(असंभव शब्द केवल मूर्खों के शब्दकोश में पाया जाता है।)-नेपोलियन
- *"A soldier will fight long and hard for a bit of colored ribbon."*
(एक सैनिक एक रंगीन फीते के लिए लंबे समय तक और कठोरता से लड़ सकता है।)-नेपोलियन
- *"My true glory is not the forty battles I have won... but the Civil Code."*
(मेरी सच्ची गौरवगाथा मेरी चालीस विजयों में नहीं, बल्कि सिविल कोड में है।)-नेपोलियन
- **एरिक हॉब्सबॉम:**
"Napoleon was the last and most magnificent flower of the Enlightenment."
(नेपोलियन प्रबोधन युग की अंतिम और सबसे भव्य अभिव्यक्ति था।)
- **एलबर्ट सोबुल:**
"Napoleon completed the work of the French Revolution by consolidating the gains of 1789."
(नेपोलियन ने 1789 की उपलब्धियों को समेकित कर फ्रांसीसी क्रांति के कार्य को पूर्ण किया।)
- **जॉर्ज रूडे:**
"Though he crowned himself Emperor, Napoleon preserved the social gains of the Revolution."
(भले ही उसने स्वयं को सम्राट घोषित किया, लेकिन उसने क्रांति की सामाजिक उपलब्धियों को सुरक्षित रखा।)
- **रॉबर्ट पामर:**
"Napoleon spread the revolution beyond France by the tip of the sword."
(नेपोलियन ने तलवार की नोक पर क्रांति को फ्रांस से बाहर तक पहुँचाया।)
- **साइमन शमा:**
"Napoleon was both a child and destroyer of the Revolution."
(नेपोलियन क्रांति का पुत्र भी था और उसका विध्वंसक भी।)
- *"Napoleon replaced liberty with order, and equality with efficiency."*
(नेपोलियन ने स्वतंत्रता के स्थान पर व्यवस्था, और समानता के स्थान पर दक्षता को रखा।)
- *"He built the modern state on the ruins of the old regime and the chaos of revolution."*
(उसने पुराने शासन के खंडहरों और क्रांति की अव्यवस्था पर आधुनिक राज्य की नींव रखी।)

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

Ch 6 - औद्योगिक क्रांति (Industrial Revolution)

6.1 औद्योगिक क्रांति शब्द की उत्पत्ति व प्रयोग
6.2 औद्योगिक क्रांति का परिचय
6.3 औद्योगिक क्रांति की पृष्ठभूमि एवं कारण
6.4 औद्योगिक क्रांति ब्रिटेन में ही क्यों प्रारंभ हुई?
6.5 औद्योगिक क्रांति का स्वरूप / प्रकृति
6.6 औद्योगिक क्रांति की प्रमुख विशेषताएँ
6.7 औद्योगिक क्रांति के क्षेत्र
6.8 औद्योगिक क्रांति के प्रभाव
6.9 औद्योगिक क्रांति का प्रसार (ब्रिटेन से बाहर)
6.10 औद्योगिक क्रांति की विरासत
6.11 महत्वपूर्ण कथन
6.12 शब्दावली

6.1 औद्योगिक क्रांति शब्द की उत्पत्ति व प्रयोग

- "**Industrial Revolution**" (औद्योगिक क्रांति) शब्द का सबसे प्रारंभिक प्रयोग **1799 में फ्रांसीसी राजनयिक Louis-Guillaume Otto** ने किया था। उन्होंने इसे एक ऐसे काल के रूप में संदर्भित किया जिसमें ब्रिटेन में उद्योगों और उत्पादन प्रणालियों में बड़े पैमाने पर परिवर्तन देखने को मिला।
- परंतु यह शब्द **औपचारिक और विश्लेषणात्मक अर्थों में** प्रचलित हुआ **ब्रिटिश इतिहासकार Arnold Toynbee** द्वारा। 1881–1884 के बीच अपने व्याख्यानों में उन्होंने **1760 से 1830** के मध्य इंग्लैंड में हुए **आर्थिक, सामाजिक व तकनीकी परिवर्तनों** को "Industrial Revolution" कहा।
- टॉयनबी ने इसे केवल तकनीकी नवाचार नहीं, बल्कि एक **संवृद्ध पूंजीवादी अर्थव्यवस्था, मजदूरी श्रमिकों के उदय, नगरीकरण, और उत्पादन के साधनों के पुनर्गठन** के रूप में देखा।
- धीरे-धीरे यह शब्द **यूरोप, अमेरिका, जापान** समेत विश्व के अन्य हिस्सों में 18वीं–19वीं सदी में घटित समान बदलावों के लिए प्रयुक्त होने लगा।
- आधुनिक इतिहासलेखन में यह शब्द **मानव इतिहास की सबसे निर्णायक आर्थिक-सामाजिक क्रांति** के रूप में स्थापित हो चुका है, जिसकी तुलना केवल नवपाषाण क्रांति से की जाती है।

6.2 औद्योगिक क्रांति का परिचय

- **औद्योगिक क्रांति** (Industrial Revolution) 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में **ब्रिटेन** में प्रारंभ हुई एक व्यापक परिवर्तन की प्रक्रिया थी, जिसने उत्पादन, श्रम, परिवहन, ऊर्जा, समाज और अर्थव्यवस्था की संरचना को मौलिक रूप से बदल दिया।
- यह क्रांति **कुटीर उद्योगों (Cottage Industries)** और हस्तशिल्प पर आधारित परंपरागत उत्पादन प्रणाली को समाप्त कर **मशीनों द्वारा संचालित बड़े पैमाने के कारखाना उत्पादन (Factory-based Mass Production)** की ओर संक्रमण था।
- इसके अंतर्गत **नवीन यांत्रिक अविष्कार** (जैसे – स्पिनिंग जेनी, वाट का स्टीम इंजन), **ऊर्जा स्रोतों का बदलाव** (जैसे – जल, कोयला, भाप), और **परिवहन क्रांति** (रेल, जलपोत) शामिल थे।
- इस क्रांति के परिणामस्वरूप **औद्योगिक पूंजीवाद** का विकास हुआ, जिसने उत्पादन के साधनों को कुछ पूंजीपतियों के नियंत्रण में ला दिया और **मजदूरी आधारित श्रमिक वर्ग (Proletariat)** की रचना की।
- **नगरीकरण (Urbanization)** की तीव्र गति के साथ पारंपरिक ग्रामीण समाज टूटने लगा और नए औद्योगिक नगरों का उदय हुआ।
- आर्थिक दृष्टि से इसने वैश्विक बाजारों, बैंकिंग व्यवस्था, व्यापार, निवेश, और प्रतिस्पर्धा को जन्म दिया, वहीं सामाजिक दृष्टि से **वर्ग संघर्ष, बाल श्रम, असमानता, और श्रमिक आंदोलनों** की नींव रखी।
- ऐतिहासिक दृष्टि से यह मानव इतिहास की **दूसरी सबसे महत्त्वपूर्ण क्रांति** मानी जाती है, जिसका प्रभाव आज तक वैश्विक औद्योगिक ढांचे में परिलक्षित होता है।

6.3 औद्योगिक क्रांति की पृष्ठभूमि एवं कारण

- औद्योगिक क्रांति का प्रारंभ कोई आकस्मिक घटना नहीं थी, बल्कि यह अनेक ऐतिहासिक, सामाजिक, तकनीकी और आर्थिक कारकों की परिणति थी। इसके प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं:

1. कृषि क्रांति (Agricultural Revolution):

17वीं–18वीं शताब्दी में यूरोप, विशेषतः ब्रिटेन में कृषि तकनीकों में सुधार (जैसे – चार-चक्र प्रणाली, मैकेनिकल सीड ड्रिल) के कारण **उत्पादन में वृद्धि** हुई। इससे खाद्य आपूर्ति सुनिश्चित हुई और श्रमिक आबादी अन्य क्षेत्रों में स्थानांतरित हो सकी।

2. जनसंख्या वृद्धि (Population Growth):

बेहतर पोषण और चिकित्सा सेवाओं से मृत्यु दर घटी और

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हुई, जिससे **प्रचुर श्रमबल** और **बाजार की माँग** उपलब्ध हुई।

3. वैज्ञानिक खोजें और तकनीकी नवाचार

- औद्योगिक क्रांति केवल कुछ यांत्रिक खोजों तक सीमित नहीं रही, बल्कि यह **लगातार तकनीकी नवाचारों की श्रृंखला** थी, जिसने कृषि, वस्त्र, धातु, परिवहन, संचार और ऊर्जा जैसे क्षेत्रों को पूर्णतः रूपांतरित कर दिया।

A. वस्त्र उद्योग में:

- **फ्लाइंग शटल (1733)** – *जॉन के* द्वारा, बुनाई की गति दो गुनी हुई।
- **स्पिनिंग जेनी (1764)** – *जेम्स हरग्रेव्स* द्वारा, एक साथ कई धागों की कताई।
- **वाटर फ्रेम (1769)** – *रिचर्ड आर्कराइट* द्वारा, जल-शक्ति से संचालित कताई मशीन।
- **स्पिनिंग म्यूल (1779)** – *सैमुएल क्रॉम्पटन* द्वारा, स्पिनिंग जेनी व वाटर फ्रेम का संयोजन।
- **पावर लूम (1787)** – *एडमंड कार्टराइट* द्वारा, स्वचालित करघा।

B. ऊर्जा और इंजन तकनीक में:

- **न्यूकॉमन स्टीम इंजन (1712)** – *थॉमस न्यूकॉमन* द्वारा, खदानों से पानी निकालने हेतु।
- **जेम्स वाट स्टीम इंजन (1776)** – ऊर्जा दक्षता व गति नियंत्रण में सुधार।
- **हाई प्रेशर इंजन (1800s)** – *रिचर्ड ट्रेविथिक* और *ओलिवर इवांस* द्वारा, भारी मशीनों के लिए।

C. परिवहन क्षेत्र में:

- **स्टीम लोकोमोटिव (1814)** – *जॉर्ज स्टीफेंसन* द्वारा, "ब्ल्यूचर" इंजन।
- **रेलवे लाइन (1825)** – *स्टॉकटन से डार्लिंगटन*, दुनिया की पहली सार्वजनिक रेलवे।
- **स्टीमशिप (1807)** – *रॉबर्ट फुल्टन* द्वारा "क्लेर्मोन्ट" नाव का संचालन।

D. धातु व निर्माण क्षेत्र में:

- **ब्लास्ट फर्नेस सुधार** – *अब्राहम डार्बी* द्वारा कोक आधारित लौह निष्कर्षण।
- **बेसेमर प्रक्रिया (1856)** – *हेनरी बेसेमर* द्वारा स्टील उत्पादन की सस्ती तकनीक।
- **रोलिंग मिल्स** – लोहे की चादरों और पट्टियों के उत्पादन में सुधार।

E. संचार और सूचना तकनीक में:

- **टेलीग्राफ (1837)** – *सैमुएल मोर्स* द्वारा, मोर्स कोड प्रणाली सहित।
- **डैग्युरियोटाइप कैमरा (1839)** – *लुई डैग्युरे* द्वारा, आधुनिक फोटोग्राफी की शुरुआत।
- **प्रिंटिंग प्रेस में सुधार** – *स्टेनहोप प्रेस* और *स्ट्रीम पावर प्रेस* से तेजी से मुद्रण।

- इन नवाचारों ने '**औद्योगीकरण**' **को केवल उत्पादन तक सीमित न रखते हुए परिवहन, संचार, ऊर्जा और संरचना के स्तर पर भी क्रांतिकारी परिवर्तन** किया, जिसने आधुनिक विश्व की नींव रखी।

4. वित्तीय संस्थाओं का विकास:

- औद्योगिक क्रांति की सफलता में **आधुनिक वित्तीय संस्थाओं और पूंजीगत व्यवस्था का निर्णायक योगदान** रहा। उत्पादन के यंत्रीकरण और बड़े निवेश की आवश्यकता को पूरा करने हेतु **बैंकिंग, बीमा, ऋण और स्टॉक बाज़ार जैसे वित्तीय ढाँचे** विकसित हुए।
- **प्रमुख संस्थाएँ और उनका योगदान**
  - **बैंक ऑफ इंग्लैंड (स्थापना: 1694):** ब्रिटेन का केन्द्रीय बैंक, जिसने पहली बार *राष्ट्रीय कर्ज़ प्रणाली*, *ऋण पत्र* (government bonds) और *ब्याज दर नीति* की शुरुआत की। इसने व्यापारियों और उद्योगपतियों को *दीर्घकालिक वित्तपोषण* की सुविधा दी।
  - **लंदन स्टॉक एक्सचेंज (अवसर: 1773, औपचारिक स्थापना: 1801):** यह विश्व के सबसे पुराने स्टॉक एक्सचेंजों में से एक है, जिसने *औद्योगिक कंपनियों के शेयरों के लेन-देन* का संगठित मंच प्रदान किया। इसने *जन-सहभागिता आधारित पूंजी जुटाने* की परंपरा को जन्म दिया।
  - **बीमा कंपनियाँ (जैसे – लॉयड्स ऑफ लंदन, स्थापना: 1686):** व्यापारिक और औद्योगिक जोखिमों जैसे –

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

समुद्री व्यापार, आग, दुर्घटनाओं से सुरक्षा के लिए बीमा प्रणाली ने *निवेशकों में आत्मविश्वास* पैदा किया।

- **निजी और व्यावसायिक बैंक (जैसे – बार्कलेज बैंक, 1690; रोथसचाइल्ड बैंकिंग समूह):**
  इन्होंने *उद्योगों को पूंजी, क्रेडिट, वॉरंट*, और *आवर्ती ऋण सुविधा* उपलब्ध करवाई, जिससे बड़े कारखानों और मशीनों में निवेश संभव हो पाया।

- **प्रणालीगत सुधार और लाभ:**
  - **ऋण प्रणाली का औपचारिकीकरण** – उद्योगपतियों को उपकरण, कच्चा माल और श्रम हेतु पूर्व-वित्त उपलब्ध हुआ।
  - **ब्याज दर स्थिरीकरण** और **क्रेडिट रेटिंग** जैसी अवधारणाओं ने पूंजी के प्रवाह को संगठित किया।
  - **वित्तीय संस्थानों ने निवेशकों और श्रमिकों के बीच विश्वास का सेतु** बनाया, जिससे पूंजीवाद की नींव मज़बूत हुई।

5. खनिज संसाधनों की प्रचुरता – विस्तार से विवरण:

- **ब्रिटेन की भूगर्भीय संरचना** कोयला (Coal) और लौह अयस्क (Iron Ore) जैसे खनिजों से समृद्ध थी, विशेषकर **लंकाशायर, यॉर्कशायर, वेल्स और मिडलैंड्स** क्षेत्रों में।
- **कोयला** ने मशीनों को चलाने के लिए **भाप शक्ति (Steam Power)** का स्रोत प्रदान किया, जो औद्योगिक क्रांति की ऊर्जा रीढ़ बना।
- **लोहे** का उपयोग मशीनों, रेलवे लाइनों, पुलों और भवनों के निर्माण में हुआ।
- **अब्राहम डार्बी** ने कोक (coke) आधारित लोहे की पिघलाने की तकनीक विकसित की, जिससे लोहे का उत्पादन सस्ता और तीव्र हुआ।
- खनिज संसाधनों की निकटता ने **परिवहन लागत घटाई** और कारखानों की स्थापना को सुविधाजनक बनाया।

6. उपनिवेशों से पूंजी और कच्चा माल – विस्तार से विवरण:

- **ब्रिटिश साम्राज्य** ने 17वीं–19वीं शताब्दी के बीच एशिया (भारत, चीन), अफ्रीका, अमेरिका व कैरेबियन क्षेत्रों में **विस्तृत उपनिवेशीय नियंत्रण** स्थापित किया।
- उपनिवेशों से ब्रिटेन को **कच्चा माल** जैसे – **कपास (India, Egypt), गन्ना और चीनी (West Indies), मसाले और चाय (India, Ceylon), रबर, लकड़ी, अफ्रीकी खनिज** आदि बड़ी मात्रा में प्राप्त हुआ।
- उपनिवेश **न केवल संसाधनों का स्रोत बने**, बल्कि वहाँ के बाजारों में ब्रिटिश उत्पादों की खपत ने **औद्योगिक उत्पादन को वैश्विक मांग** से जोड़ दिया।
- ईस्ट इंडिया कंपनी जैसे संस्थानों ने **व्यापारिक लाभ और राजस्व** के माध्यम से औद्योगिकीकरण को आर्थिक बल प्रदान किया।
- गुलामों की मज़दूरी और स्थानीय संसाधनों के दोहन से ब्रिटेन में **पूंजी संचय** हुआ, जिसे उद्योगों में निवेश किया गया।

7. राजनीतिक स्थायित्व व उदार नीतियाँ – विस्तार से विवरण:

- 1688 की "**ग्लोरियस रेवोल्यूशन**" के बाद ब्रिटेन में **संवैधानिक राजशाही** स्थापित हुई, जिसने राजनीतिक स्थायित्व और **कानून के शासन (Rule of Law)** को सुनिश्चित किया।
- संसद ने व्यापार, संपत्ति अधिकार, अनुबंधों की रक्षा, और नवाचार को प्रोत्साहन देने वाले **कानूनी ढांचे** बनाए।
- **Laissez-faire अर्थनीति** (सरकारी हस्तक्षेप से मुक्त मुक्त-बाजार व्यवस्था) के तहत निजी उद्यमों को **पूरा स्वतंत्रता और संरक्षण** मिला।
- **पेटेंट कानून (Statute of Monopolies, 1624)** ने आविष्कारकों को अधिकारिक मान्यता और आर्थिक लाभ की गारंटी दी।
- ये सब नीतियाँ **व्यापारियों, वैज्ञानिकों, और निवेशकों में विश्वास पैदा करने में सहायक रहीं**, जिससे औद्योगिक विकास को गति मिली।

6.4 औद्योगिक क्रांति ब्रिटेन में ही क्यों प्रारंभ हुई?

- औद्योगिक क्रांति का आरंभ 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में विशेषतः **ब्रिटेन** में हुआ, न कि फ्रांस, जर्मनी या अन्य समृद्ध राष्ट्रों में। इसके पीछे कई ठोस तथ्यात्मक कारण थे:

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

1. खनिज संसाधनों की प्रचुरता:

- ब्रिटेन के **वेल्स, मिडलैंड्स, नॉर्थ ईस्ट इंग्लैंड** में प्रचुर मात्रा में **कोयला (Coal)** और **लौह अयस्क (Iron Ore)** उपलब्ध था।
- अब्राहम डार्बी ने **कोक** से लोहा पिघलाने की तकनीक (1709) विकसित की, जिससे उत्पादन लागत कम हुई।
- 1780–1800 के बीच ब्रिटेन का कोयला उत्पादन प्रति वर्ष 10 मिलियन टन से बढ़कर 15 मिलियन टन हो गया।

2. राजनीतिक स्थायित्व और संवैधानिक शासन:

- 1688 की **Glorious Revolution** के बाद ब्रिटेन में **संवैधानिक राजशाही और संसदवाद** स्थापित हुआ।
- *Habeas Corpus Act (1679), Bill of Rights (1689)* जैसे क़ानूनों ने **व्यक्तिगत स्वतंत्रता व संपत्ति अधिकार** सुनिश्चित किए।
- इस स्थिर शासन प्रणाली ने **निवेशकों में विश्वास** और **व्यापार की सुरक्षा** को बढ़ावा दिया।

3. औपनिवेशिक साम्राज्य और पूंजी संचय:

- ब्रिटेन के पास 18वीं शताब्दी तक **60+ उपनिवेश** थे – भारत, अमेरिका, वेस्ट इंडीज, ऑस्ट्रेलिया, अफ्रीका आदि।
- **कच्चा माल** (कपास, गन्ना, मसाले, अफ्रीकी सोना), **सस्ते श्रमिक**, और **बड़े उपनिवेशी बाज़ार** ने ब्रिटेन को अन्य देशों की तुलना में **वित्तीय व वाणिज्यिक बढ़त** दी।
- 1700–1800 के बीच ब्रिटेन का विदेशी व्यापार **तीन गुना** बढ़ा।

4. पेटेंट कानून और नवाचार को संरक्षण:

- **Statute of Monopolies (1624)** द्वारा ब्रिटेन ने दुनिया की पहली पेटेंट प्रणाली लागू की।
- 1750–1800 के बीच **1500+ पेटेंट** जारी किए गए – अधिकांश यंत्र, उत्पादन तकनीक और रसायनों से संबंधित थे।
- यह नवप्रवर्तनकर्ताओं को **आर्थिक लाभ और अधिकारिक मान्यता** देता था।

5. भौगोलिक स्थिति और परिवहन सुविधा:

- ब्रिटेन की **द्वीपीय स्थिति** ने इसे आंतरिक विद्रोहों और आक्रमणों से बचाए रखा।
- देश में **1700–1830 के बीच 4000 मील नहरें** बनाई गईं (Bridgewater Canal, 1761), जिससे कोयला, कच्चा माल और औद्योगिक वस्तुएँ सस्ते में परिवहन हो सकीं।
- **प्राकृतिक बंदरगाहों** (London, Liverpool, Bristol) और **Merchant Navy** ने वैश्विक व्यापार को सुगम बनाया।

6. शिक्षा, विज्ञान और उद्यमशीलता की संस्कृति:

- **रॉयल सोसाइटी (1660)** और **लंदन स्कूल ऑफ माइनिंग (1851)** जैसे संस्थानों ने वैज्ञानिक अनुसंधान को प्रोत्साहन दिया।
- वैज्ञानिक चेतना और **उद्यमशील व्यापारिक वर्ग (Bourgeoisie)** ने नवाचारों को व्यावसायिक लाभ में बदला।

- ब्रिटेन के पास 18वीं शताब्दी में वो **प्राकृतिक संसाधन, वैज्ञानिक वातावरण, राजनीतिक स्थिरता, वैश्विक पूंजी प्रवाह और संस्थागत ढांचा** मौजूद था, जिसने उसे औद्योगिक क्रांति की अगुवाई करने में सक्षम बनाया, जबकि अन्य देश इन क्षेत्रों में पीछे थे।

6.5 औद्योगिक क्रांति का स्वरूप / प्रकृति

- औद्योगिक क्रांति का स्वरूप केवल तकनीकी परिवर्तन नहीं था, बल्कि यह एक **समग्र सामाजिक-आर्थिक और उत्पादन प्रणाली का कायांतरण** था, जिसमें उत्पादन के साधन, श्रम, पूंजी और समाज की संरचना में मूलभूत बदलाव आए।

इसके मुख्य आयाम निम्नलिखित हैं:

1. तकनीकी नवाचारों की श्रृंखला:

- औद्योगिक क्रांति का मूल आधार **निरंतर तकनीकी खोजों** पर था।
- *स्पिनिंग जेनी (1764), पावर लूम (1787), स्टीम इंजन (वाट, 1776), बेस्सेमर स्टील प्रोसेस (1856)* जैसे आविष्कारों ने **मैनुअल श्रम की जगह मशीनों को प्रतिस्थापित** कर दिया।
- इससे उत्पादन की **गति, मात्रा और सुसंगतता** में क्रांतिकारी वृद्धि हुई।

2. श्रम विभाजन और बड़े पैमाने पर उत्पादन:

- **एडम स्मिथ** द्वारा प्रतिपादित *डिवीजन ऑफ लेबर* सिद्धांत को औद्योगिक कारखानों में व्यवहार में लाया गया।
- प्रत्येक श्रमिक केवल एक विशेष कार्य करता था, जिससे **दक्षता और उत्पादकता** में वृद्धि हुई।

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

• इससे **स्टैंडर्डाइज्ड और मास प्रोडक्शन** की प्रक्रिया का जन्म हुआ – वस्तुएँ सस्ती और सुलभ बन गईं।

3. उद्योगों का नगरीय केंद्रीकरण:

• मशीनों, श्रमिकों और कच्चे माल की सुविधा के लिए उद्योग **नगरों में केंद्रित** होने लगे।

• इससे **ग्रामीण से नगरीय स्थानांतरण** (Urban Migration) तेज हुआ और *मैनचेस्टर, बर्मिंघम, लिवरपूल* जैसे नए औद्योगिक नगर उभरे।

• नगरीकरण ने **नए सामाजिक ढांचे** को जन्म दिया – मजदूर बस्तियाँ, फैक्ट्री कॉलोनियाँ, शहरी मजदूर वर्ग।

4. पूंजीवादी उत्पादन संबंधों की शुरुआत:

• उत्पादन के साधनों (भूमि, मशीन, पूंजी) पर **कुछ पूंजीपतियों का नियंत्रण** स्थापित हुआ।

• मजदूर वर्ग (Proletariat) केवल **मजदूरी के लिए श्रम बेचने वाला वर्ग** बन गया।

• इससे **श्रम-पूंजी संघर्ष**, **मूल्य अधिशेष की अवधारणा**, और **शोषण की आलोचना** (कार्ल मार्क्स) का जन्म हुआ।

• यह उत्पादन व्यवस्था **मुनाफा, प्रतिस्पर्धा और नवाचार** पर आधारित थी – जिसे *कैपिटलिज्म* कहते हैं।

6.6 औद्योगिक क्रांति की प्रमुख विशेषताएँ

• औद्योगिक क्रांति ने पारंपरिक समाज, उत्पादन और श्रम संबंधों की संपूर्ण संरचना को परिवर्तित कर दिया। इसके प्रमुख लक्षण निम्नलिखित हैं:

1. मशीनरी आधारित उत्पादन प्रणाली:

• औद्योगिक क्रांति से पूर्व उत्पादन मुख्यतः **हस्तशिल्प व कुटीर उद्योगों** पर आधारित था।

• तकनीकी नवाचारों (जैसे – *स्पिनिंग जेनी, पावर लूम, स्टीम इंजन*) के कारण उत्पादन **स्वचालित मशीनों द्वारा बड़े पैमाने पर** होने लगा।

• इससे **मैनुअल श्रम की भूमिका घटकर पर्यवेक्षण तक सीमित** हो गई और **Factory System** का जन्म हुआ।

2. ऊर्जा स्रोतों में क्रांतिकारी परिवर्तन:

• परंपरागत ऊर्जा स्रोत – *मानव श्रम, पशु शक्ति, जल* की जगह अब **कोयला और भाप (Steam Power)** ने ले ली।

• **स्टीम इंजन (James Watt, 1776)** ने औद्योगिक संयंत्रों, रेलगाड़ियों और जहाजों को शक्ति प्रदान की।

• यह परिवर्तन उत्पादन को **निरंतर, तीव्र और स्थानिक रूप से स्वतंत्र** बनाने में सहायक बना।

3. यातायात के साधनों में क्रांति:

• औद्योगिक विकास की माँग पर **रेलवे (George Stephenson – 1825)** और **स्टीमशिप (Robert Fulton – 1807)** का आविष्कार हुआ।

• नहरों (Bridgewater Canal) और सड़कों का जाल बिछा।

• इससे कच्चा माल और तैयार वस्तुएँ दूर-दराज तक कम लागत में पहुँचने लगीं – *वैश्विक व्यापार* का विस्तार हुआ।

4. मजदूरी आधारित शहरी श्रमिक वर्ग का उदय:

• मशीनों और कारखानों में कार्य हेतु ग्रामीण क्षेत्रों से बड़ी संख्या में लोग **नगरीय केंद्रों में प्रवास** करने लगे।

• इससे **शहरी मजदूर वर्ग (Proletariat)** का उदय हुआ, जो **पूंजीपति वर्ग (Bourgeoisie)** के अधीन कार्य करता था।

• श्रमिकों की स्थिति अमानवीय थी – *12–16 घंटे की पारी, कम मजदूरी, बाल श्रम*, और **श्रमिक आंदोलन** की शुरुआत यहीं से हुई।

5. पर्यावरणीय प्रदूषण और सामाजिक शोषण की वृद्धि:

• कोयला-आधारित ऊर्जा और कारखानों से निकले धुएँ व अपशिष्ट ने **वायु, जल और भूमि प्रदूषण** को जन्म दिया।

• नगरीकरण ने **अस्वस्थकर बस्तियों, भीड़, अपर्याप्त सीवरेज और बीमारियों** को जन्म दिया।

• सामाजिक असमानता और **आर्थिक शोषण** बढ़ा, जिससे **समाजवाद, ट्रेड यूनियन आंदोलन, और श्रमिक कानूनों** की माँग तेज हुई।

6.7 औद्योगिक क्रांति के क्षेत्र

• औद्योगिक क्रांति एक बहु-आयामी परिवर्तन था जिसने मानव समाज के **उत्पादन, संसाधन उपयोग, श्रम संगठन, परिवहन, और संचार प्रणाली** को जड़ से बदल दिया।

1. वस्त्र उद्योग (Textile Industry):

• यह क्षेत्र औद्योगिक क्रांति का प्रारंभिक केंद्र था।

• मशीनों के आविष्कार जैसे –

→ *स्पिनिंग जेनी* (James Hargreaves, 1764),

→ *वाटर फ्रेम* (Richard Arkwright, 1769),

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

Click on this page for Test Schedule & Regular Content related updates:-

CLICK HERE

Register Yourself for 1st Free Test:-

Registration link is available on

@RiseJaipur / @AbhyasRasMains Telegram Channel

प्रथम टेस्ट निःशुल्क CLIK ON THIS PAGE FOR MORE UPDATES

ऑफलाइन सेंटर
Main Riddhi-Siddhi Chauraha, Jaipur
Under Triveni Puliya, Gopalpura Jaipur

For More Information
+91 9785606061

@RiseJaipur
@AbhyasRasMains

Download The App Now
"RISE CIVIL SERVICES"

RISE
An Institute for Civil Services

→ *स्पिनिंग म्यूल* (Samuel Crompton, 1779),
→ *पावर लूम* (Edmund Cartwright, 1787) – ने **कपास से वस्त्र निर्माण की पूरी प्रक्रिया को यंत्रीकृत कर दिया**।

• **मैनचेस्टर, लंकाशायर** जैसे नगर "Cottonopolis" के रूप में विकसित हुए।

• भारत और अमेरिका से कपास का आयात हुआ; ब्रिटिश वस्त्र **उपनिवेशों में निर्यात** किए गए, जिससे वैश्विक बाज़ार का विस्तार हुआ।

2. धातु एवं स्टील उद्योग (Iron & Steel Industry):

• **अब्राहम डार्बी (1709)** ने कोक का उपयोग कर लोहे को पिघलाने की तकनीक विकसित की।

• **हेनरी बेसेमर (1856)** ने स्टील उत्पादन हेतु *Bessemer Converter* बनाया – इससे स्टील सस्ता और द्रुतगामी बना।

• **स्टील** का प्रयोग रेलवे, मशीनें, शिपबिल्डिंग, भवन निर्माण आदि में हुआ।

• **शेफ़ील्ड, बर्मिंघम, ग्लासगो** धातु उद्योग के बड़े केंद्र बने।

3. परिवहन (Transport):

• **स्टीम लोकोमोटिव (1814)** – George Stephenson ने "Blücher" और बाद में "Rocket" (1829) का निर्माण किया।

• **Stockton-Darlington Railway (1825)** – पहली सार्वजनिक यात्री रेलवे।

• **स्टीमशिप Clermont (1807)** – Robert Fulton द्वारा, जिससे समुद्री व्यापार तीव्र हुआ।
.**जॉन मकेडम** ने पक्की सड़के बनाई इसको *मकेडमइज़* रोड्स कहा गया

• **नहरें (Bridgewater Canal, 1761)**, पक्की सड़कें (Macadam Method) से माल और श्रम का सस्ता व तेज परिवहन संभव हुआ।

4. कृषि में यंत्रीकरण (Mechanization of Agriculture):

• **Jethro Tull** द्वारा *Seed Drill* (1701) ने बीजों को गहराई में बोने की तकनीक दी।

• *Threshing Machine, Mechanical Reaper, Iron Plough* जैसी मशीनें कृषि को अधिक उत्पादक व श्रममुक्त बनाने लगीं।

• **Enclosure Movement** ने छोटे किसानों को भूमि से वंचित कर **श्रमिक वर्ग की आपूर्ति** बढ़ाई।

5. रसायन, खनन, निर्माण और संचार:

• **रसायन उद्योग (Chemical Industry):**

• **Leblanc Process** (1790) द्वारा सोडियम कार्बोनेट का उत्पादन।

• **William Perkin** ने 1856 में पहला कृत्रिम रंग (mauveine) बनाया।

• साबुन, ग्लास, रसायन, अम्ल – सबमें वाणिज्यिक पैमाने पर उत्पादन शुरू हुआ।

• **खनन (Mining):**

• कोयले की मांग ने खनन को तीव्र किया – *Newcomen Engine (1712)* व *Watt Engine (1776)* का उपयोग खदानों से पानी निकालने हेतु हुआ।

• ब्रिटेन का कोयला उत्पादन 1700 में ~3 मिलियन टन से 1850 तक ~50 मिलियन टन तक पहुंच गया।

• **निर्माण (Construction):**

• **Cast Iron Architecture** – पुलों (जैसे *Iron Bridge*, 1779) और फैक्ट्रियों का निर्माण।

• रेल लाइनें, पुल, रेलवे स्टेशन, बंदरगाह और नगर नियोजन में नया दौर शुरू हुआ।

• **संचार (Communication):**

• **सैमुएल मोर्स** द्वारा *टेलीग्राफ* (1837) व *मोर्स कोड* ने तत्काल सूचना संप्रेषण संभव बनाया।

• **डाक सुधार (Penny Post, 1840)**, समाचार पत्रों का प्रसार – जनजागरण में सहायक।

6.8 औद्योगिक क्रांति के प्रभाव

• औद्योगिक क्रांति ने मानव सभ्यता के **सामाजिक ढांचे, आर्थिक संबंधों, राजनीतिक चेतना, और वैज्ञानिक दृष्टिकोण** में दूरगामी परिवर्तन किए। यह परिवर्तन केवल यांत्रिक नहीं, बल्कि **संरचनात्मक क्रांति** थे।

1. सामाजिक प्रभाव (Social Impact):

• **ग्रामीण से नगरीय संक्रमण:**
– परंपरागत कृषि आधारित समाज में बदलाव आया; **ग्रामीण जनसंख्या का बड़े पैमाने पर नगरों की ओर पलायन** हुआ।
– *मैनचेस्टर, बर्मिंघम, ग्लासगो* जैसे शहर तेजी से औद्योगिक नगरों में परिवर्तित हुए।

• **श्रमिक वर्ग (Proletariat) का उदय:**
– मशीनों के संचालन हेतु मजदूरों की आवश्यकता से **मजदूरी आधारित श्रमिक वर्ग** उत्पन्न हुआ।

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

– *कार्यस्थल पर असमानता, बाल श्रम, लम्बे कार्य घंटे और खराब परिस्थितियाँ* आम हो गईं।

• **परिवार और स्त्री जीवन में बदलाव:**

– पुरुषों के साथ-साथ महिलाएँ और बच्चे भी फैक्ट्रियों में काम करने लगे।

– परंपरागत संयुक्त परिवार की संरचना ढहने लगी और **श्रमिक बस्तियाँ एवं नगरीय जीवनशैली** का विस्तार हुआ।

2. आर्थिक प्रभाव (Economic Impact):

• **उत्पादन और उत्पादकता में वृद्धि:**

– मशीनरी और फैक्ट्री प्रणाली ने *मास प्रोडक्शन* को संभव बनाया।

– वस्त्र, इस्पात, कोयला, रसायन, परिवहन आदि क्षेत्रों में उत्पादन कई गुना बढ़ा।

• **पूंजीवाद का उदय:**

– उत्पादन के साधनों पर कुछ पूंजीपतियों का नियंत्रण स्थापित हुआ।

– मुनाफे पर आधारित **पूंजीवादी उत्पादन संबंधों** का विकास हुआ।

• **वैश्विक व्यापार और उपनिवेशवाद का विस्तार:**

– ब्रिटेन के औद्योगिक उत्पाद उपनिवेशों में निर्यात किए गए।

– उपनिवेश केवल **कच्चा माल व बाज़ार** नहीं, बल्कि **औद्योगिक पूंजी के स्रोत** बन गए।

3. राजनीतिक प्रभाव (Political Impact):

• **उदारवादी विचारधारा और जनाधिकार आंदोलन:**

– **Locke, Rousseau** आदि विचारकों के प्रभाव से **राजनीतिक लोकतंत्र, मतदान अधिकार और समानता** की माँगें बढ़ीं।

– **1832 का रिफॉर्म एक्ट** (ब्रिटेन) ने मध्यम वर्ग को राजनीतिक प्रतिनिधित्व दिया।

• **श्रमिक आंदोलन और यूनियन संस्कृति:**

– **ट्रेड यूनियन एक्ट (1871)** द्वारा यूनियनों को मान्यता दी गई।

– *चार्टिस्ट आंदोलन* (1838–1857) के माध्यम से सार्वभौमिक मताधिकार और श्रमिक अधिकारों की माँग उठी।

• **राज्य का आर्थिक हस्तक्षेप:**

– शोषण की स्थिति के कारण सरकारों को **न्यूनतम मजदूरी, बाल श्रम प्रतिबंध, काम के घंटे निर्धारण** जैसे कानून लाने पड़े।

4. वैज्ञानिक व तकनीकी प्रभाव (Scientific & Technological Impact):

• **निरंतर नवाचार की परंपरा:**

– उत्पादन की प्रतिस्पर्धा और आवश्यकता ने **प्रयोगशालाओं और अनुसंधान** को बढ़ावा दिया।

– **विज्ञान और उद्योग** के बीच *Institutional Linkages* बने।

• **औद्योगिक अनुसंधान केंद्रों की स्थापना:**

– निजी कंपनियाँ व सरकारें अब **R&D (Research & Development)** में निवेश करने लगीं।

– *Applied Science* का दौर आरंभ हुआ – जैसे रसायन, इंजीनियरिंग, ध्वनि, संचार आदि।

• **प्रौद्योगिकीय शिक्षा संस्थानों का विकास:**

– **पॉलिटेक्निक, इंजीनियरिंग कॉलेज, माइनिंग स्कूल** की स्थापना हुई।

– विज्ञान अब केवल ज्ञान नहीं, **व्यवसायिक उत्पादन का उपकरण** बना।

6.9 औद्योगिक क्रांति का प्रसार (ब्रिटेन से बाहर)

- ब्रिटेन में आरंभ हुई औद्योगिक क्रांति धीरे-धीरे अन्य देशों में भी फैली, किंतु **इसका स्वरूप, गति और प्रभाव** प्रत्येक देश में भिन्न रहा। जहाँ यूरोप और अमेरिका ने इसे अपनाकर औद्योगिक विकास किया, वहीं उपनिवेशों में इसका स्वरूप **शोषण व संसाधन निकासी तक सीमित** रहा।
- औद्योगिक क्रांति का प्रसार यूरोप और अमेरिका में सशक्त आर्थिक और तकनीकी उन्नति के रूप में हुआ, जबकि उपनिवेशों में यह एक शोषणात्मक प्रक्रिया बनकर रह गई। जापान इसका अपवाद रहा, जिसने इसे **राष्ट्र निर्माण** के साधन के रूप में अपनाया।

1. यूरोप में प्रसार:

(क) बेल्जियम:

– औद्योगिक क्रांति को अपनाने वाला पहला यूरोपीय देश (1810s–1830s)।

– *कोयला, इस्पात, वस्त्र उद्योग*, और रेलवे नेटवर्क में तीव्र विकास हुआ।

– *John Cockerill* जैसे उद्योगपतियों ने ब्रिटिश तकनीकों को अपनाया।

(ख) फ्रांस:

– औद्योगिक क्रांति अपेक्षाकृत धीमी गति से फैली (1830s के बाद)।

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

– वस्त्र, रसायन और परिवहन क्षेत्र में वृद्धि; **राजनीतिक अस्थिरता और कृषि प्रधानता** के कारण गति धीमी रही।

(ग) जर्मनी:

– 1850 के बाद विशेषकर *प्रशा और राइनलैंड* में औद्योगिकीकरण तेज हुआ।

– *क्रुप्प (Krupp)* जैसे भारी उद्योगों और कोयला-इस्पात उत्पादन ने आधार तैयार किया।

– **1871 में एकीकरण** के बाद जर्मनी विश्व की बड़ी औद्योगिक शक्तियों में से एक बना।

2. संयुक्त राज्य अमेरिका (USA):

– 1820 के बाद अमेरिका में औद्योगिक क्रांति ने गति पकड़ी।

– *Lowell Mills* (मैसाचुसेट्स) में वस्त्र उद्योग, **रेलवे नेटवर्क, कोयला व स्टील उद्योग** का तीव्र विस्तार हुआ।

– **थॉमस एडीसन, एलेक्सेंडर ग्राहम बेल** जैसे आविष्कारकों ने तकनीकी नवाचार को नई ऊँचाइयाँ दीं।

– **1900 तक अमेरिका विश्व की सबसे बड़ी औद्योगिक अर्थव्यवस्था** बन चुका था।

3. जापान:

– जापान में औद्योगीकरण का आरंभ **1868 की मेइजी पुनर्स्थापन** के बाद हुआ।

– सम्राट मेइजी ने **'पश्चिमीकरण' और 'आधुनिकीकरण'** को नीति का भाग बनाया।

– *कपड़ा उद्योग, शिपबिल्डिंग, रेलवे*, और *शिक्षा प्रणाली* में गहरा परिवर्तन आया।

– जापान एशिया का पहला औद्योगिक राष्ट्र बना, जिसने **पश्चिम के बिना उपनिवेश बना शक्ति अर्जित की।**

4. उपनिवेशों में प्रसार:

– भारत, अफ्रीका, और दक्षिण-पूर्व एशिया जैसे उपनिवेशों में औद्योगिक क्रांति **प्रत्यक्ष विकास के रूप में नहीं**, बल्कि **ब्रिटिश हितों की पूर्ति के उपकरण** के रूप में पहुँची।

– **कच्चा माल (जैसे – कपास, अफीम, रबर)** की आपूर्ति और **औद्योगिक माल के बाजार** के रूप में उपनिवेशों की भूमिका रही।

– ब्रिटिश रेल, डाक, और संचार प्रणाली उपनिवेशों में विकसित हुई – परंतु **स्थानीय औद्योगिक विकास का दमन** किया गया (जैसे – भारत में हथकरघा उद्योग का विनाश)।

– भारत में रेलवे (1853) जैसी अधोसंरचनाएं ब्रिटिश प्रशासनिक व वाणिज्यिक हितों के लिए थीं, न कि स्वदेशी औद्योगिकीकरण हेतु।

6.10 औद्योगिक क्रांति की विरासत

- औद्योगिक क्रांति ने मानव सभ्यता की सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी दिशा को **स्थायी रूप से बदल दिया।** इसके प्रभाव न केवल 18वीं–19वीं शताब्दी तक सीमित रहे, बल्कि उन्होंने **आधुनिक विश्व की नींव रखी।**

1. आधुनिक औद्योगिक समाज की आधारशिला:

• औद्योगिक क्रांति के बाद विश्व **कृषि–प्रधान समाज से औद्योगिक समाज** में रूपांतरित हुआ।

• **Factory system, wage labour, mass production, urbanization** जैसे संस्थानों ने आधुनिक समाज का ढाँचा तैयार किया।

• काम का विभाजन, समयबद्ध उत्पादन और यंत्रीकरण आज की **औद्योगिक और कॉर्पोरेट कार्यसंस्कृति** की जड़ें हैं।

2. पूंजीवाद, समाजवाद व श्रमिक अधिकारों की उत्पत्ति:

• **पूंजीवादी प्रणाली** का उदय हुआ, जहाँ उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व और लाभ-प्रेरणा प्रमुख रही।

• पूंजीपति और श्रमिक के बीच **वर्ग संघर्ष** बढ़ा, जिससे *मार्क्सवाद और समाजवादी विचारधारा* विकसित हुई।

• श्रमिकों के शोषण के विरुद्ध **ट्रेड यूनियन आंदोलन**, **काम के घंटे, मजदूरी और कार्य स्थितियों** पर आधारित **श्रम कानून** अस्तित्व में आए।

3. उपनिवेशवाद और वैश्विक असमानता का विस्तार:

• ब्रिटेन व अन्य यूरोपीय देशों ने औद्योगिक कच्चा माल और बाजार हेतु **एशिया, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका** में **उपनिवेश स्थापित किए।**

• इन उपनिवेशों का औद्योगीकरण अवरुद्ध हुआ और वे केवल **कच्चे माल के आपूर्तिकर्ता और उत्पादों के उपभोक्ता** बनकर रह गए।

• इससे **वैश्विक उत्तर-दक्षिण असमानता** की नींव पड़ी।

4. पर्यावरणीय संकटों की शुरुआत:

• कोयला, लोहा, और औद्योगिक अपशिष्टों के अंधाधुंध उपयोग से **वायु, जल, मृदा प्रदूषण** में वृद्धि

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

हुई।

- **कारखानों से उत्सर्जन, नगरीकरण, और प्राकृतिक संसाधनों के अति-उपयोग** ने **जलवायु परिवर्तन और पारिस्थितिक असंतुलन** को जन्म दिया – जो आज भी वैश्विक संकट हैं।

5. तकनीकी नवाचारों की सतत परंपरा:

- औद्योगिक क्रांति ने **विज्ञान और उद्योग के बीच स्थायी संबंध** स्थापित किया।
- इसके फलस्वरूप आगे चलकर **द्वितीय औद्योगिक क्रांति (Electricity, Chemicals, Steel)**, फिर **डिजिटल क्रांति (Computers, AI)** तक नवाचारों की श्रृंखला बनी रही।
- *R&D, Applied Science, Patent System* की संस्थाएं इस परंपरा की देन हैं।

- औद्योगिक क्रांति की विरासत **उत्पादकता, वैज्ञानिक सोच और वैश्विक आर्थिक नेटवर्क** के रूप में सकारात्मक रही, वहीं **सामाजिक विषमता, पर्यावरणीय क्षरण और उपनिवेशवाद** जैसी चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुईं। यह क्रांति आज के **पूंजीवादी वैश्विक व्यवस्था की आधारशिला** है।

6.11 महत्वपूर्ण कथन

- **अर्नोल्ड टॉयनबी (Arnold Toynbee):**
  - "The Industrial Revolution was not merely a series of mechanical inventions, but a social revolution with social causes as well as profound social effects."
    (औद्योगिक क्रांति केवल यांत्रिक अविष्कारों की श्रृंखला नहीं थी, बल्कि यह सामाजिक कारणों और व्यापक सामाजिक प्रभावों वाली सामाजिक क्रांति थी।)
- **एरिक हॉब्सबॉम (Eric Hobsbawm):**
  - "The Industrial Revolution marks the most fundamental transformation of human life in the history of the world recorded in written documents."
    (औद्योगिक क्रांति मानव जीवन का सबसे बुनियादी परिवर्तन है, जिसका विवरण लिखित इतिहास में दर्ज है।)
- **डेविड लैंडेस (David Landes):**
  - "The Industrial Revolution was the escape from the constraints of nature."
    (औद्योगिक क्रांति प्रकृति की सीमाओं से मुक्ति का प्रयास थी।)
- **कार्ल मार्क्स (Karl Marx):**
  - "The Industrial Revolution created the proletariat, a class that would eventually overthrow capitalism itself."
    (औद्योगिक क्रांति ने सर्वहारा वर्ग को जन्म दिया, जो अंततः पूंजीवाद को समाप्त करेगा।)
- **एलन मैकफार्लेन (Alan Macfarlane):**
  - "Britain's Industrial Revolution was the most extraordinary transformation in economic history."
    (ब्रिटेन की औद्योगिक क्रांति आर्थिक इतिहास का सबसे असाधारण रूपांतरण थी।)
- **थॉमस साउथक्लिफ एश्टन (T.S. Ashton):**
  - "The Industrial Revolution was a revolution in man's methods of producing goods, not in man's social relationships."
    (औद्योगिक क्रांति मनुष्य की वस्तुएँ उत्पादन करने की विधियों में क्रांति थी, सामाजिक संबंधों में नहीं।)

6.12 शब्दावली

1. यंत्रीकरण (Mechanization):
- उत्पादन की प्रक्रिया में मानव श्रम की जगह मशीनों का प्रयोग।

2. श्रम विभाजन (Division of Labour):
- उत्पादन कार्य को अनेक विशिष्ट उपकार्यों में बाँटना जिससे दक्षता और गति बढ़े।

- **3. पूंजीवाद (Capitalism):**
  - उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व और मुनाफे के उद्देश्य से संचालित आर्थिक व्यवस्था।
- **4. फैक्टरी प्रणाली (Factory System):**
  - एक स्थान पर मशीनों, श्रमिकों और कच्चे माल को केंद्रित कर उत्पादन करने की संगठित प्रणाली।
- **5. सर्वहारा/प्रोलेतेरियट (Proletariat):**
  - वह मजदूर वर्ग जिसके पास उत्पादन के साधन नहीं होते और जो अपनी श्रम शक्ति बेचता है।

6. बॉर्जुआ वर्ग (Bourgeoisie):
- पूंजीपति वर्ग जो उत्पादन के साधनों का स्वामी होता है और श्रमिकों का शोषण करता है।

7. औद्योगिक पूंजी (Industrial Capital):
- कारखानों, मशीनों, कच्चे माल और श्रम में निवेश की गई पूंजी।

8. नवाचार (Innovation):
- मौजूद तकनीक या प्रक्रिया में किया गया ऐसा परिवर्तन जो उत्पादन की दक्षता बढ़ाए।

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

9. औपनिवेशिक पूंजी संचयन (Colonial Capital Accumulation):
- उपनिवेशों से शोषण द्वारा यूरोपीय राष्ट्रों में पूंजी का संग्रह।

10. बाड़ा/एन्सलोजर आंदोलन (Enclosure Movement):
- ब्रिटेन में सार्वजनिक कृषि भूमि को निजी स्वामित्व में लाकर किसानों को विस्थापित करने की प्रक्रिया।

11. गिल्ड प्रणाली (Guild System):
- मध्यकालीन हस्तशिल्प उत्पादन की प्रणाली जिसमें कारीगर संघठनों द्वारा उत्पादन और मूल्य नियंत्रित होते थे।

12. मर्केन्टिलिज्म (Mercantilism):
- 16वीं–18वीं शताब्दी की यूरोपीय आर्थिक नीति जिसमें राष्ट्र की समृद्धि को व्यापार अधिशेष और उपनिवेशों के नियंत्रण से मापा जाता था।

13. कार्यशील पूंजी (Working Capital):
- वह पूंजी जो दैनिक उत्पादन संचालन में प्रयुक्त होती है – जैसे मजदूरी, कच्चा माल।

14. अपवर्जन सिद्धांत (Theory of Exclusion):
- औद्योगीकरण से पारंपरिक कारीगरों का उत्पादन प्रणाली से बाहर हो जाना।

15. सामाजिक गतिशीलता (Social Mobility):
- औद्योगिक समाज में व्यक्ति या वर्ग का अपने सामाजिक–आर्थिक स्तर में ऊपर या नीचे जाना।

Ch 7 - एशिया व अफ्रीका में साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद

7.1 प्रस्तावना
7.2 साम्राज्यवाद (Imperialism) बनाम उपनिवेशवाद (Colonialism)
7.3 साम्राज्यवाद (Imperialism) और उपनिवेशवाद (Colonialism) का प्रारंभ एवं प्रमुख घटनाएं
7.4 साम्राज्यवाद के प्रमुख प्रेरक कारक
7.5 एशिया में साम्राज्यवाद का विस्तार
7.6 अफ्रीका में साम्राज्यवाद का विस्तार
7.7 उपनिवेशवाद के विविध प्रभाव
7.8 प्रतिरोध, राष्ट्रवाद और स्वतंत्रता संघर्ष
7.9 कथन (Quotes)
7.10 शब्दावली

7.1 प्रस्तावना

- **साम्राज्यवाद (Imperialism)** एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें कोई शक्तिशाली राष्ट्र अपने भौगोलिक क्षेत्र से बाहर अन्य देशों या क्षेत्रों पर **राजनीतिक अधिपत्य, आर्थिक शोषण और सांस्कृतिक प्रभुत्व** स्थापित करता है। यह प्रक्रिया प्रत्यक्ष नियंत्रण या अप्रत्यक्ष प्रभाव दोनों रूपों में हो सकती है।
- **उपनिवेशवाद (Colonialism)** साम्राज्यवाद का ठोस व क्रियात्मक रूप है, जिसके अंतर्गत एक देश किसी अन्य देश या क्षेत्र पर **प्रत्यक्ष शासन स्थापित कर प्रशासन, न्याय, भूमि व्यवस्था और सांस्कृतिक जीवन को नियंत्रित करता है।** उपनिवेश एक स्थायी प्रशासनिक इकाई के रूप में कार्य करता है।
- **19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में 'नव साम्राज्यवाद' (New Imperialism)** का दौर आरंभ हुआ, जिसमें **ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, इटली, बेल्जियम व अमेरिका** जैसे औद्योगिक राष्ट्रों ने एशिया और अफ्रीका के विशाल भूभागों को **कच्चे माल के स्रोत, नए बाजार और रणनीतिक क्षेत्रों** के रूप में कब्जे में लिया।
- यह नव साम्राज्यवाद **औद्योगिक पूंजीवाद, राष्ट्रवाद, सैन्य तकनीक की प्रगति, नस्लीय श्रेष्ठता की भावना (White Man's Burden)** और 'सभ्यता मिशन' (Civilizing Mission) जैसे कारकों से प्रेरित था।
- 1870 से 1914 के बीच की अवधि में विश्व का लगभग **85% भाग औपनिवेशिक शक्तियों के नियंत्रण में** आ चुका था – जिसे '**साम्राज्यवाद का उच्चतम चरण**' कहा गया (लेनिन)।

7.2 साम्राज्यवाद (Imperialism) बनाम उपनिवेशवाद (Colonialism)

- **परिभाषा:**

साम्राज्यवाद एक व्यापक प्रक्रिया है जिसमें एक राष्ट्र अन्य क्षेत्रों पर प्रभुत्व स्थापित करता है;

उपनिवेशवाद वह व्यावहारिक स्थिति है जिसमें प्रत्यक्ष विदेशी शासन स्थापित होता है।

- **स्वरूप:**

साम्राज्यवाद *राजनीतिक, आर्थिक, सैन्य या सांस्कृतिक नियंत्रण* का संकेत देता है;

उपनिवेशवाद मुख्यतः *भौगोलिक कब्जे व प्रत्यक्ष प्रशासन* का प्रतीक होता है।

- **प्रभाव का तरीका:**

साम्राज्यवाद अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव डाल सकता है (जैसे – प्रभाव क्षेत्र, सैन्य अड्डे);

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

उपनिवेशवाद प्रत्यक्ष शासन, कर व्यवस्था, और प्रशासनिक नियंत्रण के माध्यम से कार्य करता है।

- **अवधि और प्रकार:**

साम्राज्यवाद दीर्घकालिक प्रभुत्व की रणनीति है;

उपनिवेशवाद विशिष्ट क्षेत्र में संस्थागत नियंत्रण की प्रणाली है।

- **उदाहरण:**

ब्रिटेन द्वारा चीन में 'अन्यायपूर्ण संधियाँ' – साम्राज्यवाद का रूप;

भारत में ब्रिटिश राज (1858–1947) – उपनिवेशवाद का उदाहरण।

- **वैचारिक प्रेरणा:**

साम्राज्यवाद में *राष्ट्रवादी और भू-राजनीतिक* प्रेरणाएँ प्रमुख होती हैं;

उपनिवेशवाद में *आर्थिक शोषण और संसाधन नियंत्रण* की भावना प्रमुख रहती है।

- **विचारकों के मत:**

J.A. Hobson ने साम्राज्यवाद को पूंजीवाद का विस्तार बताया;

Frantz Fanon ने उपनिवेशवाद को मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक दमन की प्रक्रिया माना।

7.3 साम्राज्यवाद (Imperialism) और उपनिवेशवाद (Colonialism) का प्रारंभ एवं प्रमुख घटनाएं

- साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद की प्रक्रिया व्यापार, धर्म प्रचार और सत्ता विस्तार से प्रारंभ होकर शोषण, जातीय भेदभाव और सांस्कृतिक दमन में परिणत हुई।
- इनका विरोध धीरे-धीरे राष्ट्रवाद, जन आंदोलनों और स्वाधीनता संघर्ष के रूप में उभरा, जिससे 20वीं सदी के मध्य तक अधिकांश उपनिवेश स्वतंत्र हो गए।

I. प्रारंभ – साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद की उत्पत्ति

- प्राचीन साम्राज्यवाद का प्रारंभ मिस्र, रोम, फारस, चीन (हैन वंश) और भारत के मौर्य साम्राज्य जैसे विस्तारवादी शासन प्रणालियों से हुआ, जहाँ सैन्य विजय, कर वसूलना और सांस्कृतिक प्रभुत्व इसके प्रमुख लक्षण थे।
- 15वीं शताब्दी के अंत में यूरोपीय देशों – विशेष रूप से **स्पेन और पुर्तगाल** – ने समुद्री खोजों के माध्यम से उपनिवेशवाद की नींव रखी। 1498 में वास्को-दा-गामा के भारत आगमन के साथ भारत में यूरोपीय हस्तक्षेप प्रारंभ हुआ।
- 1494 की **टॉर्डेसिलस संधि** के तहत स्पेन और पुर्तगाल ने विश्व को आपस में बाँटने का दावा किया।
- 17वीं शताब्दी में **ब्रिटेन, फ्रांस और डच** ने व्यापारिक ठिकाने स्थापित कर एशिया और अफ्रीका में उपनिवेशीकरण को तीव्र गति दी।

II. नव साम्राज्यवाद का युग (1870–1914)

- 18वीं सदी के उत्तरार्द्ध में औद्योगिक क्रांति के चलते यूरोपीय देशों को कच्चे माल, सस्ते श्रम और नए बाजारों की आवश्यकता हुई, जिससे साम्राज्यवाद का नया चरण प्रारंभ हुआ जिसे 'नव साम्राज्यवाद' कहा गया।
- **ब्रिटेन** ने भारत, मिस्र, दक्षिण अफ्रीका और म्यांमार जैसे क्षेत्रों में प्रभुत्व स्थापित किया, और एक समय पर यह साम्राज्य इतना विस्तृत था कि इसे "सूरज न डूबने वाला साम्राज्य" कहा गया।
- **बर्लिन सम्मेलन (1884–85)** यूरोपीय शक्तियों द्वारा अफ्रीका के औपचारिक बंटवारे की ऐतिहासिक घटना रही, जहाँ कोई भी राष्ट्र जिस क्षेत्र पर दावा करता, उसे उपनिवेश बना सकता था।
- **अमेरिका** ने चीन में 'खुला दरवाजा नीति' (1899) के माध्यम से साम्राज्यवादी प्रभाव के लिए व्यापारिक स्वतंत्रता की नीति अपनाई।

III. प्रमुख ऐतिहासिक घटनाएँ (कालक्रमानुसार)

- 1498 – वास्को-दा-गामा का भारत आगमन: भारत में यूरोपीय उपनिवेशवाद की शुरुआत।
- 1757 – प्लासी युद्ध: ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की भारत में सत्ता स्थापना।
- 1776 – अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम: उपनिवेशवाद के विरुद्ध पहली सफल क्रांति।
- 1839–42 – पहला अफीम युद्ध (चीन): साम्राज्यवाद द्वारा व्यापारिक शोषण का उदाहरण।
- 1857 – भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम: ब्रिटिश शासन के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह।
- 1884–85 – बर्लिन सम्मेलन: अफ्रीका के उपनिवेशीकरण को वैधानिक रूप।
- 1952–60 – मऊ मऊ विद्रोह (केन्या): अफ्रीकी उपनिवेशों में स्वतंत्रता संग्राम का उभार।
- 1947 – भारत की स्वतंत्रता: एशिया में उपनिवेशवाद के अंत की शुरुआत।
- 1957 – घाना की स्वतंत्रता: उप-सहारा अफ्रीका का पहला स्वतंत्र राष्ट्र बना।

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

7.4 साम्राज्यवाद के प्रमुख प्रेरक कारक

- साम्राज्यवाद का प्रसार केवल शक्ति प्रदर्शन नहीं था, बल्कि यह *आर्थिक लोभ, राजनीतिक प्रतिस्पर्धा, नस्लीय श्रेष्ठता के भाव और वैज्ञानिक प्रगति* के समेकित रूप में कार्य कर रहा था। इसके परिणामस्वरूप एशिया और अफ्रीका के स्वायत्त समाजों को *आर्थिक रूप से शोषित, सांस्कृतिक रूप से अपमानित और राजनीतिक रूप से अधीनस्थ* बना दिया गया।

साम्राज्यवाद के प्रमुख प्रेरक कारक – विस्तृत विवरण

1. आर्थिक कारक (Economic Factors):

- **औद्योगिक क्रांति का प्रभाव:**
  18वीं सदी में यूरोप में औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप उत्पादन में तीव्र वृद्धि हुई, जिससे उद्योगों को **कच्चे माल (जैसे – कपास, रबर, कोयला, लौह अयस्क, चाय, कॉफी)** की अत्यधिक आवश्यकता पड़ी।
- **बाजारों का विस्तार:**
  घरेलू बाज़ार सीमित हो चुके थे, अतः यूरोपीय राष्ट्रों ने एशिया और अफ्रीका में **नए उपभोक्ताओं** की खोज की ताकि औद्योगिक उत्पादों को बेचा जा सके।
- **सस्ते श्रम की उपलब्धता:**
  उपनिवेशों में **स्थानीय श्रमिकों का शोषण** करके उत्पादन लागत कम की गई। विशेषकर अफ्रीका में जबरन श्रम प्रणाली (forced labour) अपनाई गई।
- **निवेश के सुरक्षित क्षेत्र:**
  पूंजीपतियों को अपने मुनाफे को लगाने हेतु ऐसे क्षेत्रों की आवश्यकता थी जहाँ **राजनीतिक अस्थिरता न हो** – अतः उपनिवेशों को सुरक्षित निवेश केंद्र के रूप में विकसित किया गया।

2. राजनीतिक–सैन्य कारक (Political–Strategic Factors):

- **राष्ट्रवाद और प्रभुत्व की होड़:**
  19वीं सदी में राष्ट्रवाद के विकास के साथ प्रत्येक शक्ति (जैसे – ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी) चाहती थी कि उसका साम्राज्य दूसरों से बड़ा हो।
- **सत्ता संतुलन की प्रतिस्पर्धा:**
  यदि एक राष्ट्र उपनिवेश स्थापित करता, तो अन्य राष्ट्र भी पीछे नहीं रहना चाहते थे – इसे *Imperialist Rivalry* कहा गया।
- **सैन्य व नौसैनिक अड्डे:**
  महासागरों में प्रभुत्व बनाए रखने हेतु साम्राज्यवादी देशों ने **स्ट्रेटेजिक पोर्ट्स** पर कब्जा किया – जैसे ब्रिटेन ने **सुएज़ नहर** (मिस्र) और **अडन** पर अधिकार किया।
- **राजनीतिक नियंत्रण द्वारा संसाधन की सुरक्षा:**
  राजनीतिक प्रभुत्व का उद्देश्य **प्राकृतिक संसाधनों और व्यापार मार्गों की सुरक्षा** सुनिश्चित करना भी था।

3. धार्मिक–सांस्कृतिक कारक (Religious & Cultural Factors):

- **सभ्यता का मिशन (Civilizing Mission):**
  पश्चिमी यूरोपीय देशों ने स्वयं को **सांस्कृतिक रूप से श्रेष्ठ** मानते हुए यह तर्क दिया कि वे 'असभ्य' देशों में सभ्यता और प्रगति का प्रसार कर रहे हैं।
- **ईसाई मिशनरियों की सक्रियता:**
  एशिया व अफ्रीका में धर्म परिवर्तन हेतु ईसाई मिशनरियों ने स्कूल, अस्पताल और चर्च स्थापित किए और *धर्म के नाम पर सांस्कृतिक प्रभुत्व* स्थापित किया।
- **पश्चिमी शिक्षा और मूल्यों का प्रसार:**
  ब्रिटिश और फ्रांसीसी शिक्षा नीतियों ने स्थानीय भाषाओं, परंपराओं और विश्वासों को नीचा दिखाया तथा यूरोपीय जीवनशैली को श्रेष्ठ के रूप में प्रस्तुत किया।

4. वैज्ञानिक–तकनीकी कारक (Scientific & Technological Factors):

- **तकनीकी श्रेष्ठता:**
  यूरोपीय शक्तियों के पास स्टीम इंजन, टेलीग्राफ, बुलेट-प्रूफ जहाज, मैक्सिम गन (पहली मशीनगन), रेलवे और आधुनिक जहाज थे – जिन्होंने **तेजी से नियंत्रण** स्थापित करने में मदद की।
- **भौगोलिक अन्वेषण:**
  नए भूभागों की खोज और नक्शाबंदी ने **भीतरू अफ्रीका व एशिया** के क्षेत्रों को उपनिवेश बनाने योग्य बनाया। *David Livingstone* जैसे खोजकर्ताओं ने इसके लिए आधार दिया।
- **नृविज्ञान और औषध विज्ञान:**
  स्थानीय समाजों को 'निम्न सभ्यताओं' के रूप में वर्गीकृत करने हेतु **नृविज्ञान का प्रयोग** किया गया। औषध विज्ञान (जैसे – मलेरिया के लिए कुनैन) ने **यूरोपीय लोगों के उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में टिकने** को संभव बनाया।

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

7.5 एशिया में साम्राज्यवाद का विस्तार

(क) भारत में साम्राज्यवाद का विस्तार

- **1600 में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना** इंग्लैंड की रानी एलिजाबेथ-I द्वारा चार्टर के माध्यम से की गई, जिसने भारत में व्यापार की अनुमति प्राप्त की।
- **1757 का प्लासी युद्ध** (Siraj-ud-Daulah बनाम रॉबर्ट क्लाइव) बंगाल में ब्रिटिश राजनीतिक हस्तक्षेप की शुरुआत थी।

1764 का बक्सर युद्ध (शाह आलम द्वितीय, शुजाउद्दौला, मीर कासिम बनाम कंपनी) के बाद कंपनी को दीवानी अधिकार प्राप्त हुए।

- **1857 के विद्रोह** के पश्चात 1858 में **भारत सरकार अधिनियम** पारित कर कंपनी का शासन समाप्त हुआ और **ब्रिटिश क्राउन द्वारा प्रत्यक्ष शासन** लागू हुआ।
- **भूमि बंदोबस्त** (Permanent Settlement – बंगाल में, Ryotwari – मद्रास व बॉम्बे में) ने कृषि को कर-संग्रह प्रणाली में बदल दिया, जिससे कृषकों की स्थिति बदतर हुई।
- **1835 की शिक्षा नीति (Macauley Minutes)** द्वारा अंग्रेजी भाषा और पश्चिमी मूल्यों को थोप कर भारतीय शिक्षा प्रणाली को बदल दिया गया।
- **रेलवे (1853 से)**, टेलीग्राम, डाक व्यवस्था का विकास प्रशासनिक व वाणिज्यिक उद्देश्यों से हुआ, किंतु इसका उद्देश्य भारतीय समाज को जोड़ना नहीं बल्कि साम्राज्य को मजबूत करना था।
- **दादाभाई नौरोजी का 'आर्थिक अपवहन सिद्धांत' (Drain of Wealth Theory)** – ब्रिटिश शासन भारत से धन बाहर ले जा रहा था, जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था कमजोर होती गई।

(ख) चीन में साम्राज्यवाद का विस्तार

- **ब्रिटेन द्वारा चीन में अफीम का अवैध व्यापार** (ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा) जबरन किया गया, जिसके विरोध में **1839–42 का पहला अफीम युद्ध** हुआ – चीन की हार पर **नानकिंग संधि** (1842) में हांगकांग ब्रिटेन को सौंपा गया।
- **1856–60 के द्वितीय अफीम युद्ध** में ब्रिटेन व फ्रांस की जीत के बाद **'अन्यायपूर्ण संधियाँ' (Unequal Treaties)** लागू हुईं – जिनके तहत यूरोपीय शक्तियों को व्यापारिक व कूटनीतिक विशेषाधिकार मिले।
- 1899 में अमेरिका ने **'खुला दरवाजा नीति' (Open Door Policy)** की घोषणा की, जिससे सभी साम्राज्यवादी शक्तियाँ चीन में समान व्यापार कर सकें – चीन की प्रभुसत्ता और सीमाएं कमजोर पड़ीं।
- इन अपमानजनक समझौतों और विदेशी प्रभुत्व के विरुद्ध **1911 की कुनमिंग क्रांति** द्वारा चीन में राजशाही का अंत हुआ और *Sun Yat-sen* के नेतृत्व में गणतंत्र की स्थापना हुई।
- आगे चलकर **कम्युनिस्ट पार्टी** और *माओ ज़ेदोंग* के नेतृत्व में साम्यवादी आंदोलन ने साम्राज्यवाद विरोध को गति दी।

(ग) जापान और साम्राज्यवाद

- **1853 में अमेरिकी नौसेनिक कमांडर मैथ्यू पेरी** जब टोक्यो खाड़ी पहुँचे, तो जापान को अंतरराष्ट्रीय व्यापार के लिए बाध्य किया गया – इससे जापानी साम्राज्यवाद के प्रति चेतना जागी।
- **1868 में मेइजी पुनर्स्थापन (Meiji Restoration)** के तहत जापान ने तीव्र आधुनिकीकरण, औद्योगीकरण और सैन्यीकरण अपनाया, जिससे वह स्वयं एक साम्राज्यवादी शक्ति बना।
- जापान ने 1894–95 में **सिनो-जापानी युद्ध** में चीन को हराकर **कोरिया और ताइवान** पर प्रभुत्व स्थापित किया।
- 1904–05 में **रूस-जापान युद्ध** में रूस की हार ने जापान को मंचूरिया में प्रवेश दिलाया और एशिया की पहली 'गैर-पश्चिमी साम्राज्यवादी शक्ति' के रूप में प्रतिष्ठा दी।
- 1930 के दशक में जापान ने चीन के मांचूरिया और अन्य क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया – जो द्वितीय विश्व युद्ध का पूर्व संकेत बना।

(घ) दक्षिण-पूर्व एशिया में साम्राज्यवाद

- **डच उपनिवेशवाद** – नीदरलैंड ने 17वीं सदी से इंडोनेशिया (Java, Sumatra, Borneo) में व्यापारिक केंद्र बनाए, और बाद में इसे पूरा उपनिवेश बना लिया। *Cultivation System* के तहत किसानों से जबरन निर्यात योग्य फसलें उगवाई गईं।
- **फ्रांसीसी उपनिवेशवाद** – फ्रांस ने **इंडोचाइना (वियतनाम, लाओस, कंबोडिया)** में उपनिवेश

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

स्थापित किए। यहां मिशनरी कार्य और फसली शोषण प्रमुख रहा।

• **ब्रिटिश साम्राज्यवाद** – ब्रिटेन ने **म्यांमार** (1824, 1852, 1885 के युद्धों के बाद), **मलेशिया** और **सिंगापुर** में व्यापारिक व सामरिक अड्डे बनाए।

• **अमेरिकी साम्राज्यवाद** – 1898 में **स्पेन-अमेरिका युद्ध** के बाद अमेरिका ने **फिलीपींस** पर अधिकार किया। अमेरिकी शिक्षा व प्रशासनिक प्रणाली थोपने का प्रयास किया गया।

• **थाईलैंड (सियाम)** – क्षेत्र का एकमात्र देश जो उपनिवेश नहीं बना, लेकिन उसने ब्रिटिश व फ्रांसीसी दबाव में **आंतरिक सुधारों** और समझौतों के द्वारा स्वतंत्रता बनाए रखी।

7.6 अफ्रीका में साम्राज्यवाद का विस्तार

• **बर्लिन सम्मेलन (1884–85) – औपनिवेशिक बँटवारे की शुरुआत**

– यह सम्मेलन जर्मनी के चांसलर **ऑटो वॉन बिस्मार्क** की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें यूरोपीय शक्तियों ने **अफ्रीका के बँटवारे** के नियम तय किए।

– सिद्धांत था – *"Effective Occupation"* यानी जो शक्ति किसी क्षेत्र पर **वास्तविक नियंत्रण स्थापित करेगी**, उसे उस क्षेत्र पर अधिकार प्राप्त होगा।

– इस सम्मेलन ने 19वीं सदी के उत्तरार्ध में अफ्रीका को औपनिवेशिक शोषण के लिए **"खुली भू-भूमि"** में बदल दिया।

• **'रेखाओं से बने देश' – कृत्रिम सीमाओं की त्रासदी**

– यूरोपीय शक्तियों ने अफ्रीका का विभाजन **भौगोलिक सुविधा व संसाधनों के आधार पर** किया, न कि स्थानीय **जातीय, भाषायी, धार्मिक या सांस्कृतिक संरचनाओं** के अनुसार।

– इस कारण **अनेक जनजातियाँ बँट गईं** (जैसे सोमाली, तुआरेग) और विरोधी जनजातियों को एक ही प्रशासन में रखा गया, जिससे **जातीय संघर्ष और गृहयुद्धों** की भूमि बनी।

• **प्रमुख उपनिवेशों और औपनिवेशिक शक्तियों का वितरण**

○ **ब्रिटेन:**

– **मिस्र** (1882) – सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण **सुएज़ नहर** का नियंत्रण ब्रिटेन को भारत तक पहुँच में मदद करता था।

– **दक्षिण अफ्रीका** – ब्रिटिश व डच (बोअर) के बीच **दो बोअर युद्ध (1880–81, 1899–1902)** के बाद ब्रिटिश वर्चस्व स्थापित।

– **नाइजीरिया, घाना, केन्या, युगांडा** – इन क्षेत्रों में कृषि, खनिज और रेलवे का दोहन।

○ **फ्रांस:**

– **अल्जीरिया (1830 से), ट्यूनीशिया, मोरक्को** – फ्रांसीसी अफ्रीकी साम्राज्य का आधार।

– **पश्चिमी अफ्रीका** – *फ्रेंच वेस्ट अफ्रीका* के अंतर्गत **माली, नाइजर, सेनेगल, बुर्किना फासो** आदि।

– **मध्य अफ्रीका** – चाड, मध्य अफ्रीकी गणराज्य।

○ **जर्मनी:**

– **टांगानिका (वर्तमान तंजानिया), नामीबिया (तब जर्मन दक्षिण-पश्चिम अफ्रीका), टोगोलैंड, कैमरून**

–

– 1904–1908 में नामीबिया में **हेररो और नामा जनसंहार**, जिसे इतिहास का पहला आधुनिक *genocide* कहा जाता है।

○ **बेल्जियम:**

– **कांगो फ्री स्टेट** – किंग **लेओपोल्ड द्वितीय** के निजी उपनिवेश के रूप में।

– रबर और हाथीदांत के व्यापार में अत्यधिक क्रूरता – **कटे हाथों की संस्कृति**, जनसंख्या में करोड़ों की गिरावट।

○ **पुर्तगाल:**

– **अंगोला और मोजाम्बिक** – गुलाम व्यापार और खनिज दोहन का प्रमुख केंद्र।

– स्वतंत्रता के बाद भी इन क्षेत्रों में लंबे समय तक गृहयुद्ध और अस्थिरता रही।

○ **इटली:**

– **लीबिया (1911 में ओटोमन से छीना)** और **इथियोपिया** पर दो बार आक्रमण किया।

– **1896 में अडवा युद्ध (Adwa)** में इथियोपिया ने इतालवी सेना को हराकर औपनिवेशिक विस्तार को विफल किया।

– **1935–36 में मुसोलिनी ने पुनः हमला कर इथियोपिया पर कब्जा किया**, जो द्वितीय विश्व युद्ध के पूर्व साम्राज्यवाद का प्रतीक बना।

अफ्रीकी साम्राज्यवाद के परिणाम

• **आर्थिक शोषण:** अफ्रीकी संसाधनों (सोना, हीरा, रबर, कॉफी, तांबा) का व्यापक दोहन हुआ।

• **सांस्कृतिक अपदस्थता:** यूरोपीय भाषा, धर्म और जीवनशैली थोपी गई। पारंपरिक ज्ञान और व्यवस्था उपेक्षित हुई।

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

- **राजनीतिक विघटन:** जनजातीय संघर्ष, विभाजन और कमजोर राज्य तंत्र विकसित हुए, जिनका प्रभाव आज तक देखा जाता है।
- **मानवाधिकार उल्लंघन:** बेल्जियम में कांगो का अत्यधिक अमानवीय शोषण, जर्मन उपनिवेशों में जनसंहार।

- अतः अफ्रीका का उपनिवेशीकरण 19वीं सदी के साम्राज्यवाद की चरम परिणति थी। भूगोल की उपेक्षा कर बनाई गई कृत्रिम सीमाओं, जातीय दमन, सांस्कृतिक अपमान और संसाधनों के अत्यधिक दोहन ने अफ्रीका को स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी लंबे समय तक **राजनीतिक अस्थिरता और आर्थिक पिछड़ेपन** में डुबोए रखा। साम्राज्यवाद ने अफ्रीका के लिए *औपचारिक स्वतंत्रता की राह को और कठिन* बना दिया।

7.7 उपनिवेशवाद के विविध प्रभाव

- उपनिवेशवाद केवल राजनीतिक कब्जा नहीं था, बल्कि यह एक बहुआयामी शोषण प्रणाली थी जिसने आर्थिक श्रृंखला को बाधित किया, समाज को तोड़ा, संस्कृति को विकृत किया और पराधीनता की मानसिकता उत्पन्न की। किंतु इसी प्रक्रिया में राष्ट्रीय चेतना, आधुनिक शिक्षा, और स्वतंत्रता का बीजारोपण भी हुआ, जो 20वीं सदी में वैश्विक मुक्ति आंदोलनों का आधार बना।

(क) आर्थिक प्रभाव (Economic Impacts)

- **पारंपरिक शिल्प और कुटीर उद्योगों का पतन:** औपनिवेशिक शक्तियों ने भारत, चीन और अफ्रीका जैसे देशों के स्थानीय वस्त्र, धातु, बुनाई और अन्य शिल्प उद्योगों को नष्ट कर दिया। ब्रिटिश भारत में बुनकरों के रोजगार समाप्त हुए, जिससे लाखों कारीगर बेरोजगार हो गए।
- **नगदी फसलों की खेती और खाद्य संकट:** औपनिवेशिक शासन ने किसानों को कपास, जूट, रबर, इंडिगो, कॉफी, चाय जैसी नगदी फसलें उगाने को मजबूर किया। इससे खाद्यान्न उत्पादन घटा और 19वीं सदी में कई **भीषण अकाल (जैसे – बंगाल अकाल 1943)** उत्पन्न हुए।
- **अवसंरचना का शोषण हेतु विकास:** रेलवे, बंदरगाह, तार, पुल और सड़कें बनाई गईं, पर इनका उद्देश्य **कच्चे माल को समुद्री बंदरगाह तक पहुँचाना और सैनिकों की तेज़ आवाजाही सुनिश्चित करना** था – न कि देशज जनसुविधा।
- **कर प्रणाली और श्रम का शोषण:** भूमि कर, नमक कर, वन कर जैसे टैक्स लगाए गए; अफ्रीका में **'हट टैक्स'** के बहाने जबरन श्रम करवाया गया। भारत में *लगान वसूली* ने किसानों को कर्ज और साहूकारों की गिरफ्त में धकेल दिया।

(ख) सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव (Socio-Cultural Impacts)

- **परंपरागत सामाजिक संरचनाओं का विघटन:** जातीय प्रमुख, ग्राम पंचायतें, कबायली व्यवस्थाएं और सामाजिक स्वशासन की पारंपरिक प्रणालियाँ कमजोर हुईं या नष्ट कर दी गईं। इससे समुदायों में **संघर्ष और सामाजिक विखंडन** बढ़ा।
- **पश्चिमी शिक्षा और मिशनरी गतिविधियाँ:** ब्रिटिश भारत में **1835 की मैकॉले शिक्षा नीति**, अफ्रीका व एशिया में मिशनरियों द्वारा संचालित स्कूलों के माध्यम से **पश्चिमी इतिहास, ईसाई नैतिकता और अंग्रेजी भाषा** का प्रचार हुआ।
- **नस्लीय भेदभाव और श्वेत श्रेष्ठता:** 'White Man's Burden' जैसी अवधारणाओं के माध्यम से उपनिवेशों में *श्वेतों को सभ्य और श्रेष्ठ* तथा *स्थानीय जनों को असभ्य और निम्न* दर्शाया गया। रंगभेद, अस्पृश्यता और नस्ली अलगाव जैसी समस्याएँ गहराईं।
- **महिलाओं की स्थिति पर मिश्रित प्रभाव:** एक ओर सती प्रथा, बाल विवाह जैसी कुप्रथाओं के विरुद्ध सुधार हुए (भारत में विद्वानों व सुधारकों की मदद से), दूसरी ओर यूरोपीय शासन **महिलाओं को राजनीतिक भागीदारी और उच्च शिक्षा से दूर रखता रहा**।

(ग) राजनीतिक प्रभाव (Political Impacts)

- **औपनिवेशिक प्रशासन की स्थापना:** सभी उपनिवेशों में **केंद्रित और पदानुक्रमिक प्रशासनिक व्यवस्था** लागू की गई – सिविल सेवा, पुलिस, न्यायालय, जेल और कर प्रणाली के माध्यम से शासन मजबूत किया गया।
- **स्थानीय शासकों की शक्ति का अपहरण:** प्राचीन सामंती, कबायली या राजशाही व्यवस्थाओं को खत्म कर दिया गया या उन्हें कठपुतली बना दिया गया। भारत में *Doctrine of Lapse* (दत्तक

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

नीति) और *Subsidiary Alliance* द्वारा रियासतें हड़पी गईं।

• **कानून और न्याय प्रणाली का केंद्रीकरण:** ब्रिटिश भारतीय दंड संहिता (IPC), भारतीय साक्ष्य अधिनियम, सिविल प्रक्रिया संहिता आदि के माध्यम से **यूरोपीय कानूनी सिद्धांतों** को लागू किया गया, जिससे स्वदेशी न्याय प्रणालियाँ समाप्त हो गईं।

• **आधुनिक राष्ट्रवाद और राजनीतिक चेतना का विकास:** औपनिवेशिक शोषण के विरुद्ध प्रतिक्रिया स्वरूप **स्वतंत्रता, मानवाधिकार, संविधानवाद, विधिक समानता** जैसे विचारों ने जन्म लिया। भारत में कांग्रेस (1885), चीन में कुनमिंग क्रांति (1911), अफ्रीका में ANC (1912) की स्थापना इसी क्रम में हुई।

7.8 प्रतिरोध, राष्ट्रवाद और स्वतंत्रता संघर्ष

- उपनिवेशवाद के विरुद्ध प्रतिरोध आंदोलनों ने दुनिया भर में राष्ट्रवाद, आत्मनिर्भरता और राजनीतिक चेतना को जन्म दिया। भिन्न-भिन्न महाद्वीपों और सामाजिक संरचनाओं में पले-बढ़े ये आंदोलन अंततः साम्राज्यवाद के विघटन और तीसरी दुनिया के उभार का कारण बने। स्वतंत्रता संघर्षों ने यह सिद्ध कर दिया कि राजनीतिक दमन और आर्थिक शोषण का विरोध अनिवार्य और अपरिहार्य है।

1. भारत (India):

• **1857 का विद्रोह** – ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की दमनकारी नीतियों, सैन्य असंतोष और सांस्कृतिक हस्तक्षेप के विरुद्ध यह पहला व्यापक **जन-विद्रोह** था। यद्यपि असफल रहा, परन्तु इसने ब्रिटिश शासन को **कंपनी से क्राउन में** हस्तांतरित कर दिया और राष्ट्रवादी चेतना को जन्म दिया।

• **भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (1885)** – प्रारंभ में नरमपंथी नेतृत्व में ब्रिटिश प्रशासन से सुधारों की माँग, बाद में तिलक, गांधी, नेहरू के नेतृत्व में यह **पूर्ण स्वतंत्रता के आंदोलन में बदल गई।**

• **महात्मा गांधी के नेतृत्व में सत्याग्रह और अहिंसक संघर्ष** – 1919 से 1947 तक *नमक सत्याग्रह, भारत छोड़ो आंदोलन* जैसे आंदोलनों के माध्यम से साम्राज्यवाद को नैतिक चुनौती दी गई।

2. चीन (China):

• **बॉक्सर विद्रोह (1899–1901)** – 'यिहेतुआन' नामक गुप्त चीनी समूह द्वारा विदेशी मिशनरियों और व्यापारियों के विरुद्ध हिंसक आंदोलन, जिसे आठ साम्राज्यवादी शक्तियों ने कुचल दिया। इससे चीन की प्रभुसत्ता और कमजोर हुई।

• **Sun Yat-sen और गणतांत्रिक क्रांति (1911)** – **कुनमिंग क्रांति** के माध्यम से मांचू वंश के पतन के बाद चीन में गणराज्य की स्थापना हुई, जिसने साम्राज्यवाद विरोधी राजनीति को सुदृढ़ किया।

• **माओ त्से तुंग द्वारा साम्यवादी क्रांति (1949)** – लम्बे गृहयुद्ध और जापानी आक्रमणों के बीच माओ के नेतृत्व में **चीनी कम्युनिस्ट पार्टी** ने राष्ट्रवादियों को पराजित कर *जनवादी गणराज्य चीन* की स्थापना की। साम्राज्यवाद को पूरी तरह निष्कासित किया गया।

3. वियतनाम (Vietnam):

• फ्रांसीसी उपनिवेश के अंतर्गत दशकों के शोषण के विरुद्ध **हो ची मिन्ह** के नेतृत्व में *वियत मिंह* (Viet Minh) आंदोलन चला।

• **द्वितीय विश्व युद्ध के बाद** जब जापान हट गया, वियतनाम ने स्वतंत्रता की घोषणा की, परंतु फ्रांस ने फिर से नियंत्रण पाने का प्रयास किया।

• **1954 में डिएन बिएन फू की निर्णायक लड़ाई** में फ्रांस को पराजित किया गया और **जेनेवा समझौते** के तहत वियतनाम स्वतंत्र घोषित हुआ।

4. केन्या (Kenya):

• ब्रिटिश शासन के विरुद्ध अफ्रीकी किकुयू समुदाय के **मऊ मऊ विद्रोह (1952–60)** में हजारों विद्रोही और नागरिक मारे गए। आंदोलन में **जबरन भूमि अधिग्रहण, नस्लीय भेदभाव और दमनकारी कानूनों** के विरुद्ध विरोध था।

• विद्रोह के दमन के बावजूद यह आंदोलन **राजनीतिक चेतना और स्वतंत्रता की नींव** बना।

• **1963 में जोमो केन्याटा** के नेतृत्व में केन्या को स्वतंत्रता प्राप्त हुई।

5. अल्जीरिया (Algeria):

• **1830 से फ्रांसीसी उपनिवेश** बनने के बाद अल्जीरिया में दशकों से दमन, जमीन पर कब्जा और नागरिक भेदभाव हो रहा था।

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

- **1954–1962 का अल्जीरियाई स्वतंत्रता संग्राम** अत्यंत रक्तरंजित रहा, जिसमें लाखों नागरिक हताहत हुए।
- **FLN (National Liberation Front)** के नेतृत्व में चलाए गए संघर्ष के अंत में **Evian Accords (1962)** के माध्यम से अल्जीरिया को स्वतंत्रता मिली।

6. घाना (Ghana):

- **ब्रिटिश गोल्ड कोस्ट उपनिवेश** में शिक्षा प्राप्त अफ्रीकी नेताओं ने राष्ट्रवाद को जन्म दिया।
- **क्वामे एनक्रूमा (Kwame Nkrumah)** ने "Convention People's Party" के माध्यम से जन आंदोलन खड़ा किया।
- **1957 में घाना को स्वतंत्रता मिली** – यह उप-सहारा अफ्रीका का **प्रथम स्वतंत्र राष्ट्र** बना, जिसने समस्त महाद्वीप में स्वतंत्रता आंदोलनों को प्रेरित किया।

7.9 कथन (Quotes)

- **रुडयार्ड किपलिंग** –

"White Man's Burden"

- "Take up the White Man's burden—send forth the best ye breed..."
  (यह कविता साम्राज्यवाद को 'सभ्यता मिशन' के रूप में प्रस्तुत करती है, जिसे आलोचकों ने औचित्यहीन श्रेष्ठताबोध माना।)

- **दादाभाई नौरोजी** –
  - "British rule in India has drained her wealth."
    (उन्होंने 'आर्थिक अपवहन सिद्धांत' के माध्यम से उपनिवेशवाद के आर्थिक शोषण को उजागर किया।)
- **एडवर्ड सेड (Edward Said)** –
  - "Imperialism consolidated the mixture of cultures and identities on a global scale, but its worst and most paradoxical aspect was its use of 'culture' to justify domination."
    ('ओरिएंटलिज़्म' पुस्तक में उन्होंने साम्राज्यवाद की सांस्कृतिक औचित्य पर गहरी आलोचना की।)
- **महात्मा गांधी** –
  - "The British Empire, as it exists, is a negation of God. It represents not the Kingdom of Heaven, but the Kingdom of Satan."
    (गांधीजी ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद को नैतिक व आध्यात्मिक दृष्टि से अन्यायपूर्ण बताया।)
- **हो ची मिन्ह (Ho Chi Minh)** –
  - "Nothing is more precious than independence and liberty."
    (फ्रांसीसी उपनिवेशवाद के विरुद्ध वियतनामी संघर्ष की भावना का सार।)
- **लेनिन (V.I. Lenin)** –
  - "Imperialism is the highest stage of capitalism."
    (उन्होंने साम्राज्यवाद को पूंजीवाद की अंतिम व परजीवी अवस्था बताया, जहाँ वित्तीय पूंजी के लिए उपनिवेश बनाए जाते हैं।)
- **जवाहरलाल नेहरू** –
  - "Colonialism is the denial of freedom and dignity."
    (नेहरू ने उपनिवेशवाद को केवल राजनीतिक ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और नैतिक पराधीनता कहा।)
- **फ्रांज फैनन (Frantz Fanon)** –
  - "Colonialism is not a machine capable of thinking, a body endowed with reason. It is naked violence and only gives way when confronted with greater violence."
    (उन्होंने उपनिवेशवाद को शुद्ध हिंसा कहा और मुक्तिकामी संघर्ष का समर्थन किया।)
- **विंस्टन चर्चिल** (औपनिवेशिक दंभ का प्रतीक):
  - "I do not admit... that a great wrong has been done to the Red Indians of America or the black people of Australia... by the fact that a stronger race has come in."
    (यह उपनिवेशवादी श्रेष्ठताबोध और नैतिक अंधता का स्पष्ट उदाहरण है।)

7.10 शब्दावली

- **साम्राज्यवाद (Imperialism):**

एक ऐसी नीति जिसमें कोई राष्ट्र दूसरे राष्ट्र या क्षेत्र पर राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक नियंत्रण स्थापित करता है, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से।

- **उपनिवेशवाद (Colonialism):**

साम्राज्यवाद का व्यावहारिक रूप, जिसमें एक विदेशी शक्ति किसी क्षेत्र पर प्रत्यक्ष शासन स्थापित कर वहां की राजनीतिक–प्रशासनिक व्यवस्था नियंत्रित करती है।

- **नव साम्राज्यवाद (New Imperialism):**

19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में यूरोपीय राष्ट्रों द्वारा अफ्रीका व

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

एशिया के तीव्र उपनिवेशीकरण को संदर्भित करता है, जो राष्ट्रवाद, पूंजीवाद और तकनीकी प्रगति से प्रेरित था।

- **आर्थिक अपवहन (Drain of Wealth):** ब्रिटिश शासन में भारत से बिना कोई पारस्परिक लाभ दिए धन का निर्यात। यह अवधारणा दादाभाई नौरोजी ने प्रतिपादित की।
- **सभ्यता मिशन (Civilizing Mission):** पश्चिमी राष्ट्रों का यह दावा कि वे 'असभ्य' देशों को सभ्य बनाने हेतु शासन कर रहे हैं – साम्राज्यवाद को नैतिक आधार देने का प्रयास।
- **स्ट्रैटेजिक औक्युपेशन (Strategic Occupation):** ऐसे स्थानों पर कब्जा, जो सैन्य, सामुद्रिक या व्यापारिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हों, जैसे सुएज़ नहर।
- **अन्यायपूर्ण संधियाँ (Unequal Treaties):** 19वीं सदी में चीन, जापान आदि देशों पर यूरोपीय शक्तियों द्वारा थोपे गए वे समझौते जो एकतरफा और शोषणकारी थे।
- **प्रॉक्सी कॉलोनी (Proxy Colony):** ऐसा उपनिवेश जहाँ प्रत्यक्ष विदेशी शासन न होकर स्थानीय कठपुतली शासकों के माध्यम से शासन किया जाए।
- **हथियाने की नीति (Doctrine of Lapse):** ब्रिटिश भारत में लॉर्ड डलहौज़ी द्वारा लागू नीति, जिसके अंतर्गत बिना वारिस वाली रियासतें ब्रिटिश साम्राज्य में मिला दी जाती थीं।
- **जनसंहार (Genocide):** किसी नस्लीय, धार्मिक या सांस्कृतिक समूह का संगठित व सन्निहित विनाश – जैसे जर्मनी द्वारा हेररो जनजाति का संहार (नामीबिया)।
- **सांस्कृतिक उपनिवेशवाद (Cultural Colonialism):** स्थानीय संस्कृति, भाषा और परंपराओं को दबाकर विदेशी मूल्यों, भाषा और जीवनशैली को थोपना।
- **अर्ध-उपनिवेश (Semi-Colony):** ऐसा देश जहाँ औपचारिक उपनिवेश नहीं, परंतु विदेशी शक्तियों का आर्थिक, सैन्य और कूटनीतिक नियंत्रण होता है – जैसे 19वीं सदी का चीन।
- **पैन-अफ्रीकनिज्म (Pan-Africanism):** अफ्रीकी देशों और लोगों की एकता, मुक्ति और सहयोग की विचारधारा, जो उपनिवेशवाद के विरोध में उभरी।
- **डेकोलोनाइजेशन (Decolonization):** 1945 के बाद उपनिवेशों की स्वतंत्रता और औपनिवेशिक साम्राज्यों के विघटन की प्रक्रिया।
- **औपनिवेशिक मानसिकता (Colonial Mindset):** ऐसी सोच जिसमें उपनिवेशित समाज स्वयं को हीन और उपनिवेशक को श्रेष्ठ मानता है – मनोवैज्ञानिक अधीनता।
- **राजनीतिक राष्ट्रवाद (Political Nationalism):** ऐसा राष्ट्रवाद जो स्वतंत्रता, स्वशासन और औपनिवेशिक सत्ता के विरोध के रूप में उभरता है।

Ch 8 - विश्व युद्धों का प्रभाव

1.1 प्रथम विश्व युद्ध के परिणाम (1914–1918)
1.1.1 राजनीतिक परिणाम (Political Consequences)
1.1.2 आर्थिक परिणाम (Economic Consequences
1.1.3 सामाजिक परिणाम (Social Consequences)
1.1.4 भौगोलिक परिणाम (Geographical Consequences):
1.1.5 वैचारिक और वैदिक प्रभाव (Ideological & Intellectual Consequences):
1.1.6 सैन्य व तकनीकी परिणाम (Military and Technological Consequences):

1.2 द्वितीय विश्व युद्ध के परिणाम (1939–1945)
1.2.1 राजनीतिक परिणाम
1.2.2 द्वितीय विश्व युद्ध के भौगोलिक परिणाम
1.2.3 द्वितीय विश्व युद्ध के आर्थिक परिणाम
1.2.4 द्वितीय विश्व युद्ध के सामाजिक और मानवीय प्रभाव
1.2.5 द्वितीय विश्व युद्ध के सैन्य और तकनीकी परिणाम
1.2.6 द्वितीय विश्व युद्ध के वैचारिक और वैश्विक प्रभाव
1.2.7 कथन

1.1 प्रथम विश्व युद्ध के परिणाम (1914–1918)

- प्रथम विश्व युद्ध ने केवल एक सैन्य संघर्ष नहीं, बल्कि विश्व की राजनीति, अर्थव्यवस्था, समाज और विचारधाराओं को पूरी तरह पुनर्परिभाषित किया। इसने द्वितीय विश्व युद्ध की पृष्ठभूमि बनाई और 20वीं सदी को 'विभाजन व संघर्ष का युग' बना दिया।

1.1.1 राजनीतिक परिणाम (Political Consequences)

- प्रथम विश्व युद्ध ने वैश्विक राजनीति का रूपांतरण किया। साम्राज्यों के पतन के साथ गणतंत्रों का उदय हुआ, लेकिन कठोर शांति शर्तों और लीग की विफलता ने द्वितीय विश्व युद्ध की नींव रखी। यदि आप चाहें तो 'आर्थिक परिणाम' का भी इसी प्रकार विस्तार किया जा सकता है।

- **साम्राज्यीय पतन (Fall of Empires):** प्रथम विश्व युद्ध के अंत के साथ यूरोप के चार प्रमुख

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

साम्राज्यों –

▪ **जर्मन साम्राज्य (Kaiserreich)** – 1918 में कैसर विल्हेम द्वितीय का पतन हुआ; 'वाइमर गणराज्य' (Weimar Republic) की स्थापना।

▪ **ऑस्ट्रो-हंगरी साम्राज्य** – बहुजातीय साम्राज्य टूटकर स्वतंत्र राष्ट्र बने – ऑस्ट्रिया, हंगरी, चेकोस्लोवाकिया, यूगोस्लाविया।

▪ **ओटोमन साम्राज्य** – 600 वर्षों पुराना इस्लामी खिलाफत समाप्त; 1923 में मुस्तफा कमाल अतातुर्क के नेतृत्व में आधुनिक 'तुर्की गणराज्य' की स्थापना।

▪ **रूसी साम्राज्य** – 1917 की बोल्शेविक क्रांति ने रोमानोव वंश का अंत कर कम्युनिस्ट शासन की शुरुआत की।

• **वर्साय संधि (Treaty of Versailles, 1919):**

▪ *जर्मनी को युद्ध का प्रमुख दोषी* घोषित किया गया (Article 231 – War Guilt Clause)।

▪ *भारी युद्ध हर्जाना* – जर्मनी पर 6.6 बिलियन पाउंड का आर्थिक जुर्माना थोपा गया।

▪ *सैन्य सीमाएं* – जर्मनी की सेना 1 लाख तक सीमित, टैंक, वायुसेना, पनडुब्बी पर प्रतिबंध।

▪ *क्षेत्रीय हानि* – अलसास-लोरेन फ्रांस को, डान्ज़िग पोलैंड को; उपनिवेश विजेता शक्तियों को सौंपे गए।

▪ *रेइनलैंड* को असैन्यीकृत क्षेत्र घोषित किया गया, जिससे जर्मनी की पश्चिमी सीमाएं असुरक्षित रहीं।

• **लीग ऑफ नेशन्स की स्थापना (League of Nations, 1920):**

▪ उद्देश्य: युद्ध की पुनरावृत्ति रोकना, अंतर्राष्ट्रीय विवादों को शांतिपूर्वक हल करना।

▪ *संस्थापक सदस्य राष्ट्र – 42 (बाद में 63)* परंतु **अमेरिका** की सीनेट ने सदस्यता को अस्वीकार कर दिया।

▪ लीग के पास **न तो सैन्य शक्ति थी और न ही दंड लागू करने की वैधानिक शक्ति**।

▪ जापान के मंचूरिया पर आक्रमण (1931), इटली के इथियोपिया पर कब्ज़ा (1935) जैसी घटनाओं से इसकी **अक्षमता स्पष्ट हुई**।

1.1.2 आर्थिक परिणाम (Economic Consequences

- प्रथम विश्व युद्ध ने न केवल यूरोप की आर्थिक रीढ़ तोड़ी, बल्कि अमेरिका को आर्थिक नेतृत्व की ओर अग्रसर किया। आर्थिक विषमता, मुद्रास्फीति और पुनर्निर्माण की जटिलताएं अंततः सामाजिक-राजनीतिक अस्थिरता का कारण बनीं, जिससे द्वितीय विश्व युद्ध की पृष्ठभूमि तैयार हुई।

• **यूरोपीय अर्थव्यवस्था का पतन (Collapse of European Economies):**

▪ प्रथम विश्व युद्ध के दौरान कुल मिलाकर **200 अरब डॉलर** से अधिक की आर्थिक लागत आई।

▪ **फ्रांस, बेल्जियम और रूस** के औद्योगिक क्षेत्र ध्वस्त हो गए – कोयला खदानें, रेल नेटवर्क और कारखाने तबाह।

▪ कृषि उत्पादन गिरा, खाद्य संकट उत्पन्न हुआ, जिससे महँगाई और कुपोषण बढ़ा।

▪ युद्ध पश्चात *'रिपैरशन (Reparations) और पुनर्निर्माण'* हेतु विशाल ऋण लिए गए, जिससे सरकारी वित्तीय घाटा बढ़ा।

• **अमेरिका का आर्थिक उत्थान और वैश्विक वित्तीय प्रभुत्व:**

▪ अमेरिका ने युद्ध के दौरान मित्र राष्ट्रों (विशेषतः ब्रिटेन व फ्रांस) को भारी मात्रा में *युद्ध ऋण* प्रदान किया।

▪ युद्धोत्तर काल में अमेरिका **कर्जदाता राष्ट्र से वैश्विक निवेशक राष्ट्र** बन गया।

▪ *डॉलर* की स्थिरता व सोने के भंडार के कारण यह *अंतरराष्ट्रीय विनिमय* की प्रमुख मुद्रा बनी।

▪ *न्यूयॉर्क स्टॉक एक्सचेंज* ने लंदन को पीछे छोड़कर अंतर्राष्ट्रीय पूंजी बाजार का नेतृत्व किया।

• **जर्मनी में महा-मुद्रास्फीति (Hyperinflation Crisis of 1923):**

▪ वर्साय संधि द्वारा लगाई गई **हर्जाने की भारी राशि** जर्मन अर्थव्यवस्था पर असहनीय बोझ बनी।

▪ जर्मन सरकार ने अधिक मुद्रा छापकर भुगतान करने की कोशिश की, जिससे मुद्रा का अवमूल्यन हुआ।

▪ 1923 में मुद्रा की **अत्यधिक आपूर्ति से हाइपरइन्फ्लेशन** की स्थिति बनी –

उदाहरण: एक ब्रेड की कीमत 1918 में 1 मार्क से बढ़कर 1923 तक 1 अरब मार्क हो गई।

▪ सामाजिक अशांति, बेरोजगारी और मध्यमवर्गीय नागरिकों की **संपत्ति का क्षरण** हुआ।

▪ परिणामस्वरूप **Weimar Republic की वैधता पर प्रश्नचिन्ह** लगा और चरमपंथी शक्तियाँ (जैसे नाज़ी दल) उभरने लगे।

• **औद्योगिक पुनर्निर्माण और श्रम संकट:**

▪ युद्ध के कारण **मानव संसाधन की हानि** (कुशल श्रमिकों की मृत्यु) हुई जिससे उत्पादन प्रभावित हुआ।

▪ *महिलाओं* और *औपनिवेशिक सैनिकों* को अस्थायी रूप से कार्यबल में जोड़ा गया, परंतु युद्ध के

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

बाद बेरोजगारी बढ़ी।

▪ भारी निवेश के बावजूद **यूरोप की उत्पादन क्षमता पूर्व-युद्ध स्तर तक पहुँचने में वर्षों लगे।**

1.1.3 सामाजिक परिणाम (Social Consequences)

• मानव हानि और जनसांख्यिकीय प्रभाव (Human Loss & Demographic Impact):

▪ प्रथम विश्व युद्ध में **लगभग 1.6 करोड़ लोगों की मृत्यु** और **2 करोड़ से अधिक घायल** हुए – इनमें अधिकांश युवा पुरुष थे।

▪ लाखों सैनिक **शारीरिक अपंगता, अंधापन, अंगविहीनता** जैसी स्थायी क्षतियों से ग्रस्त हुए।

▪ युद्ध के कारण **विधवाओं, अनाथों और बुजुर्गों** की संख्या बढ़ी, जिससे सामाजिक देखभाल प्रणालियों पर अत्यधिक दबाव पड़ा।

▪ जनसंख्या पिरामिड में असंतुलन आया – युवावर्ग की कमी और वृद्ध जनसंख्या की वृद्धि से **कार्यबल संकट** उत्पन्न हुआ।

• महिलाओं की भूमिका में परिवर्तन (Transformation in Women's Role):

▪ युद्ध के दौरान महिलाओं ने **कारखानों, गोला-बारूद निर्माण, परिवहन, नर्सिंग और प्रशासनिक कार्यों** में प्रमुख भूमिका निभाई।

▪ यह अनुभव महिलाओं के *आत्मविश्वास और सामाजिक पहचान* को बल देता है।

▪ युद्ध के बाद कई देशों ने महिलाओं को **राजनीतिक अधिकार** देना शुरू किया –

- *ब्रिटेन में 1918,*
- *जर्मनी में 1919,*
- *अमेरिका में 1920* में महिलाओं को

मताधिकार प्राप्त हुआ।

▪ यह परिवर्तन आगे चलकर *नारीवादी आंदोलनों और लैंगिक समानता की आधारशिला* बना।

• मानसिक स्वास्थ्य और युद्धोत्तर सामाजिक मनोविज्ञान (Mental Health & Post-War Psyche):

▪ युद्ध के दौरान सैनिकों को व्यापक रूप से **PTSD (Post-Traumatic Stress Disorder)**, अवसाद और बेचैनी का सामना करना पड़ा – जिसे उस समय *"Shell Shock"* कहा गया।

▪ सामान्य जनजीवन में *भय, अविश्वास और अनिश्चितता* की भावना बढ़ी।

▪ युद्ध की विभीषिका से प्रभावित साहित्यकारों और कलाकारों में *निराशा, भोगवाद और विद्रोह* की प्रवृत्ति उत्पन्न हुई – जिसे *'Lost Generation'* कहा गया (जैसे: अर्नेस्ट हेमिंग्वे, टी.एस. एलियट)।

▪ अस्तित्ववाद (Existentialism) और निराशावाद जैसी विचारधाराओं का उदय – जो मानवीय पीड़ा, उद्देश्यहीनता और युद्ध के अर्थ पर प्रश्न उठाती थीं।

• शरणार्थी समस्या और सामाजिक अस्थिरता:

▪ साम्राज्यों के विघटन और सीमाओं के पुनर्निर्धारण से **लाखों लोग विस्थापित** हुए – जातीय संघर्ष और अल्पसंख्यकों के पलायन की घटनाएँ बढ़ीं।

▪ *अर्मेनियाई नरसंहार* (1915–17) जैसे घटनाएँ जनसंहार की क्रूरता को उजागर करती हैं।

▪ युद्धोत्तर राष्ट्रों में *आर्थिक-सामाजिक असंतोष* के चलते हिंसात्मक प्रदर्शन, हड़तालें और उग्र राष्ट्रवाद की भावना प्रबल हुई।

1.1.4 भौगोलिक परिणाम (Geographical Consequences):

• नए राष्ट्रों का उदय (Emergence of New Nation-States):

▪ *Central Powers* (मध्य शक्तियों) के पतन के बाद यूरोप का राजनीतिक मानचित्र पुनः निर्मित हुआ।

▪ *आत्मनिर्णय (Self-determination)* की वुडरो विल्सन की नीति के प्रभाव से जातीय आधार पर कई **नए राष्ट्रों का उदय** हुआ –

- **पोलैंड** – 123 वर्षों बाद पुनः स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में अस्तित्व में आया (रूस, जर्मनी व ऑस्ट्रो-हंगरी के हिस्सों से)।
- **फिनलैंड** – 1917 में रूस से स्वतंत्रता।
- **बाल्टिक राष्ट्र** – एस्टोनिया, लातविया और लिथुआनिया ने रूस से स्वतंत्रता प्राप्त की।
- **हंगरी** – ऑस्ट्रो-हंगरी के विघटन के बाद एक स्वतंत्र गणराज्य बना।
- **चेकोस्लोवाकिया और यूगोस्लाविया** – बहुजातीय क्षेत्रों को मिलाकर नव राष्ट्र बनाए गए।

• ओटोमन साम्राज्य का विभाजन (Partition of Ottoman Empire):

▪ ओटोमन साम्राज्य के पतन के बाद *Sykes-Picot समझौते* (1916) और *San Remo Conference* (1920) के माध्यम से इसके क्षेत्र **ब्रिटेन और फ्रांस के मंडेट क्षेत्रों** में बाँटे गए –

- **सीरिया और लेबनान** – फ्रांस को
- **इराक, फिलिस्तीन और ट्रांसजॉर्डन** – ब्रिटेन

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

को

- इससे *मध्य-पूर्व में कृत्रिम सीमाओं* का निर्माण हुआ, जिसने आगे चलकर कई संघर्षों की नींव रखी (जैसे – अरब-इज़राइल संघर्ष)।
- *तुर्की गणराज्य* 1923 में आधुनिक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र के रूप में उभरा।

• **उपनिवेशों की पुनर्व्यवस्था (Redistribution of Colonies):**

- जर्मनी की उपनिवेश-सम्पत्ति *League of Nations mandates* के अंतर्गत विजेता देशों को सौंप दी गई –
  - **अफ्रीका में** – टोगोलैंड, कैमरून, दक्षिण-पश्चिम अफ्रीका (वर्तमान नामीबिया) आदि।
  - **एशिया में** – जर्मन प्रशांत द्वीपों पर जापान का कब्जा (जैसे – मार्शल द्वीप समूह)।
- औपनिवेशिक क्षेत्रों में स्थानीय असंतोष और स्वतंत्रता आंदोलनों को बल मिला – भारत, वियतनाम, मिस्र आदि में राष्ट्रवाद उभरा।

• **सीमाओं का पुनर्निर्धारण और अल्पसंख्यक संकट:**

- नई सीमाओं ने कई *जातीय समूहों को जबरन विभाजित* कर दिया या *अल्पसंख्यक बना दिया* – जिससे विद्रोह और अस्थिरता बढ़ी।
- *Treaty of Trianon (1920)* के बाद हंगरी की 70% भूमि अन्य देशों को चली गई, जिससे हंगरी में तीव्र राष्ट्रीय आक्रोश पनपा।
- *Danzig* जैसे स्वतंत्र शहर बनाए गए, जो बाद में संघर्ष का कारण बने।

1.1.5 वैचारिक और वैदिक प्रभाव (Ideological & Intellectual Consequences):

• **रूसी क्रांति और साम्यवाद का उदय (Russian Revolution & Rise of Communism):**

- प्रथम विश्व युद्ध के दौरान रूस में भारी सैन्य व आर्थिक संकट उत्पन्न हुआ, जिससे ज़ार निकोलस द्वितीय की सरकार के प्रति जन असंतोष बढ़ा।
- 1917 की **फरवरी क्रांति** में ज़ार का पतन हुआ और *अंतरिम सरकार* बनी, परंतु अक्टूबर 1917 में **लेनिन के नेतृत्व में बोल्शेविक क्रांति** हुई।
- *मार्क्सवाद के सिद्धांतों* पर आधारित *सोवियत संघ (USSR)* की स्थापना हुई, जिसने एक *वैकल्पिक समाज व्यवस्था (साम्यवाद)* को पूंजीवाद के विरुद्ध प्रस्तुत किया।
- साम्यवाद अब **वैश्विक विचारधारा** बना, जिससे अमेरिका और यूरोप में *समाजवादी आंदोलनों* को बल मिला।

• **उपनिवेशवाद-विरोधी राष्ट्रवादी आंदोलनों का प्रसार (Anti-Colonial Movements):**

- युद्ध में उपनिवेशों से सैनिक व संसाधन लेने के बावजूद यूरोपीय शक्तियों ने स्वतंत्रता की मांगों को ठुकराया, जिससे *राजनीतिक चेतना* बढ़ी।
- *भारत में* गाँधीजी के नेतृत्व में *असहयोग आंदोलन (1920)* प्रारंभ हुआ।
- *मिस्र में* 1919 में ब्रिटिश राज के विरुद्ध व्यापक विद्रोह हुआ; *सईद ज़ग़लूल* के नेतृत्व में।
- *वियतनाम, केन्या, इंडोनेशिया* आदि देशों में राष्ट्रवाद और स्वतंत्रता की माँगों में तेज़ी आई।
- वुडरो विल्सन के *"Self-Determination"* सिद्धांत ने उपनिवेशित देशों को प्रेरणा दी, भले ही इसे व्यावहारिक रूप नहीं मिला।

• **आधुनिकतावाद और सांस्कृतिक परिवर्तन (Modernism & Cultural Shift):**

- युद्ध की त्रासदी से मानवता का विश्वास **धर्म, परंपरा और तर्क आधारित प्रगति पर डगमगाया**।
- साहित्य, कला और संगीत में **आधुनिकतावाद (Modernism)** की प्रवृत्ति उभरी –
  - *जेम्स जॉइस, टी.एस. एलियट, वर्जीनिया वुल्फ* जैसे लेखक अस्तित्ववादी, विघटनकारी शैली अपनाने लगे।
  - कला में *सुर्रियलिज्म (Surrealism), डाडा (Dada)* जैसे आंदोलन विकसित हुए।
- **निराशावाद (Pessimism)** और *Lost Generation* जैसे भावों ने युद्ध के पश्चात युवा वर्ग की हताशा को दर्शाया।

• **राजनीतिक ध्रुवीकरण और चरमपंथ की ओर झुकाव:**

- युद्ध के बाद की अस्थिरता और असमानता के चलते **चरम दक्षिणपंथ (जैसे – फासीवाद, नाज़ीवाद)** तथा **वामपंथी क्रांति** की प्रवृत्तियाँ विकसित हुईं।
- इटली में *मुसोलिनी* का फासीवादी आंदोलन और जर्मनी में *हिटलर* का नाज़ीवाद इसी वैचारिक असंतोष की उपज थे।

1.1.6 सैन्य व तकनीकी परिणाम (Military and Technological Consequences):

• **नई सैन्य तकनीकों का व्यापक प्रयोग (Deployment of New Military Technologies):**

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

▪ प्रथम विश्व युद्ध को **'प्रथम आधुनिक औद्योगिक युद्ध'** कहा जाता है, जिसमें युद्ध के मैदान में **वैज्ञानिक व तकनीकी नवाचारों** का अभूतपूर्व उपयोग हुआ –

• **टैंक (Tank):** ब्रिटेन द्वारा 1916 में प्रथम बार 'बैटल ऑफ़ सोम' में प्रयोग, जिससे गतिशीलता व सुरक्षा में क्रांतिकारी परिवर्तन आया।

• **ज़हरीली गैस (Poison Gas):** मस्टर्ड गैस, क्लोरीन गैस जैसे रासायनिक हथियारों से हजारों सैनिक मारे गए – यह *रासायनिक युद्ध (chemical warfare)* की शुरुआत थी।

• **मशीन गन:** उच्च गति से गोली चलाने वाली बंदूकें – सैनिकों की सामूहिक हत्याओं में वृद्धि।

• **पनडुब्बियाँ (Submarines):** जर्मन *U-boats* द्वारा अटलांटिक महासागर में मित्र राष्ट्रों के जहाज़ों को डुबोया गया।

• **हवाई जहाज़ों का उपयोग:** प्रारंभिक निगरानी, बमबारी व 'dogfights' – इससे भविष्य के हवाई युद्धों की नींव पड़ी।

• युद्ध नीति में बदलाव (Transformation in Military Strategy):

▪ पारंपरिक 'मैदानी युद्ध' के स्थान पर **ट्रेंच वॉरफेयर (खाइयों का युद्ध)** प्रमुख रणनीति बनी – विशेषकर पश्चिमी मोर्चे (Western Front) पर।

▪ ट्रेंच में रहने की कठिन स्थितियाँ, गतिरोध (stalemate) की स्थिति और **'No-Man's Land'** की भयावहता ने युद्ध को मानसिक व शारीरिक दृष्टि से अधिक विनाशकारी बना दिया।

▪ यह युद्ध *दीर्घकालिक, संसाधन-आधारित और मनोवैज्ञानिक* हो गया, जिसमें सैनिकों की थकावट और सामूहिक मृत्यु सामान्य हो गई।

• स्थायी सैन्य तैयारियों का युग (Era of Permanent Militarization):

▪ राष्ट्रों ने अब *शांति काल में भी सैन्य उत्पादन, प्रशिक्षण व अनुसंधान* को प्राथमिकता दी।

▪ युद्धोत्तर अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में **'सैन्य औद्योगिक परिसर' (Military-Industrial Complex)** का उदय हुआ – जिसमें सरकार, सेना और उद्योग एक साथ मिलकर रक्षा उत्पादन करते हैं।

▪ अमेरिका, जर्मनी, फ्रांस, जापान जैसे देशों ने युद्धोत्तर काल में भी **नवीन सैन्य तकनीकों का विकास जारी रखा** – जैसे रॉकेटरी, जैविक हथियार और रेडियो संचार।

▪ युद्ध अनुभव ने रक्षा बजट में बढ़ोतरी को नियमित बना दिया – जिससे वैश्विक सैन्य दौड़ प्रारंभ हुई।

1.2 द्वितीय विश्व युद्ध के परिणाम *(1939–1945)*

1.2.1 राजनीतिक परिणाम

1. धुरी राष्ट्रों की पराजय व मित्र राष्ट्रों की विजय

• जर्मनी, इटली और जापान की सैन्य हार से फासीवाद और साम्राज्यवाद की विचारधाराएँ वैश्विक स्तर पर अस्वीकार की गईं।

• मित्र राष्ट्र (अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, USSR, चीन) ने सैन्य, राजनीतिक व कूटनीतिक रूप से विश्व पर प्रभाव बढ़ाया।

• हिटलर की आत्महत्या (30 अप्रैल 1945), मुसोलिनी की हत्या (अप्रैल 1945), जापान की आत्मसमर्पण घोषणा (15 अगस्त 1945) इस पराजय के प्रतीक बने।

2. द्विध्रुवीय विश्व व्यवस्था व महाशक्तियों का उदय

• युद्ध के बाद वैश्विक सत्ता-संतुलन दो ध्रुवों में बँट गया –

○ **अमेरिका** (पूंजीवादी लोकतंत्र का प्रतिनिधि)

○ **सोवियत संघ (USSR)** (समाजवादी अधिनायकवाद का प्रतीक)

• इसने *शीत युद्ध (Cold War)* की पृष्ठभूमि तैयार की, जो विश्व राजनीति को लगभग 45 वर्षों तक प्रभावित करता रहा।

• वैश्विक निर्णयों में यूरोप की भूमिका कम हुई और द्वितीयक शक्तियों की भूमिका सीमित हो गई।

3. संयुक्त राष्ट्र की स्थापना (United Nations – 1945)

• 24 अक्टूबर 1945 को 51 राष्ट्रों ने संयुक्त राष्ट्र (UNO) की स्थापना की – उद्देश्य: अंतरराष्ट्रीय शांति, सुरक्षा व सहयोग।

• **संरचना:** महासभा, सुरक्षा परिषद, ECOSOC, ICJ, सचिवालय, और विशिष्ट एजेंसियाँ (WHO, UNESCO, UNICEF आदि)।

• **सुरक्षा परिषद में 5 स्थायी सदस्य** – अमेरिका, रूस (USSR), ब्रिटेन, फ्रांस, चीन – वीटो अधिकार सहित।

• यह संस्था लीग ऑफ नेशन्स की विफलता से सबक लेकर बनाई गई।

4. युद्ध अपराध न्यायालय – न्यूरेमबर्ग ट्रायल्स (Nuremberg Trials)

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

- 1945–46 में जर्मनी के नाजी नेताओं के विरुद्ध अंतरराष्ट्रीय सैन्य न्यायाधिकरण (International Military Tribunal) का गठन हुआ।
- **अपराधों की श्रेणियाँ:** युद्ध अपराध, मानवता के विरुद्ध अपराध, शांति भंग करना।
- यह मानव अधिकार और युद्धकालीन न्याय का पहला संगठित प्रयास था।
- इसी प्रकार टोक्यो ट्रायल्स में जापानी नेताओं पर भी अभियोग चले।

5. उपनिवेशवाद का पतन व नव स्वतंत्र राष्ट्रों का उदय

- युद्ध के पश्चात यूरोपीय शक्तियाँ (ब्रिटेन, फ्रांस आदि) आर्थिक व सैन्य रूप से कमजोर हुईं।
- **स्वतंत्रता की लहर:**
  - **भारत – 1947**
  - **इंडोनेशिया – 1949**
  - **वियतनाम – 1954**
  - **घाना – 1957**
- संयुक्त राष्ट्र के माध्यम से उपनिवेशवाद विरोधी विमर्श को वैश्विक मान्यता मिली।
- *Non-Aligned Movement (NAM)* का विचार इसी पृष्ठभूमि में उभरा।

6. शीत युद्ध की शुरुआत (1947–1991)

- अमेरिका व USSR के बीच वैचारिक, सामरिक और राजनीतिक प्रतिस्पर्धा शुरू हुई।
- **प्रमुख आयाम:**
  - हथियारों की दौड़ (arms race)
  - अंतरिक्ष दौड़ (space race)
  - गुट-निर्माण: NATO (1949) बनाम Warsaw Pact (1955)
  - प्रॉक्सी युद्ध: कोरिया, वियतनाम, अफगानिस्तान आदि।
- वैश्विक राजनीति में **गुटनिरपेक्ष आंदोलन** (1955) ने वैकल्पिक रास्ता प्रस्तुत किया।

7. इज़राइल की स्थापना (1948)

- होलोकॉस्ट की पृष्ठभूमि में यहूदियों के लिए एक राष्ट्र की माँग को वैश्विक सहमति मिली।
- ब्रिटिश-नियंत्रित फिलिस्तीन में UN योजना के अनुसार यहूदी राष्ट्र 'इज़राइल' की घोषणा (14 मई 1948) हुई।
- इसके परिणामस्वरूप अरब–इज़राइल संघर्ष प्रारंभ हुआ – 1948, 1956, 1967, 1973 के युद्धों सहित।
- यह पश्चिम एशिया के दीर्घकालिक संघर्ष और तेल राजनीति की शुरुआत का कारण बना।

1.2.2 द्वितीय विश्व युद्ध के भौगोलिक परिणाम

1. जर्मनी का विभाजन – चार शक्ति नियंत्रण (Four-Zone Occupation)

- युद्ध के बाद जर्मनी को चार विजयी शक्तियों – **अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस और सोवियत संघ** – के नियंत्रण में बाँट दिया गया।
- **बर्लिन** भी चार भागों में विभाजित हुआ, जबकि यह सोवियत क्षेत्र में स्थित था।
- 1949 में दो स्वतंत्र राष्ट्रों का गठन:
  - **पश्चिम जर्मनी (Federal Republic of Germany)** – लोकतांत्रिक
  - **पूर्व जर्मनी (German Democratic Republic)** – साम्यवादी सोवियत प्रभाव
- यह विभाजन **शीत युद्ध** का प्रतीक बन गया और *बर्लिन दीवार (1961–1989)* का कारण बना।

2. पोलैंड की सीमाओं का पुनर्निर्धारण (Redrawing of Poland)

- युद्ध के दौरान याल्टा और पॉट्सडैम सम्मेलनों में USSR ने पोलैंड के पूर्वी भाग (Kresy region) को जोड़ लिया।
- बदले में पोलैंड को जर्मनी के पूर्वी भाग (Silesia, Pomerania) से क्षेत्र मिला – **'Westward Shift'**।
- लाखों जर्मनों को इन नए पोलिश क्षेत्रों से निष्कासित किया गया।

3. कोरियाई प्रायद्वीप का विभाजन (Division of Korea)

- जापानी कब्जे के बाद कोरिया को 38वें समानांतर (38th Parallel) रेखा पर दो भागों में बाँट दिया गया:
  - **उत्तर कोरिया** – सोवियत समर्थन प्राप्त, कम्युनिस्ट शासन
  - **दक्षिण कोरिया** – अमेरिकी प्रभाव में, लोकतांत्रिक व्यवस्था
- यह विभाजन 1950 में **कोरियाई युद्ध (Korean War)** में परिवर्तित हुआ, जो बाद में स्थायी शत्रुता का कारण बना।

4. जापानी साम्राज्य का विघटन

- जापान से इसके सभी बाहरी उपनिवेश छीन लिए गए:
  - **कोरिया** – स्वतंत्र (1945)
  - **मंचूरिया (चीन का क्षेत्र)** – USSR व चीन के प्रभाव में गया

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

○ **ताइवान** – चीन को सौंपा गया (हालाँकि बाद में अलग प्रशासन बना)

• **कुरील द्वीपों पर सोवियत नियंत्रण** – जापान व रूस के मध्य आज भी विवादित।

• जापान पर अमेरिकी सैन्य नियंत्रण (1945–1952) – मैकआर्थर द्वारा शासन।

5. वैश्विक सत्ता केंद्र का स्थानांतरण – यूरोप से अमेरिका और USSR की ओर

• द्वितीय विश्व युद्ध से पहले वैश्विक शक्ति केंद्र **ब्रिटेन, फ्रांस और जर्मनी** जैसे यूरोपीय राष्ट्र थे।

• युद्ध के बाद **यूरोप बर्बाद**, जबकि अमेरिका और USSR सुरक्षित व सशक्त रहे।

• परिणामस्वरूप:

○ अमेरिका – आर्थिक, सैन्य, तकनीकी और राजनीतिक रूप से अग्रणी

○ USSR – साम्यवाद का विस्तार करने वाला विश्व शक्ति

• यह स्थानांतरण **द्विध्रुवीय विश्व राजनीति** और **संयुक्त राष्ट्र में शक्ति संतुलन** का आधार बना।

6. अन्य क्षेत्रीय पुनर्संरचनाएँ

• **चीन** में गृहयुद्ध तेज – कम्युनिस्टों (माओ) की विजय (1949) और पीपुल्स रिपब्लिक की स्थापना।

• **फ्रांस और ब्रिटेन** के अफ्रीकी व एशियाई उपनिवेश स्वतंत्रता की ओर बढ़े – नए देशों की राजनीतिक भौगोलिक इकाइयाँ बनीं।

• **इज़राइल (1948)** और **पाकिस्तान (1947)** जैसे नए राष्ट्रों का उभार।

1.2.3 द्वितीय विश्व युद्ध के आर्थिक परिणाम

1. यूरोप व जापान की अर्थव्यवस्था पूर्णतः ध्वस्त

• **युद्ध से प्रभावित क्षेत्रों** – जर्मनी, फ्रांस, पोलैंड, जापान आदि में बुनियादी ढाँचा (रेल, सड़क, कारखाने) नष्ट हो गए।

• **मुद्रास्फीति और भुखमरी** – विशेषतः जर्मनी में मुद्रा का अवमूल्यन चरम पर था।

• **बेरोजगारी और औद्योगिक ठहराव** – लाखों लोग बेघर और बेरोजगार हो गए।

• उत्पादन, निर्यात, विदेशी मुद्रा भंडार और पूँजी निवेश निचले स्तर पर पहुँच गए।

• **'Austerity' युग** – लोगों को राशनिंग, कूपन प्रणाली और सीमित जीवनशैली अपनानी पड़ी।

2. अमेरिका – नई वैश्विक आर्थिक महाशक्ति

• युद्ध से अप्रभावित अमेरिका ने सैन्य सामग्री उत्पादन के ज़रिए अर्थव्यवस्था को गति दी।

• 1945 तक **विश्व का लगभग 50% सोने का भंडार अमेरिका के पास** था।

• अमेरिका ने वैश्विक पुनर्निर्माण के लिए नेतृत्व भूमिका अपनाई – "**Dollar Diplomacy**" का प्रयोग।

• डॉलर वैश्विक विनिमय मुद्रा बना, जिससे अमेरिका का वित्तीय प्रभुत्व स्थापित हुआ।

3. ब्रेटन वुड्स सम्मेलन (1944) – वैश्विक वित्तीय संस्थानों की स्थापना

• जुलाई 1944 में न्यू हैम्पशायर, अमेरिका में **ब्रेटन वुड्स सम्मेलन** आयोजित हुआ।

• इसके तहत स्थापित संस्थाएँ:

○ **अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF)** – वैश्विक मुद्रा स्थिरता व भुगतान संतुलन के लिए।

○ **विश्व बैंक (IBRD)** – युद्धग्रस्त देशों के पुनर्निर्माण हेतु ऋण सुविधा।

• इससे **अमेरिका-केन्द्रित पूंजीवादी आर्थिक ढाँचे** की नींव पड़ी।

4. मार्शल योजना (Marshall Plan, 1948)

• अमेरिकी विदेश मंत्री **जॉर्ज मार्शल** के नाम पर योजना – यूरोप के आर्थिक पुनर्निर्माण हेतु सहायता।

• **$13 बिलियन की आर्थिक सहायता** (1948–1952) – 16 यूरोपीय देशों को दी गई।

• इसका उद्देश्य:

○ यूरोप की आर्थिक बहाली

○ साम्यवाद को रोकना

○ अमेरिकी वस्तुओं के लिए बाजार बनाना

• इस योजना से **पश्चिमी यूरोप का पुनरुत्थान** संभव हुआ – विशेषकर जर्मनी, फ्रांस, इटली।

5. सैन्य खर्चों में तीव्र वृद्धि

• युद्धोपरांत दुनिया **शांति की ओर नहीं, बल्कि हथियारों की होड़** की ओर बढ़ी।

• अमेरिका और USSR ने भारी सैन्य बजट बनाए – इससे रक्षा उद्योगों में तेजी आई।

• "**Military-Industrial Complex**" जैसी अवधारणाएँ विकसित हुईं, जो अर्थव्यवस्था का स्थायी हिस्सा बन गईं।

• इस सैन्य व्यय ने भी **वैश्विक असमानता और संसाधनों के दुरुपयोग** को बढ़ावा दिया।

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

Click on this page for Test Schedule & Regular Content related updates:-

CLICK HERE

Register Yourself for 1st Free Test:-

Registration link is available on

@RiseJaipur / @AbhyasRasMains Telegram Channel

प्रथम टेस्ट निःशुल्क CLIK ON THIS PAGE FOR MORE UPDATES

ऑफलाइन सेंटर
Main Riddhi-Siddhi Chauraha, Jaipur
Under Triveni Puliya, Gopalpura Jaipur

For More Information
+91 9785606061

@RiseJaipur
@AbhyasRasMains

Download The App Now
"RISE CIVIL SERVICES"

RISE
An Institute for Civil Services

6. औद्योगिक पुनर्गठन व आर्थिक मॉडल का विकास

- **जापान और जर्मनी** ने युद्ध के बाद **नवीन औद्योगिक रणनीतियाँ** अपनाईं:
  - *जापान* – गुणवत्ता आधारित उत्पादन, निर्यातोन्मुखी नीति (Sony, Toyota जैसी कंपनियाँ)।
  - *जर्मनी* – *Soziale Marktwirtschaft* (Social Market Economy) के सिद्धांत पर आर्थिक चमत्कार (Wirtschaftswunder)।
- इन देशों में अमेरिकी पूंजी निवेश, तकनीकी सहायता, और श्रम कौशल का मेल हुआ।
- इससे "**Asian Tigers**" और "**Rebuilt Europe**" की अवधारणा उभरी।

7. वैश्विक व्यापार, मुद्रानिति और विनियमन का नया ढाँचा

- **GATT (1947)** – वैश्विक व्यापार को उदार बनाने हेतु समझौता।
- **नई मुद्रा प्रणाली** – डॉलर आधारित, अर्ध-स्वर्ण मानक के साथ।
- **नवीन आर्थिक संस्थाओं** (OEEC, ECA आदि) का उदय – बहुपक्षीय आर्थिक सहयोग की नींव।

1.2.4 द्वितीय विश्व युद्ध के सामाजिक और मानवीय प्रभाव

1. होलोकॉस्ट (Holocaust) – यहूदियों का संगठित नरसंहार

- नाजी जर्मनी द्वारा संचालित एक राज्य प्रयोजित नरसंहार, जिसमें **लगभग 60 लाख यहूदियों** की हत्या की गई।
- *गैस चेम्बर, कंसन्ट्रेशन कैंप* (Auschwitz, Dachau, Treblinka) जैसे स्थलों पर अमानवीय अत्याचार हुए।
- इसके अतिरिक्त रोमा (Gypsies), स्लाव, विकलांग, समलैंगिक और राजनीतिक विरोधियों को भी निशाना बनाया गया।
- यह नरसंहार मानवाधिकार और युद्ध नैतिकता पर स्थायी वैश्विक विमर्श की प्रेरणा बना।
- "**Never Again**" जैसे अभियान और *होलोकॉस्ट स्मृति दिवस (27 जनवरी)* इसी की विरासत हैं।

2. मानव क्षति – युद्धकालीन मृत्यु और विनाश

- द्वितीय विश्व युद्ध में अनुमानित **7–8 करोड़ लोग मारे गए**, यह इतिहास का सबसे घातक संघर्ष बना।
  - **सैनिक मृत्यु** – लगभग **2 करोड़** (सभी पक्षों से)
  - **नागरिक मृत्यु** – **5 करोड़ से अधिक**, जिनमें जापान, जर्मनी, USSR आदि सबसे अधिक प्रभावित
- **हिरोशिमा व नागासाकी** पर परमाणु बम गिराए जाने से लाखों लोग तुरंत और बाद में विकिरण से मरे।
- भारी संख्या में अनाथ बच्चे, विधवाएँ, विकलांग जन और मानसिक रूप से आहत नागरिक उत्पन्न हुए।

3. महिलाओं की भूमिका व सामाजिक बदलाव

- युद्धकाल में पुरुषों की कमी के कारण महिलाओं को **उद्योग, निर्माण, चिकित्सा व सेना सहयोग** में सम्मिलित किया गया।
- *Rosie the Riveter* जैसी छवि महिलाओं की नई पहचान का प्रतीक बनी।
- **'Gender Roles' में बदलाव** – युद्धोपरांत महिलाएँ केवल गृहिणी न रहकर कार्यबल का स्थायी हिस्सा बनीं।
- इससे महिलाओं की **राजनीतिक चेतना, शिक्षा और सशक्तिकरण** को बल मिला – कई देशों में महिला मताधिकार को मजबूती मिली।

4. विस्थापन, शरणार्थी व पलायन की समस्या

- युद्धोपरांत **5 करोड़ से अधिक लोग** अपने देश, क्षेत्र या घर से बेदखल हुए।
- **Displaced Persons (DP) Camps** – यूरोप भर में स्थापित, विशेषकर पोलैंड, जर्मनी, चेकोस्लोवाकिया में।
- *Operation Keelhaul* जैसी घटनाओं में जबरन लोगों को युद्धपूर्व की सीमाओं में लौटाया गया।
- यहूदी शरणार्थी संकट ने इज़राइल की स्थापना और पश्चिम एशिया संकट को जन्म दिया।

5. युद्धबंदी और मानवता पर वैश्विक विमर्श

- युद्ध के अनुभवों ने **मानवाधिकारों और युद्ध के नैतिक मानकों** पर अंतरराष्ट्रीय चर्चा को गति दी।
- **1949 जिनेवा संधि** (Geneva Conventions) में युद्धबंदियों, नागरिकों व घायलों के अधिकारों की स्पष्ट रूपरेखा तय हुई।
- **1948 – Universal Declaration of Human Rights** को संयुक्त राष्ट्र द्वारा पारित किया गया – यह युद्ध के बाद की नैतिक प्रतिक्रिया थी।
- **बाल अधिकारों** (Child Rights) की चर्चा – युद्ध

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

में अनाथ हुए बच्चों की संख्या ने शिक्षा, सुरक्षा व पोषण पर वैश्विक चिंतन को जन्म दिया।

6. समाज में दीर्घकालिक प्रभाव

- युद्ध पश्चात **मानसिक स्वास्थ्य संकट** – PTSD, अवसाद, युद्धशोक (grief) जैसी स्थितियाँ सामान्य हुईं।
- **प्रवासी समाज** – लाखों यहूदियों, पोलिश, जर्मन व एशियाई लोगों ने अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया में स्थायी निवास चुना।
- **संयुक्त राष्ट्र संघ की सामाजिक एजेंसियाँ** (UNICEF, UNHCR, UNESCO आदि) इन्हीं मानवीय संकटों के समाधान हेतु गठित हुईं।
- युद्ध ने आधुनिक समाज को **सामाजिक सुरक्षा, मानवाधिकार और शांति की आवश्यकता** का बोध कराया।

1.2.5 द्वितीय विश्व युद्ध के सैन्य और तकनीकी परिणाम

1. परमाणु युग की शुरुआत

- **6 अगस्त 1945** को अमेरिका ने *"Little Boy"* नामक परमाणु बम हिरोशिमा पर और **9 अगस्त 1945** को *"Fat Man"* नागासाकी पर गिराया।
- लगभग **2 लाख से अधिक नागरिकों की मृत्यु** – तत्काल और विकिरण प्रभावों के कारण।
- यह घटनाएँ आधुनिक युद्ध के चरित्र में निर्णायक बदलाव का प्रतीक बनीं।
- **'Mutually Assured Destruction (MAD)'** सिद्धांत की नींव पड़ी – जिससे शीत युद्ध में शस्त्र नियंत्रण आवश्यक बना।

2. युद्ध तकनीकों में नवाचार और उन्नयन

- युद्ध के दौरान विज्ञान व प्रौद्योगिकी में तेज़ी से विकास हुआ:
  - **रेडार (Radar)** – हवाई हमलों का पूर्वानुमान व नियंत्रण
  - **जेट इंजन (Jet Engine)** – उच्च गति वायुसेना की नींव
  - **कोड ब्रेकिंग (Ultra Project)** – Bletchley Park में जर्मन Enigma को डिक्रिप्ट करना
  - **रॉकेट तकनीक (V-2 Rockets)** – जर्मन वैज्ञानिक वर्नर वॉन ब्राउन द्वारा विकसित
  - **संचार तकनीक, चिकित्सा उपकरण, और सामरिक रसद (logistics)** का अभूतपूर्व विकास
- युद्धोपरांत इन्हीं तकनीकों का उपयोग शीत युद्ध, अंतरिक्ष दौड़, और नागरिक उद्योगों में हुआ।

3. सैन्य गुटबंधनों का गठन – NATO और Warsaw Pact

- शीत युद्ध की शुरुआत के साथ **सैन्य गुटबंदी** वैश्विक रणनीति बन गई:
  - **NATO (1949)** – अमेरिका व पश्चिमी यूरोपीय राष्ट्रों द्वारा सामूहिक सुरक्षा हेतु
  - **Warsaw Pact (1955)** – सोवियत संघ और पूर्वी यूरोपीय राष्ट्रों द्वारा
- इन गुटों ने दुनिया को दो सैन्य ब्लॉकों में बाँट दिया – जिससे *प्रॉक्सी युद्धों, हथियारों की दौड़* और वैश्विक तनाव की स्थितियाँ उत्पन्न हुईं।

4. शस्त्र नियंत्रण और परमाणु अप्रसार पर विमर्श

- विश्व को परमाणु हथियारों के विनाशकारी प्रभाव से बचाने हेतु प्रयास आरंभ हुए:
  - **Atoms for Peace (1953)** – अमेरिकी राष्ट्रपति आइज़नहावर की पहल
  - **Partial Test Ban Treaty (1963)** – वायुमंडल, जल और अंतरिक्ष में परमाणु परीक्षणों पर प्रतिबंध
  - **NPT (Non-Proliferation Treaty, 1968)** – परमाणु हथियारों के प्रसार को रोकने हेतु वैश्विक संधि
- इन प्रयासों ने **परमाणु नैतिकता, वैज्ञानिक जिम्मेदारी, और वैश्विक नियंत्रण तंत्र** की ओर दिशा दी।

5. स्थायी सैन्य–औद्योगिक ढाँचे का निर्माण (Military-Industrial Complex)

- द्वितीय विश्व युद्ध में **सैन्य उत्पादन और औद्योगिक संगठन** का घनिष्ठ संबंध स्थापित हुआ।
- युद्धोपरांत अमेरिका, USSR, ब्रिटेन जैसे देशों में **सैन्य खर्च स्थायी बजट का हिस्सा** बना।
- **'Military-Industrial Complex'** – अमेरिकी राष्ट्रपति आइज़नहावर द्वारा चेतावनी (1961):
  "A potentially disastrous rise of misplaced power exists and will persist."
- इससे **नवाचार, अनुसंधान, रक्षा विनिर्माण, और तकनीकी प्रतिस्पर्धा** को गति मिली।

6. अंतरिक्ष विज्ञान और रक्षा तकनीक की बुनियाद

- जर्मन रॉकेट तकनीक (V-2) ने बाद में **NASA और सोवियत अंतरिक्ष कार्यक्रम** की आधारशिला रखी।
- **USSR – स्पुतनिक (1957)** और **USA – अपोलो मिशन (1969)** जैसी उपलब्धियाँ इस युद्धजनित विज्ञान की परिणति थीं।

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

• रक्षा बजट का बड़ा हिस्सा **स्पेस डिफेंस, मिसाइल टेक्नोलॉजी और सैटेलाइट नेटवर्क** में निवेशित होने लगा।

1.2.6 द्वितीय विश्व युद्ध के वैचारिक और वैश्विक प्रभाव

1. मानवाधिकार घोषणापत्र (Universal Declaration of Human Rights, 1948)

• 10 दिसंबर 1948 को **संयुक्त राष्ट्र महासभा** द्वारा पारित – *"सभी मनुष्यों को जन्म से समान गरिमा और अधिकार प्राप्त हैं।"*

• यह घोषणापत्र द्वितीय विश्व युद्ध की क्रूरताओं, विशेषकर **होलोकॉस्ट** और **युद्ध अपराधों** के प्रति प्रतिक्रिया थी।

• इसने वैश्विक मानवाधिकारों की आधारशिला रखी – जैसे जीवन का अधिकार, स्वतंत्रता, विचार व अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, समानता, शिक्षा व रोजगार का अधिकार।

• इसके आधार पर आगे चलकर अनेक अंतरराष्ट्रीय संधियाँ, जैसे **ICCPR**, **ICESCR**, **CEDAW** आदि बनीं।

2. एशिया–अफ्रीका में राष्ट्रवादी आंदोलनों को बल

• युद्ध के बाद यूरोपीय साम्राज्य आर्थिक रूप से कमजोर हुए – उनकी उपनिवेशवादी पकड़ ढीली पड़ी।

• एशिया व अफ्रीका के देशों में **स्वतंत्रता संघर्ष तीव्र हुए** –

○ **भारत – 1947**

○ **श्रीलंका, म्यांमार – 1948**

○ **इंडोनेशिया – 1949**, **वियतनाम – 1954**

○ **घाना – 1957**, **केन्या – 1963**, **अल्जीरिया – 1962**

• संयुक्त राष्ट्र में नव स्वतंत्र राष्ट्रों ने '**गुटनिरपेक्ष आंदोलन**' और **वैश्विक दक्षिण की आवाज** को प्रबल किया।

3. विचारधाराओं की पुनर्व्याख्या और संघर्ष

• युद्ध के बाद प्रमुख राजनीतिक–आर्थिक विचारों में पुनर्मूल्यांकन हुआ:

○ **फासीवाद** – अस्वीकार किया गया; नाजीवाद, मुसोलिनीवाद का अंत।

○ **लोकतंत्र** – मानव स्वतंत्रता और प्रतिनिधित्व की वैध व्यवस्था के रूप में पुनः प्रतिष्ठित।

○ **समाजवाद** – USSR के उदय से प्रेरित होकर कई देशों में समाजवादी नीति अपनाई गई (भारत में योजना मॉडल)।

○ **पूंजीवाद** – अमेरिका के नेतृत्व में उदार पूंजीवादी व्यवस्था का विस्तार हुआ।

○ **राष्ट्रवाद** – उपनिवेशों में स्वतंत्रता की माँग और राष्ट्रनिर्माण की भावना का आधार बना।

• यह विचारधारात्मक संघर्ष आगे चलकर **शीत युद्ध** के रूप में परिणत हुआ।

4. आधुनिक विश्व व्यवस्था की आधारशिला – शिक्षा, विज्ञान, स्वास्थ्य पर बल

• युद्ध के अनुभवों ने विश्व को **सामाजिक न्याय, सार्वजनिक स्वास्थ्य, तकनीकी विकास और शिक्षा** की आवश्यकता का बोध कराया।

• **योजना आधारित विकास मॉडल** कई देशों ने अपनाया – जैसे भारत का पंचवर्षीय योजना मॉडल (1951)।

• विज्ञान एवं तकनीक को राष्ट्र निर्माण का आधार बनाया गया – **अंतरिक्ष, परमाणु ऊर्जा, सूचना तकनीक** पर निवेश।

• **UNESCO, WHO, FAO** जैसी संस्थाएँ मानव विकास के इन क्षेत्रों में सहयोग के लिए गठित हुईं।

• विकासशील देशों में **जनशिक्षा, बाल स्वास्थ्य, पोषण, साक्षरता मिशन** आदि कार्यक्रम प्रारंभ हुए।

5. अंतरराष्ट्रीय कानून व संस्थाओं का सशक्तीकरण

• युद्ध ने यह स्पष्ट कर दिया कि केवल सैन्य शक्ति नहीं, बल्कि **नियम आधारित वैश्विक व्यवस्था** आवश्यक है।

• परिणामतः कई अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं का गठन और सशक्तीकरण हुआ:

○ **ILO (International Labour Organization)** – श्रमिकों के अधिकार और मानकों हेतु

○ **WHO (World Health Organization, 1948)** – वैश्विक स्वास्थ्य सहयोग हेतु

○ **UNESCO** – शिक्षा, संस्कृति, विज्ञान के माध्यम से शांति

○ **UNHCR (1950)** – शरणार्थियों की सुरक्षा हेतु

• **ICJ (अंतरराष्ट्रीय न्यायालय)** का भी प्रभाव बढ़ा – अंतरराष्ट्रीय विवादों को शांतिपूर्ण ढंग से सुलझाने हेतु।

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

1.2.7 कथन

प्रथम विश्व युद्ध के परिणाम पर कथन

1. **एरिक हॉब्सबॉम** – *"The First World War marked the end of the 'long 19th century' and heralded the violent birth of the modern era."*
(प्रथम विश्व युद्ध ने दीर्घ उन्नीसवीं शताब्दी का अंत किया और आधुनिक युग की हिंसात्मक शुरुआत का संकेत दिया।)

2. **एन. नील्सन** – *"It destroyed four empires, changed borders, and redefined power in Europe."*
(इसने चार साम्राज्यों को नष्ट कर दिया, सीमाएँ बदलीं और यूरोप में सत्ता की परिभाषा को पुनर्निर्धारित किया।)

3. **जे.एम. रॉबर्ट्स** – *"The war planted the seeds of another even greater conflict."*
(इस युद्ध ने एक और बड़े युद्ध के बीज बोए।)

4. **डब्ल्यू.आई. लेडि** – *"It disillusioned a whole generation and shattered the idea of noble war."*
(इसने पूरी एक पीढ़ी को मोहभंग किया और युद्ध की महानता की धारणा को तोड़ दिया।)

द्वितीय विश्व युद्ध के परिणाम पर कथन

1. **ए.जे.पी. टेलर** – *"The Second World War ended the age of Europe and began the age of superpowers."*
(द्वितीय विश्व युद्ध ने यूरोप के युग का अंत किया और महाशक्तियों का युग प्रारंभ किया।)

2. **विलियम शिरर** – *"Hitler lost the war, but his war changed the world forever."*
(हिटलर युद्ध हार गया, परंतु उसका युद्ध दुनिया को सदा के लिए बदल गया।)

3. **जॉन कीगन** – *"WWII was the most destructive conflict in human history, both in lives and legacy."*
(WWII मानव इतिहास का सर्वाधिक विनाशकारी संघर्ष था – जीवन और विरासत दोनों के संदर्भ में।)

4. **मार्क माज़ोवर** – *"The war unleashed forces of decolonisation, global governance, and new internationalism."*
(युद्ध ने उपनिवेशवाद-उन्मूलन, वैश्विक शासन और नए अंतरराष्ट्रीयतावाद की शक्तियाँ मुक्त कीं।)

RISE
An Institute for Civil Services

© 2025 RISE Education. All rights reserved.

RAS मुख्य परीक्षा 2024-25

DATE	DAY	TOPICS
12-May	1	✓ GS I - Unit I
13-May	2	✓ GS I - Unit II
14-May	3	✓ GS I - Unit III
15-May	4	✓ GS II - Unit I
16-May	5	✓ GS II - Unit II
17-May	6	✓ GS II - Unit III
18-May	7	✓ GS III - Unit I
19-May	8	✓ GS III - Unit II
20-May	9	✓ GS III - Unit III
21-May	10	COMPLETE REVISION
22-May	11	FULL LENGTH TEST GS - 1
23-May	12	FULL LENGTH TEST GS - 2
24-May	13	COMPLETE REVISION
25-May	14	FULL LENGTH TEST GS - 3
26-May	15	FULL LENGTH TEST GS - 4
27-May	16	✓ GS I - Unit I
28-May	17	✓ GS I - Unit II
29-May	18	✓ GS I - Unit III
30-May	19	✓ GS II - Unit I
31-May	20	✓ GS II - Unit II
01-Jun	21	✓ GS II - Unit III
02-Jun	22	✓ GS III - Unit I
03-Jun	23	✓ GS III - Unit II
04-Jun	24	✓ GS III - Unit III
05-Jun	25	COMPLETE REVISION
06-Jun	26	FULL LENGTH TEST GS - 1
07-Jun	27	FULL LENGTH TEST GS - 2
08-Jun	28	COMPLETE REVISION
09-Jun	29	FULL LENGTH TEST GS - 3
10-Jun	30	FULL LENGTH TEST GS - 4

अंतिम 30 दिन

Daily Answer Writing Practice

Daily Unit-Wise Answer Writing Tests

- GS Paper 1, 2, 3 — सभी पेपर की हर यूनिट कवर की जाएगी
- प्रत्येक unit का सम्पूर्ण टेस्ट, सिलेबस का पूरा कवरेज

Daily Class Test Discussion

- प्रत्येक टेस्ट के बाद Classroom + Live Discussion
- Best answer approach + structure & keywords

Personalized Mentorship

- प्रत्येक छात्र को Daily Guidance By Kritika Gaur (RAS 2021)
- Answer Writing , presentation & time management पर सुधार

8 Full Length Test - GS I, II, III & IV

- सभी पेपर - RPSC परीक्षा पैटर्न पर आधारित
- Daily - Unit 1, Unit 2, Unit 3 — तीनों पेपर के सभी यूनिट्स

12 May से 10 June

Schedule

Kritika Gaur

RAS 2021 - Rank 201 (SP Rank - 1)

शुल्क:- 4999/-

ऑफलाइन सेंटर Under Triveni Puliya, Gopalpura Jaipur

+91 9785606061

@RiseJaipur